सुख की सरकार
हिमाचल सरकार

हिमाचल की प्रगति एवं संस्कृति का दर्पण

गिरिराज

साप्ताहिक

ISSN 2454-9738

डाक पंजीकरण संख्या
एच.पी./42/एस.एम.एल. 2024-2026
साप्ताहिक आर.एन.आई. 32195/78

इस अंक में

कृषि/ बागबानी/विकास - 5, आस्था/संस्कृति/ विविध 6/7, साहित्य -8, महिला/बाल जगत /स्वास्थ्य -9, पहाड़ी पृष्ठ-10

वर्ष 46 अंक 45 | शिमला,7-13 अगस्त 2024 | हर बुधवार को प्रकाशित | मूल्य : एक प्रति 5.00 रुपये | वार्षिक 250 रुपये | आजीवन 2500 रुपये

मुख्यमंत्री ठाकुर सुखविंद्र सिंह सुक्खू का आपदा प्रभावित क्षेत्र समेज का दौरा

प्रभावितों को फौरी राहत के तौर पर 50 हजार की घोषणा

मुख्यमंत्री ठाकुर सुखविंद्र सिंह सुक्खू ने गत दिनों जिला शिमला के रामपुर में बादल फटने के कारण प्रभावित हुए समेज क्षेत्र का दौरा कर राहत और पुनर्वास कार्यों का जायजा लिया। इस दुःखद् घटना पर शोक व्यक्त करते हुए मुख्यमंत्री ने शोक संतप्त परिवारों के प्रति संवेदनाएं व्यक्त कीं और आपदा प्रभावितों के लिए तत्काल राहत पैकेज की घोषणा की। उन्होंने कहा कि प्रत्येक आपदा प्रभावित परिवार को तत्काल वित्तीय सहायता के रूप में 50 हजार रुपये और किराए पर आवासीय सुविधा के लिए तीन महीने के लिए प्रतिमाह पांच हजार रुपये प्रदान किए जाएंगे। इसके अतिरिक्त, प्रदेश सरकार भोजन, रसोई गैस, कंबल और चूल्हे जैसी मूलभूत वस्तुएं निःशुल्क प्रदान करेगी। उन्होंने कहा कि प्रदेश सरकार प्रभावित परिवारों को राहत प्रदान करने के लिए प्रतिबद्ध है। मुख्यमंत्री ने आपदा प्रभावितों को आश्वासन दिया कि उनके घरों के पुनर्निर्माण के लिए शीघ्र वित्तीय सहायता की घोषणा की जाएगी। उन्होंने जिला प्रशासन को विस्थापित परिवारों के लिए वैकल्पिक व्यवस्था करने के निर्देश दिए ताकि इन परिवारों को किसी असुविधा का सामना न करना पड़े। ठाकुर सुखविंद्र सिंह सुक्खू ने राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक पाठशाला समेज के विद्यार्थियों से भेंट की, जिनके आठ सहपाठी इस घटना के बाद लापता हैं। आठवीं कक्षा के विद्यार्थी राखी और कार्तिक ने मुख्यमंत्री को बताया कि इस घटना से वे सदमें में हैं और उनका स्कूल पूरी तरह से क्षतिग्रस्त हो गया है। मुख्यमंत्री ने विद्यार्थियों को ढाढस बंधाते हुए उन्हें हौसला रखने और परिवार का सहयोग करने के लिए कहा। मुख्यमंत्री ने उन्हें आश्वासन दिया कि उनकी शिक्षा सुनिश्चित करने के लिए एक बेहतर और बड़ा स्कूल फिर से निर्मित किया जाएगा। समेज की निवासी बिमला देवी ने बादल फटने की घटना वाली भयावह रात को याद करते हुए मुख्यमंत्री से कहा कि गांव के लोग डर के साए में जी रहे हैं। मुख्यमंत्री ने आपदा प्रभावितों के दुःख-दर्द को साझा किया और आश्वासन दिया कि राज्य सरकार आपदा प्रभावितों को हर संभव सहायता प्रदान करेगी। दुःख की इस घड़ी में प्रदेश सरकार प्रभावित परिवारों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर खड़ी है और आपदा प्रभावितों को भरपूर सहयोग प्रदान किया जाएगा। उन्होंने कहा कि इस आपदा को झेल रहा हर प्रभावित परिवार मेरे परिवार के सदस्य के समान है और प्रभावित परिवारों के लिए शीघ्र ही आपदा राहत की घोषणा की जाएगी। उन्होंने जानकारी दी कि समेज में 33 लोग लापता हैं और आपदा में फंसे दस लोगों को सफलतापूर्वक सुरक्षित बचा लिया गया है। इसके अलावा गांव में 38 घर और दो पुल क्षतिग्रस्त हुए हैं। बाद में समेज में पत्रकारों से बातचीत करते हुए मुख्यमंत्री ने कहा कि शिमला, मंडी और कुल्लू में बादल फटने और भारी बारिश से मानव जीवन और संपत्ति को काफी ज्यादा नुकसान पहुंचा है। इन जिलों में पांच स्थानों पर बादल फटे हैं जिससे क्षेत्र में हर तरफ तबाही का खौफनाक मंजर दिख रहा है। उन्होंने कहा कि इन जिलों में यातायात और पैदल चलने योग्य 14 पुल, 115 घर, 23 गौशाला, 10 दुकानें और मछली फॉर्म की तीन दुकानें तबाह हो गई हैं। उन्होंने कहा कि प्रदेश सरकार युद्ध स्तर पर बचाव और राहत कार्य कर रही है। अब तक आपदा में फंसे 55 लोगों को सुरक्षित बचाया जा चुका है। लापता लोगों की तलाश के लिए बचाव टीमें दिन-रात जुटी हुई हैं। उन्होंने कहा कि प्रशासन को पूरी तरह मुस्तैद रहने के निर्देश दिए गए हैं। लोक निर्माण विभाग को प्राथमिकता के आधार पर सड़कों को बहाल करने के लिए कहा गया है ताकि लोगों को असुविधा का सामना न करना पड़े। इस अवसर पर शिक्षा मंत्री रोहित ठाकुर, सातवें वित्त आयोग के अध्यक्ष सहित अन्य गणमान्य व्यक्ति भी उपस्थित थे।

बेघर हुए लोगों को तीन महीने तक किराए के लिए मिलेंगे पांच हजार प्रतिमाह

बरसात से जल शक्ति विभाग को 196 करोड़ का नुकसान

उप-मुख्यमंत्री मुकेश अग्निहोत्री ने गत दिनों जानकारी दी कि प्रदेश में हो रही भारी बरसात से अब तक जल शक्ति विभाग को 196 करोड़ रुपये का नुकसान हो चुका है। बीते दिन बादल फटने और भारी बारिश से विभाग को 44 करोड़ रुपये का नुकसान और 352 जलापूर्ति योजनाएं प्रभावित हुई हैं। उन्होंने कहा कि कुल्लू और शिमला जिलों में विभाग की जलापूर्ति योजनाओं को सबसे ज्यादा क्षति हुई है। शिमला के मतियाना क्षेत्र की कुर्पन योजना के पंप हाउस, मशीनरी और पाइपों के बह जाने से विभाग को करीब 10 करोड़ रुपये का नुकसान हुआ है। रामपुर पेयजल योजना का स्रोत एवं पाइप फटने से विभाग को करीब आठ करोड़ रुपये की क्षति हुई है। उप-मुख्यमंत्री ने कहा कि विभाग के सभी अधिकारियों और कर्मचारियों को पूरी तरह मुस्तैद रहने के आदेश जारी किए गए हैं। उन्होंने कहा कुछ योजनाओं को एहतियात बरतते हुए हालात के मद्देनजर बंद किया जा रहा है। पेयजल योजनाओं में गाद न भरे और लोगों को पेयजल आपूर्ति निर्बाध जारी रहे, इसके लिए पूरे प्रयास किए जा रहे हैं। उन्होंने कहा कि आगामी आदेशों तक अधिकारियों और कर्मचारियों की छुट्टियां रद्द कर दी गई हैं। कुल प्रभावित 2,421 योजनाओं में से 1,438 बहाल की जा चुकी हैं। उन्होंने कहा कि राज्य सरकार प्रदेश के लोगों को सुविधाएं प्रदान करने के लिए प्रतिबद्ध है।

विभाग के अधिकारियों व कर्मचारियों की छुट्टियां रद्द

उप-मुख्यमंत्री ने कुर्पन खड्ड पेयजल योजना का लिया जायजा

उप-मुख्यमंत्री मुकेश अग्निहोत्री ने बादल फटने से बागी पूल, मतियाना, कुमारसैन, सैंज, कुर्पन खड्ड में जल शक्ति विभाग की पेयजल योजनाओं को हुए नुकसान का घटना स्थल पर जाकर जायजा लिया। उप-मुख्यमन्त्री ने कहा कि बागी पूल में बाढ़ से जल शक्ति विभाग को लगभग 10 करोड़ रुपये का नुकसान हुआ है। उन्होंने कहा कि पेयजल योजनाओं को सुचारु करने के लिए जल शक्ति विभाग के अधिकारी एवं कर्मचारी पूरी मेहनत से कार्य कर रहे है ताकि लोगों को पेयजल की किल्लत का सामना न करना पड़े। उन्होंने कहा कि कुर्पन खड्ड परियोजना पर 315 करोड़ रुपये खर्च किए जा रहे हैं और योजना का निर्माण कार्य अंतिम दौर में चल रहा था। बादल फटने से आई बाढ़ ने इस योजना के पंप हाउस, मशीनरी और टैंकों का नामो-निशान मिटा दिया। इस योजना को पुनः स्थापित करने के लिए विभाग के आला अधिकारियों को उचित दिशा निर्देश दे दिए गए हैं। उन्होंने कहा कि शिमला के मतियाना क्षेत्र की कुर्पन खड्ड पेयजल योजना के बुस्टर, इंटेक स्ट्रचर, फीडल लाईन संपवेल, (शेष पृष्ठ 11 पर)

शोंगटोंग कड़छम जल विद्युत परियोजना चरण दो को मिली वन स्वीकृति

- 450 मेगावॉट बिजली का होगा उत्पादन
- परियोजना का निर्माण कार्य वर्ष 2026 तक पूर्ण करने का लक्ष्य

मुख्यमंत्री ठाकुर सुखविंद्र सिंह सुक्खू ने गत दिनों कहा कि केंद्र सरकार के पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय ने वन संरक्षण अधिनियम चरण-2 के तहत किन्नौर जिले में शोंगटोंग-कड़छम जल विद्युत परियोजना के लिए लगभग 85 बीघा जमीन के उपयोग की स्वीकृति प्रदान कर दी है। उन्होंने कहा कि इस परियोजना के निर्माण के लिए बेहद महत्त्वपूर्ण यह स्वीकृति केंद्र सरकार के पास वर्ष 2018 से लंबित थी। राज्य सरकार के निरंतर प्रयासों से यह महत्त्वपूर्ण सफलता प्राप्त हुई है। उन्होंने कहा कि परियोजना का कार्य पूरा करने के लिए पुल निर्माण करने को इस भूमि की आवश्यकता थी। श्री सुक्खू ने कहा कि वन संरक्षण अधिनियम के तहत यह स्वीकृति केंद्र सरकार के पास लंबे समय से विचाराधीन थी, लेकिन वर्तमान प्रदेश सरकार ने कड़े प्रयास करते हुए स्वीकृति प्रदान करने के लिए केंद्र सरकार के समक्ष अपना पक्ष मजबूती से रखा। केंद्र सरकार द्वारा प्रथम चरण की स्वीकृति 19 मार्च, 2024 को प्रदान की गई थी। इसके बाद राज्य सरकार ने आवश्यक नियमों व शर्तों की अनुपालना रिपोर्ट सैद्धांतिक मंजूरी के लिए केंद्र सरकार को सौंपी और केंद्र सरकार से अंतिम स्वीकृति के लिए आग्रह किया। उन्होंने कहा कि शोंगटोंग-कड़छम जल विद्युत परियोजना राज्य की विद्युत उत्पादन क्षमता को बढ़ाएगी और राज्य की आर्थिकी को सुदृढ़ करने में महत्त्वपूर्ण योगदान देगी। 450 मेगावाट शोंगटोंग कड़छम जल विद्युत परियोजना का निर्माण कार्य 2012 में अवॉर्ड किया था, जो नवंबर, 2026 तक पूरा होना है। उन्होंने कहा कि परियोजना से विद्युत उत्पादन के लिए एक ट्रांसमिशन लाइन बिछाई जा रही है। परियोजना का कार्य समय पर पूरा करने के लिए ट्रांसमिशन की निविदा प्रक्रिया शुरू कर दी गई (शेष पृष्ठ 11 पर)

शानन परियोजना को वापिस लेने के लिए सरकार प्रयासरत : मुख्यमंत्री

मुख्यमंत्री ठाकुर सुखविंद्र सिंह सुक्खू ने गत दिनों वरिष्ठ अधिकारियों के साथ जिला मंडी के जोगिन्द्रनगर में 110 मेगावॉट की शानन जल विद्युत परियोजना को लेकर जारी कानूनी लड़ाई के संदर्भ में एक उच्च स्तरीय बैठक की अध्यक्षता की।

मुख्यमंत्री ने अधिकारियों को इस परियोजना पर सर्वोच्च न्यायालय में प्रदेश सरकार का मामला मजबूती से प्रस्तुत करने के निर्देश दिए, ताकि प्रदेश के लोगों के हितों की रक्षा हो सके। उन्होंने कहा कि इस परियोजना के माध्यम से प्रदेश के लोगों को लाभ पहुंचाने के उद्देश्य से प्रदेश सरकार हिमाचल के अधिकारों को वापिस लेने के लिए कानूनी लड़ाई लड़ रही है। उन्होंने कहा कि ब्रिटिश काल के दौरान शानन जल विद्युत परियोजना का निर्माण किया गया था। वर्ष 1925 में मंडी के तत्कालीन राजा जोगिन्द्र बहादुर और पंजाब के मुख्य अभियंता के बीच 99 वर्षों के लिए लीज समझौता हस्ताक्षरित हुआ था। उस समय से ही इसका प्रशासनिक अधिकार पंजाब के पास है। इस वर्ष 2 मार्च, 2024 को लीज समाप्त हो गई है।

सर्वोच्च न्यायालय में प्रदेश का पक्ष मजबूती से रखने के निर्देश

यह परियोजना हिमाचल प्रदेश के क्षेत्र अधिकार में हैं और पंजाब सरकार को अविलम्ब इस परियोजना को हिमाचल प्रदेश को लौटा देना चाहिए। ठाकुर सुखविंद्र सिंह सुक्खू ने कहा कि प्रदेश के लोगों के हितों को प्राथमिकता प्रदान करते हुए प्रदेश सरकार इस परियोजना से लोगों को लाभ पहुंचाने के लिए प्रतिबद्ध है। कानूनी कार्रवाई को ध्यान में रखते हुए प्रदेश सरकार परियोजना को हासिल करने के लिए एक मजबूत मामला तैयार कर रही है।

मुख्यमंत्री के प्रधान सलाहकार राम सुभग सिंह, मुख्य सचिव प्रबोध सक्सेना, हिमाचल प्रदेश के महाधिवक्ता अनूप रतन, अतिरिक्त मुख्य सचिव ओंकार चन्द शर्मा, प्रधान सचिव देवेश कुमार, मुख्यमंत्री के सचिव राकेश कंवर, विशेष सचिव अरिन्दम चौधरी और अन्य वरिष्ठ अधिकारी बैठक में उपस्थित थे।

करसोग में एचआरटीसी यात्रियों को कैशलेस भुगतान की सुविधा

✍ संजय सैनी

हिमाचल पथ परिवहन निगम की बसों से यात्रा करने वाले यात्रियों को सुविधा प्रदान करने और उनके सफर को आसान बनाने के लिए प्रदेश सरकार ने हाल ही में निगम की बसों को कैशलेस कर दिया है। एचआरटीसी की बसों में यात्रा करने वाले यात्री बसों में अब नगद किराए के स्थान पर ऑनलाइन भुगतान भी कर सकते है।

राज्य सरकार की ओर से निगम की बसों में प्रदेश भर में शुरू की गई ऑनलाइन बस किराया भुगतान सुविधा को अब निगम के करसोग डिपों में भी लागू कर दिया गया है, जिससे एचआरटीसी की ओर से करसोग डिपो को लगभग 50 ई-टिकट मशीनें उपलब्ध करवाई गई, जिनमें क्यूआर कोड स्कैन कर ऑनलाइन किराया भुगतान करने की सुविधा उपलब्ध है।

बस अड्डा करसोग से विभिन्न रूटों पर चलने वाली लगभग 40 बसों को ई-टिकट मशीनों से लैस किया जा रहा है। पहले चरण में एचआरटीसी के परिचालकों द्वारा लगभग 20 बसों में ई-टिकट मशीनों से टिकट काटे जा रहे है। निगम की बसों में यात्रा करने वाले यात्री इन मशीनें में यूपीआई, कार्ड

ई-टिकट को बढ़ावा देने के लिए परिचालकों को प्रथम पुरस्कार के रूप में पांच हजार रुपये का जूसर मिक्सर ग्राइंडर, द्वितीय पुरस्कार के रूप में तीन हजार रुपये के मूल्य का इंडक्शन या प्रेशर कुकर, तृतीय पुरस्कार के रूप में दो हजार रुपये मूल्य तक का ट्रॉली बैग या सिलिंग फैन प्रदान किया जाएगा

निगम की बसों में यात्रा करने वाले यात्रियों को यात्रा के दौरान बस किराये की अदायगी करना आसान होने के साथ-साथ, बकाया राशि वापस लेने या फिर खुले पैसे देने की चिक-चिक से भी छुटकारा मिला है। ऑनलाइन बस किराया भुगतान सुविधा के लिए स्वाइप, गूगल-पे, फोन-पे इत्यादि से किराये का भुगतान कर इस सुविधा का लाभ उठा रहे हैं, जिसके लिए मशीन में क्यू-आर कोड स्कैन किया जा रहा है। निगम की बसों में यह सुविधा मिलने से यात्री अपने बस किराए का भुगतान आसानी से कर पा रहे है। बस में यात्रा करने वाले यात्रियों के लिए बस किराया वहन करने का यह तरीका अधिक सुविधाजनक और संतोषजनक है। एचआरटीसी प्रबंधन द्वारा ई-टिकट मशीनों का अधिक से अधिक प्रयोग करने और लोगों को ऑनलाइन भुगतान से जोड़ने के लिए निगम के परिचालकों को उपहार देने का भी प्रावधान है।

यात्रा के दौरान अपने निर्धारित बस रूट पर जो परिचालक जितना अधिक बस किराया ऑनलाइन हासिल करेगा उसे साल के अंत में एचआरटीसी प्रबंधन की तरफ से इनाम और गिफ्ट हैंपर इत्यादि प्रदान किए जाएंगे। परिचालकों को प्रथम पुरस्कार के रूप में पांच हजार रुपये का जूसर मिक्सर ग्राइंडर, द्वितीय पुरस्कार के रूप में तीन हजार रुपये का इंडक्शन या प्रेशर कुकर, तृतीय पुरस्कार के रूप में दो हजार रुपये का ट्रॉली बैग अथवा सिलिंग फैन प्रदान किया जाएगा।

निगम के करसोग स्थित बस अड्डा से यात्रा करने वाले यात्री ई-टिकट मशीनों के माध्यम से कैशलेस भुगतान की सुविधा मिलने से बहुत खुश है।

यात्री राजकुमार, घनश्याम, परस राम, युवराज इत्यादि ने बताया कि पहले उन्हें अपने साथ पैसे लेकर चलना पड़ता था और कई बार यदि उनके पास छुट्टे पैसे नहीं होते थे, तो उन्हे बस किराया वहन करने में काफी परेशानी उठानी पड़ती थी।

बसों में किराया देते समय या बस किराया देने के पश्चात बचे हुए पैसे वापस लेने के लिए भी छुट्टे पैसे नहीं होने की समस्या से दो चार होना पड़ता था लेकिन अब निगम की बसों में ई-टिकट मशीनों के माध्यम से कैशलेस भुगतान की सुविधा शुरू होने के बाद इस समस्या से छुटकारा मिला है। निगम की बसों में ई-टिकट मशीनों के माध्यम से शुरू की गई कैशलेस व्यवस्था से विशेषकर युवा वर्ग काफी उत्साहित है।

किसानों की आय का मार्ग प्रशस्त करेगी

राजीव गांधी प्राकृतिक खेती स्टार्ट-अप योजना

हिमाचल प्रदेश की एक बड़ी आबादी कृषि और कृषि संबंधित कार्यों से आजीविका अर्जित करती है। मेहनतकश किसान खून-पसीना बहाकर खेतों से सोना उगाते हैं। अन्नदाता को उनकी मेहनत का वाजिब दाम मिले, यह सुनिश्चित करने के लिए प्रदेश सरकार ने अनेक महत्त्वकांक्षी योजनाएं शुरू की हैं, जिनमें राजीव गांधी प्राकृतिक खेती स्टार्ट-अप योजना किसानों की आय में बढ़ोतरी का मार्ग प्रशस्त करेगी। योजना के प्रथम चरण में प्रत्येक पंचायत से 10 किसानों को रसायनमुक्त खेती के लिए प्रोत्साहित किया जाएगा। योजना के अंतर्गत लगभग 36 हजार किसानों को प्राकृतिक खेती से जोड़ने का लक्ष्य निर्धारित किया गया है। योजना से जुड़ने वाले किसानों द्वारा प्राकृतिक रूप से तैयार गेहूं को 40 रुपये और मक्की को 30 रुपये प्रति किलो के न्यूनतम समर्थन मूल्य पर खरीदा जाएगा। देश में गेहूं और मक्की पर दिया जाने वाला यह सबसे अधिक न्यूनतम समर्थन मूल्य होगा।

किसानों को प्राकृतिक खेती अपनाने के लिए प्रोत्साहित करने की प्रदेश सरकार की मुहिम रंग ला रही है। वर्तमान में प्रदेश के 1,78,643 किसान-बागबान परिवारों ने प्राकृतिक खेती पद्धति को अपनाया है। इस प्रकार प्रदेश में 24,210 हेक्टेयर भूमि पर इस विधि से खेती की जा रही है और चरणबद्ध तरीके से प्रदेश के 9.61 लाख किसान परिवारों को प्राकृतिक खेती से जोड़ने का लक्ष्य रखा गया है। योजना के अंतर्गत वित्त वर्ष 2023-2024 में 1275.31 लाख रुपये व्यय कर 37,087 किसानों को लाभान्वित किया गया और 13,176 हेक्टेयर भूमि को प्राकृतिक खेती के अधीन लाया गया है। प्राकृतिक खेती के उत्पादों की बिक्री के लिए 10 मंडियों में स्थान निर्धारित कर आधारभूत अधोसंरचना का निर्माण किया जा रहा है।

किसान एवं उपभाक्ताओं के मध्य पारदर्शिता सुनिश्चित करने हेतु नवोन्मेषी पहल की गई है। इस पहल के तहत www.spnfhp.in के माध्यम से अभी तक प्रदेश के 76,000 से अधिक प्राकृतिक खेती करने वाले किसानों का पंजीकरण किया जा चुका है और 74,283 किसानों-बागबानों को प्रमाण-पत्र दिए जा चुके हैं। यह प्रमाणीकरण पूरी तरह से निःशुल्क है और पार्टिसिपेटरी गारंटी सिस्टम (पीजीएस) द्वारा स्थापित मानकों को भी पूरा करता है। प्रदेश सरकार द्वारा प्रत्येक गांव में प्राकृतिक खेती संसाधन भंडार खोलने के लिए 10,000 रुपये तक की सहायता राशि प्रदान करने का भी प्रावधान है।

पर्यावरण संरक्षण, फसल विविधीकरण को बढ़ावा देने और फसल उत्पादन लागत को कम करने में प्राकृतिक खेती योजना मील पत्थर साबित हो रही है। प्रदेश सरकार सभी वर्गों व क्षेत्रों का समग्र और समान विकास करने के लिए समुचित प्रयास कर रही है। कृषि क्षेत्र प्रदेश की अर्थव्यवस्था की रीढ़ है और इस क्षेत्र को बढ़ावा प्रदान करने के लिए शुरू की गई योजनाओं के सकारात्मक परिणाम धरातल पर देखने को मिल रहे हैं।

इंदिरा गांधी प्यारी बहना सुख सम्मान निधि योजना

से हो रहा महिलाओं का सामाजिक-आर्थिक उत्थान

जिला शिमला की 2569 पात्र महिलाएं हुईं लाभान्वित

✍ नितिश कुमार

हिमाचल में लगभग 49 प्रतिशत महिलाएं हैं। प्रदेश का अधिकांश भाग दुर्गम है जहां जीवनयापन अन्य राज्यों की अपेक्षा कठिन व चुनौतीपूर्ण रहता है। प्रदेश की महिलाएं घरेलू कामकाज से लेकर परिवार की आर्थिकी को सुदृढ़ करने में महत्त्वपूर्ण योगदान देती हैं। हिमाचल प्रदेश की नारी शक्ति हर क्षेत्र में योगदान दे रही है फिर भी अधिकतर महिलाएं आर्थिक रूप से परिवार के पुरुष सदस्यों पर ही निर्भर हैं।

हिमाचल प्रदेश में लगभग 49 प्रतिशत आबादी महिलाओं की है। प्रदेश का अधिकांश भाग दुर्गम है जहां जीवनयापन अन्य राज्यों की अपेक्षा कठिन व चुनौतीपूर्ण रहता है। प्रदेश की महिलाएं घरेलू कामकाज से लेकर परिवार की आर्थिकी को सुदृढ़ करने में महत्वपूर्ण योगदान देती हैं। हिमाचल प्रदेश की नारी शक्ति हर क्षेत्र में योगदान दे रही है फिर भी अधिकतर महिलाएं आर्थिक रूप से परिवार के पुरुष सदस्यों पर ही निर्भर हैं। इसके साथ-साथ सांस्कृतिक और धार्मिक धरोहर के संरक्षण में भी प्रदेश की महिलाओं का अमूल्य योगदान है।

इसी दृष्टि से प्रदेश सरकार ने महिलाओं के सम्मान में इंदिरा गांधी प्यारी बहना सुख सम्मान निधि योजना की शुरुआत की है ताकि प्रदेश की महिलाओं का सामाजिक एवं आर्थिक सशक्तीकरण सुनिश्चित हो सके तथा महिलाएं पारिवारिक एवं सामाजिक जिम्मेदारियों का सार्थक ढंग से निर्वहन कर सकें। इंदिरा गांधी प्यारी बहना सुख सम्मान निधि योजना के तहत 18-59 आयु वर्ग की पात्र महिलाओं को 1500 रुपये प्रतिमाह प्रदान किए जा रहे हैं। जिला में योजना के अंतर्गत 2569 पात्र महिलाओं को 1500 रुपये प्रदान कर लाभान्वित किया गया है। इन महिलाओं को अप्रैल माह से जून माह तक की तीन महीने की किश्त एक मुश्त प्रदान की जा चुकी है, जिस पर कुल 1 करोड़ 15 लाख 60 हजार 500 रुपये की राशि व्यय की जा चुकी है। इंदिरा गांधी प्यारी बहना सुख सम्मान निधि योजना के अंतर्गत आवेदन करने का क्रम जारी है। जिला शिमला में अब तक कुल 76 हजार 911 आवेदन प्राप्त किए जा चुके हैं।

विकास खंड टुट्टू की लाभार्थी सरला का कहना है कि योजना के अंतर्गत उन्हें 4500 रुपये की राशि प्राप्त हो चुकी है। इन पैसो से उनके घर के आर्थिक हालत काफी अच्छे हुए हैं। उन्होंने इस योजना के लिए प्रदेश सरकार का आभार व्यक्त किया। खलीनी शिमला की रहने वाली सृष्टि कल्याण ने कहा कि उन्हें इंदिरा गांधी प्यारी बहना सुख सम्मान निधि योजना का लाभ प्राप्त हुआ है। पहले उनके घर की आर्थिक स्थिति ठीक नहीं थी पर अब इस योजना का लाभ मिलने के उपरांत आर्थिक स्थिति में सुधार आया है। इंदिरा गांधी प्यारी बहना सुख सम्मान निधि योजना के तहत हिमाचल प्रदेश की स्थाई निवासी होना आवश्यक है तथा परिवार से कोई सदस्य केन्द्र या राज्य सरकार के कर्मचारी या पेंशनर, अनुबंध या आउटसोर्स या दैनिक वेतन भोगी या अंशकालिक इत्यादि वर्ग के कर्मचारी, सेवारत या भूतपूर्व सैनिक व सैनिक विधवाएं, मानदेय प्राप्त आंगनवाड़ी कार्यकर्ता या सहायिका या आशा वर्कर या मिड-डे मील वर्कर या मल्टी टास्क वर्कर, सामाजिक सुरक्षा पेंशन लाभार्थी, पंचायत राज संस्थाओं या शहरी स्थानीय निकायों के कर्मचारी, केन्द्र या राज्य सरकार के अन्तर्गत विभिन्न सार्वजनिक उपक्रम या बोर्ड या काउंसिल या एजेंसी में कार्यरत या पेंशनभोगी, वस्तु एवं सेवाकर हेतु पंजीकृत व्यक्ति तथा आयकरदाता इत्यादि श्रेणियों में शामिल नहीं होना चाहिए। इसके साथ-साथ बौद्ध मठों में स्थाई रूप से रहने वाली बौद्ध भिक्षुणियां (चोमो) को भी योजना का लाभ मिलेगा। सुख-सम्मान निधि प्राप्त करने के लिए इच्छुक महिला को निर्धारित प्रपत्र-एक पर तहसील कल्याण अधिकारी को आवेदन प्रस्तुत करना होगा। प्रार्थना पत्र जिला कल्याण अधिकारी व तहसील कल्याण अधिकारी के कार्यालय में निःशुल्क प्राप्त होंगे। प्रार्थना पत्र विभागीय वैबसाईट www.esomsa.hp.gov.in पर भी उपलब्ध है। योजना के लाभ के लिए प्रपत्र-एक पर प्रार्थना-पत्र (फोटोग्राफ सहित) के साथ वैध आयु प्रमाण पत्र, हिमाचली मूल निवासी प्रमाणपत्र, बैंक या डाकघर खाता संख्या हेतु पासबुक, आधार कार्ड तथा राशन कार्ड की छायाप्रति एवं बौद्ध भिक्षुणियों के लिए पंचायत अथवा बौद्ध मठ की मुख्य भिक्षुणी (मुख्य चोमो) द्वारा जारी प्रमाण पत्र को संलग्न किया जाना आवश्यक है।

शिमला में बनेगा दुनिया का दूसरा सबसे लंबा रज्जु मार्ग

- ◆ 1734.40 करोड़ रुपये के प्रस्तावित रज्जु मार्ग से शिमला शहर में ट्रैफिक जाम की समस्या से मिलेगी निजात
- ◆ दोनों तरफ से दो हजार लोग एक घंटे में यात्रा कर पाएंगे
- ◆ शिमला रज्जुमार्ग 60 किलोमीटर का क्षेत्र कवर करेगा

रोप वे की दुनिया में हिमाचल ने अपने कदम तेजी से बढ़ाना शुरू कर दिए हैं। शिमला में 1734.40 करोड़ रुपये की लागत से 13.79 किलोमीटर में दुनिया का दूसरा सबसे लंबा रज्जु मार्ग बनने जा रहा है। हिमाचल प्रदेश ने रज्जु मार्ग के क्षेत्र में तीव्रता से अपनी पहचान बना ली है। देश के अन्य राज्यों के लिए हिमाचल प्रदेश इस क्षेत्र में मार्गदर्शक के तौर पर आने वाले समय में भूमिका निभाएगा।

प्रदेश के कई निवेशक रज्जुमार्ग के निर्माण कार्य कर रहे हैं। चिंतपूर्णी और रोहतांग में प्रस्तातिव रज्जु मार्ग का निर्माण कार्य भी हिमाचली ही कर रहे हैं। हमारे लिए गर्व की बात है कि हिमाचल में अंतरराष्ट्रीय स्तर के रज्जू मार्ग तैयार करने में हिमाचली अहम भूमिका निभा रहे हैं। हिमाचल प्रदेश स्विट्जरलैंड और ऑस्ट्रिया की तरह रज्जु मार्गों का नेटवर्क तैयार कर रहा है। बाबा बालक नाथ दियोटसिद्ध में रोप वे बनाने के लिए मंजूरी दे दी गई है। बगलामुखी मंदिर में रज्जु मार्ग बन कर तैयार हो चुका है। इसका भी जल्द उद्घाटन होगा जोकि मंदिर में आने वाले श्रद्धालुओं के लिए सार्थक सिद्ध होगा। राजधानी शिमला में 15 स्टेशनों को जोड़ने वाला 13.79 किलोमीटर लंबा भारत और एशिया का पहला रज्जु मार्ग बनेगा। सरकार ग्रीन राज्य की दिशा में धरातल पर कार्य कर रही है। छह ग्रीन कॉरिडोर हिमाचल में तैयार किए जा रहे है।

शिमला शहर में रज्जुमार्ग द्वारा नवीन शहरी परिवहन पर होने वाले खर्च का 20 फीसदी खर्चा प्रदेश सरकार वहन करने जा रही है। कुल्लू में प्रस्तावित बिजली महादेव रज्जु मार्ग पर्यटन क्षेत्र के लिए मील का पत्थर साबित होगा। उन्होंने कहा कि इस प्रोजेक्ट का निर्माण कार्य कर रही कंपनी को भूमि स्थानांतरित कर दी गई है। वर्तमान प्रदेश सरकार ने रज्जु मार्गों को लेकर गंभीरता दिखाई है। हिमाचल प्रदेश को 31 मार्च 2026 तक स्वच्छ और हरित राज्य बनाने का लक्ष्य निर्धारित किया गया है। इसी दिशा में प्रदेश सरकार कार्य कर रही है। रज्जू मार्ग स्वच्छ और हरित राज्य बनाने में अहम भूमिका निभाएंगे। तारा देवी से शिमला रज्जु मार्ग के लिए प्रदेश सरकार और न्यू डेवलपमेंट बैंक (एनडीबी) वित्तीय सहायता करेगी। 80 फीसदी ऋण एनडीबी और 20 फीसदी प्रदेश सरकार अनुदान करेगी। 1734.40 करोड़ रुपये के प्रस्तावित रज्जु मार्ग से शिमला शहर की सड़कों पर ट्रैफिक जाम की समस्या खत्म हो जाएगी। प्रदेश में 44 चार्जिंग स्टेशन स्थापित किए जा चुके है जबकि 46 स्टेशन का कार्य जारी है। शिमला, धर्मशाला, किलाड़, नारकंडा-हाटू पीक, जाबली- कसौली, शिरगुल महादेव, पुंडरिक ऋषि मंदिर रज्जु मार्ग बनना प्रस्तावित है। यह प्रोजेक्ट जब धरातल में आंरभ हो जाएंगे तो हिमाचल की पहचान रज्जु मार्ग से होगी। रज्जु मार्ग के आंरभ होने से किराये की दरें स्थानीय लोगों और पर्यटकों के लिए अलग-अलग होंगी। किराया प्रदेश सरकार तय करेगी लेकिन इस किराये से आम जनता की जेबों पर कोई अतिरिक्त बोझ नहीं पड़ेगा। रज्जु मार्ग में एक तरफ से एक हजार लोगों की आवाजाही शुरूआती तौर पर रहेगी।

वहीं दोनों तरफ से दो हजार लोग एक घंटे में सफर कर पाएंगे। वहीं वर्ष 2059 तक रज्जु मार्ग में 3 हजार लोगों को एक तरफ से ले जाने की व्यवस्था तैयार हो जाएगी। ऐसे में 6 हजार लोग एक घंटे में सफर कर सकेंगे। शिमला का प्रस्तावित रज्जु मार्ग 60 किलोमीटर का क्षेत्र कवर करेगा। रज्जु मार्ग के तहत विभिन्न स्टेशन बनाए जाएंगे, जिन पर सोलर पैनल भी लगाए जाएंगे। गंढोले पर भी सोलर पैनल लगाए जाएंगे ताकि सौर ऊर्जा का दोहन किया जा सके।

विद्या भारती संस्थान का समाज के उत्थान में बहुमूल्य योगदान

500 से अधिक प्रधानाचार्यों ने कार्यशाला में भाग लिया

राज्यपाल शिव प्रताप शुक्ल ने गत दिनों हमीरपुर के बणी में विद्या भारती उत्तर क्षेत्र के प्रधानाचार्यों की कार्यशाला के दौरान कहा कि विद्या भारती संस्थान का समाज के उत्थान में बहुमूल्य योगदान रहा है। यहां से उत्तीर्ण होने वाले विद्यार्थी समाज के विभिन्न क्षेत्रों में उत्कृष्ट सेवाएं प्रदान कर रहे हैं। इस कार्यशाला में 500 से अधिक प्रधानाचार्यों ने भाग लिया। राज्यपाल ने कहा कि विद्या भारती की नींव उत्तर प्रदेश के गोरखपुर में रखी गई थी और आज इसका विस्तार कई शहरों तक हो चुका है। उन्होंने कहा कि विद्या भारती भारतीय संस्कृति के संरक्षण और संवर्द्धन को प्रोत्साहित कर रही है। विद्या भारती से जुड़े शिक्षक समर्पित भाव के साथ परिवर्तनकारी और प्रगतिशील शिक्षा तंत्र बनाने में जुटे हुए हैं। उन्होंने कहा कि विद्या भारती ने देश में शिक्षा के क्षेत्र में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया है। विद्या भारती द्वारा देश में हजारों विद्यालयों का संचालन किया जा रहा है और ग्रामीण व अर्द्ध-शहरी क्षेत्रों में बहुत अच्छा कार्य किया जा रहा है। राज्यपाल ने कहा कि विद्या भारती वर्ष 1952 से बेहद उत्कृष्ट कार्य कर रहा है। उन्होंने प्रसन्नता व्यक्त करते हुए कहा कि विद्या भारती के विद्यालयों में विद्यार्थियों का समग्र विकास हो रहा है और उनमें राष्ट्रभक्ति की भावना भी जागृत की जा रही है। श्री शुक्ल ने कहा कि विद्या भारती ने राष्ट्रीय शिक्षा नीति को लागू कर अच्छी पहल की है। राष्ट्रीय पाठ्यक्रम-2023 देश में शिक्षा क्षेत्र में मील का पत्थर साबित होगा। उन्होंने

विद्या भारती समर्पित भाव से प्रगतिशील शिक्षा तंत्र बनाने में जुटा

कहा कि विद्यार्थियों के संपूर्ण विकास के लिए माहौल पैदा करना, उन्हें 21वीं सदी की चुनौतियों से निपटने के लिए तैयार करना और उनमें आत्मविश्वास, रचनात्मकता और दृढ़ता लाना हमारी प्रतिबद्धता को दर्शाता है। उन्होंने कहा कि नए पाठ्यक्रम को सफलतापूर्वक लागू करना शिक्षकों के नेतृत्व की क्षमता, उनके दृष्टिकोण और समर्पण पर निर्भर करता है। राष्ट्रीय पाठ्यक्रम के परिवर्तनकारी उद्देश्यों की पूर्ति के लिए शिक्षक एक निर्णायक भूमिका में हैं, ताकि वह कक्षा में इसे विद्यार्थियों के लिए सार्थक और अर्थपूर्ण अनुभव बना सकें। उन्होंने शिक्षकों से अपील करते हुए कहा कि एक जीवंत, समावेशी और क्रियाशील शिक्षा तंत्र बनाएं, ताकि हर विद्यार्थी अपने संभावित लक्ष्य को प्राप्त कर सके। इस दौरान राज्यपाल ने विद्या भारती द्वारा प्रकाशित भारत की समृद्ध संस्कृति को प्रस्तुत करती पुस्तकों का भी विमोचन किया। इससे पूर्व, विद्या भारती उत्तर क्षेत्र के महामंत्री देशराज शर्मा ने देश में शिक्षा के क्षेत्र में चलाई जा रही गतिविधियों की जानकारी दी।

विद्या भारती उत्तर क्षेत्र के संगठन मंत्री विजय नड्डा, हिमाचल प्रांत के महामंत्री सुरेश कपिल और सेवन स्टार इंटरनेशनल स्कूल के प्रबंध निदेशक संदीप कंवर ने भी इस मौके पर अपने विचार रखे। इस दौरान स्थानीय विधायक इंद्रदत्त लखनपाल और अन्य गणमान्य व्यक्ति भी उपस्थित थे।

मुख्यमंत्री ठाकुर सुखविंद्र सिंह सुक्खू ओक ओवर शिमला में पौधरोपण कर 75वें राज्य स्तरीय वन महोत्सव का शुभारंभ करते हुए

राज्य सरकार समाज के कमजोर वर्गों के उत्थान और कल्याण के लिए प्रतिबद्ध

मुख्यमंत्री ठाकुर सुखविंद्र सिंह सुक्खू ने गत दिनों कहा कि राज्य सरकार समाज के कमजोर वर्गों के उत्थान और कल्याण के लिए प्रतिबद्ध है। उन्होंने कहा कि स्वर्ण जयंती आश्रय योजना के तहत 50 हजार रुपये से कम आय वाले अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति और अन्य पिछड़ा वर्ग के परिवारों को घर के निर्माण के लिए 1.50 लाख रुपये प्रदान किए जा रहे हैं। बीते वित्तीय वर्ष में योजना के तहत 1,150 लाभार्थियों को 17.25 करोड़ रुपये प्रदान किए गए हैं।

श्री सुक्खू ने कहा कि प्रदेश सरकार कमजोर वर्गों के लोगों को पेशेवर प्रशिक्षण दे रही है। उन्हें अपना उद्यम लगाने के लिए मशीनरी और उपकरण भी दिए जा रहे हैं। कमजोर वर्गों के बच्चों को प्रदेश सरकार निःशुल्क कम्प्यूटर प्रशिक्षण प्रदान कर रही है। उन्होंने कहा कि नाइलेट और सी-डेक द्वारा प्रदेश में संचालित 97 केंद्रों में कम्प्यूटर एप्लीकेशन में पोस्ट ग्रेजुएट डिप्लोमा और डिप्लोमा पाठ्यक्रम

स्वर्ण जयंती आश्रय योजना के तहत 1,150 लाभार्थियों को 17.25 करोड़ रुपये प्रदान

चलाए जा रहे हैं। प्रशिक्षण के दौरान विद्यार्थियों को प्रति माह 1000 रुपये प्रोत्साहन राशि और सरकारी कार्यालयों में छह माह के दक्षता प्रशिक्षण के दौरान 1500 रुपये प्रतिमाह प्रदान किए जा रहे हैं। गत वित्तीय वर्ष में 3,637 लाभार्थियों को इसका लाभ मिला है। उन्होंने कहा कि राज्य सरकार 50 हजार से कम आय वाले अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति और अन्य पिछड़ा वर्गों को औजारों और उपकरणों की खरीद के लिए 1300 रुपये, प्रशिक्षितों को सिलाई मशीन के लिए 1800 रुपये प्रदान कर रही है। उन्होंने कहा कि काजा में संयुक्त केंद्र के निर्माण पर 12.77 करोड़ रुपये खर्च किए जा रहे हैं। उन्होंने कहा कि अल्पसंख्यकों के कल्याण के लिए प्रदेश सरकार ने 24.45 करोड़ रुपये की 11 परियोजनाओं को मंजूरी दी है।

केन्द्र सरकार से जल आपूर्ति और सिंचाई परियोजना के लिए धनराशि का आग्रह

उप-मुख्यमंत्री मुकेश अग्निहोत्री ने गत दिनों नई दिल्ली में केंद्रीय जल शक्ति मंत्री सी.आर. पाटिल से भेंट की। इस अवसर पर जल जीवन मिशन के तहत धनराशि जारी करने संबंधी विभिन्न विषयों पर चर्चा की गई। उन्होंने केन्द्रीय मंत्री को अवगत करवाया कि केंद्र सरकार ने जल जीवन मिशन के तहत वर्तमान वित्त वर्ष के लिए 916.53 करोड़ रुपये आवंटित करने को स्वीकृति दी है, लेकिन अब तक राज्य सरकार को धनराशि जारी नहीं की गई है। उन्होंने जल जीवन मिशन की पहली किश्त के पहले और दूसरे ट्रेंच के 458.26 करोड़ रुपये शीघ्र जारी करने का आग्रह किया। श्री अग्निहोत्री ने कहा कि कुछ प्रमुख परियोजनाएं जिनमें फिन्ना सिंह मध्यम सिंचाई परियोजना केंद्र सरकार के पास प्रधानमंत्री कृषि सिंचाई योजना (पीएमकेएसवाई) के तहत शामिल करने के लिए काफी समय से विचाराधीन हैं। इसके लिए 282.47 करोड़ रुपये की आवश्यकता है। इसके अतिरिक्त 120.79 करोड़ रुपये की बीत एरिया और कुटलैहड़ परियोजनाओं को मंजूरी देने का आग्रह भी किया। पीएमकेएसवाई के तहत सिंचाई परियोजनाओं के लिए सहायता जारी करने पर भी विस्तृत चर्चा की गई। उन्होंने कहा कि पिछले वर्ष की बाढ़ से नुकसान और आवश्यक सुरक्षा उपायों को ध्यान में रखते हुए इस परियोजना की अनुमानित लागत लगभग 2,300 करोड़ रुपये है। केन्द्रीय मंत्री ने आश्वासन दिया कि वह राज्य सरकार की इस मांग पर सहानुभूतिपूर्वक विचार करेंगे।

बेसहारा पशुओं को मिला गौ सदन में सहारा

उपायुक्त अनुपम कश्यप ने गत दिनों जिला पशुपालन विभाग और गौ सेवा आयोग की संयुक्त बैठक में निर्देश दिए कि सभी उपमंडलाधिकारियों की अध्यक्षता में सभी उपमंडल स्तर पर एक समिति का गठन होगा जो बेसहारा पशुओं को गौ सदन तक पहुंचाने का कार्य करेगी। उपायुक्त ने हिम कुक्कुट पालन योजना और नर भेड़ वितरण योजना पर कार्य करने के निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि जिला में 39 गौ सदन है। जिनमें 3292 पशुओं को रखे जाने का प्रावधान है जबकि अभी तक 2381 पशुओं को आश्रय दिया गया है। इस अवसर पर विभाग के वरिष्ठ अधिकारी भी उपस्थित थे।

ऑनलाइन परिवार रजिस्ट्रेशन प्रक्रिया आरम्भ

ग्रामीण विकास एवं पंचायती राज मंत्री अनिरुद्ध सिंह ने गत दिनों मशोबरा स्थित हिमाचल प्रदेश लोक प्रशासन संस्थान फेयरलॉन (हिपा) में ग्रामीण विकास एवं पंचायती राज विभाग द्वारा क्रियान्वित किए जा रहे विभिन्न कार्यक्रमों एवं योजनाओं की राज्य स्तरीय कार्यशाला के दौरान ऑनलाइन परिवार रजिस्टर मॉड्यूल, ऑनलाइन प्रोसिडिंग रजिस्टर मोबाइल एप्लीकेशन और लर्निंग मैनेजमेंट सिस्टम का शुभारंभ किया। उन्होंने कहा कि पूरे प्रदेश में ऑनलाइन परिवार रजिस्ट्रेशन प्रक्रिया लागू कर दी गई है। अब राजस्व विभाग की तर्ज पर पंचायतों में भी परिवार रजिस्टर में नाम दर्ज करना, नाम काटने व किसी भी प्रकार की दुरुस्ती ऑनलाइन ही की जाएगी। ग्रामीण विकास मंत्री ने कहा कि प्रदेश के विकास के लिए मनरेगा के तहत वर्ष 2023-24 में एक लाख 24 हजार कार्य स्वीकृत किए गए हैं। उन्होंने मनरेगा कार्य एवं एनआरएलएम कार्यों में तेजी लाने के लिए संबंधित अधिकारियों को निर्देश दिए। उन्होंने उपायुक्त, अतिरिक्त उपायुक्त तथा खंड विकास अधिकारियों को भी निर्देश दिए कि भी फील्ड में जाकर विकास कार्यों को पूर्ण करने की दिशा में शीघ्र कदम उठाएं।

कार्यशाला के दौरान मंत्री ने ग्रामीण विकास एवं पंचायती राज विभाग की दो मैनुअल बुक का भी अनावरण किया। इस अवसर पर उन्होंने कहा कि इन दोनों बुक में वर्ष 2024-25 तक की ग्रामीण विकास एवं पंचायती राज विभाग की संपूर्ण विकास योजनाओं एवं कार्यक्रमों एवं उपलब्धियों की विस्तृत जानकारी उपलब्ध है।

युवाओं को स्वरोजगार के लिए ई-टैक्सी योजना लागू

उप-मुख्यमंत्री मुकेश अग्निहोत्री ने कहा कि धर्मशाला बस स्टैंड का नाम स्वर्गीय जी.एस. बाली के नाम पर रखा जाएगा। गत दिनों नगरोटा में स्वर्गीय जी.एस. बाली की स्मृति में आयोजित चार दिवसीय मेले के समापन अवसर पर बतौर मुख्यातिथि उप-मुख्यमंत्री मुकेश अग्निहोत्री ने कहा कि जी.एस. बाली ने राज्य के विकास में अमूल्य योगदान दिया है तथा सरकार में मंत्री रहते हुए संबंधित विभागों के आधुनिकीकरण के लिए पहल की है जिसके चलते ही आज भी लोग उन्हें याद करते हैं।

उप-मुख्यमंत्री मुकेश अग्निहोत्री ने कहा कि वर्तमान सरकार युवाओं को स्वरोजगार के अवसर उपलब्ध करवाने के लिए कृतसंकल्प है तथा युवाओं को प्रोत्साहित करने के लिए राजीव गांधी स्वरोजगार योजना लागू की है। इस योजना के तहत परिवहन विभाग ने ई-टैक्सी स्कीम लागू की गई है जिसमें ई-टैक्सी खरीदने पर 50 प्रतिशत अनुदान दिया जाएगा। इन्हीं ई-टैक्सियों को कम से कम चार वर्षों के लिए सरकारी विभागों द्वारा अनुबंध पर लिया जाएगा।

योजना के तहत ई-टैक्सी खरीदने पर 50 प्रतिशत अनुदान

उन्होंने कहा कि वाहन पंजीकरण के नंबरों को आम जनता के लिए खोल दिया गया है, विभिन्न विशेष पंजीकरण नंबरों के लिए ई-नीलामी के माध्यम से 11 करोड़ रुपये से भी ज्यादा का राजस्व प्राप्त हुआ है। उप-मुख्यमंत्री मुकेश अग्निहोत्री ने कहा कि एचआरटीसी की बसों के रखरखाव से संबंधित खर्चों को नियंत्रित करने के लिए केंद्रीयकृत इनवेंटरी प्रबंधन प्रणाली लागू की गई है। प्रदेश सरकार राज्य में आम लोगों तथा पर्यटकों की सुविधा के लिए परिवहन क्षेत्र में निरंतर प्रयास कर रही है। उन्होंने कहा कि हिमाचल पथ परिवहन निगम ने गत वर्ष अपने बेड़े में 210 नई बसें, 11 वोल्वो बसें, 18 इनोवा क्रिस्टा तथा 12 टैंपो शामिल किए हैं ताकि लोगों को आवागमन की बेहतर सुविधाएं मिल सकें। उप-मुख्यमंत्री मुकेश अग्निहोत्री ने कहा कि राज्य सरकार हिमाचल को आत्मनिर्भर बनाने की दिशा में महत्त्वपूर्ण कार्य कर रही है ताकि हिमाचल को पूरे देश के एक मॉडल राज्य के रूप में विकसित किया जा सके। इस अवसर पर मध्य प्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री दिग्विजय सिंह ने भी जी.एस. बाली को याद करते हुए कहा कि वह एक दूरदर्शी नेता थे जो हमेशा आम जनता की सेवा के लिए तत्पर रहते थे।

इस अवसर पर मध्य प्रदेश के पूर्व मंत्री जयवर्धन सिंह ने भी जी.एस. बाली को नमन करते हुए उनके कार्यों को याद किया। इससे पहले हिमाचल प्रदेश पर्यटन विकास निगम के अध्यक्ष आर.एस. बाली ने मुख्यातिथि का स्वागत करते हुए कार्यक्रम में भाग लेने के लिए आभार भी व्यक्त किया। इस अवसर पर तकनीकी शिक्षा मंत्री राजेश धर्माणी, आयुष मंत्री यादवेंद्र गोमा, मुख्य संसदीय सचिव किशोरी लाल तथा आशीष बुटेल, विधायक मलेंद्र राजन सहित विभिन्न गणमान्य लोग भी उपस्थित थे।

सरकार कर्मचारी कल्याण के लिए प्रतिबद्ध

राजस्व, बागवानी, जनजातीय विकास एवं जन शिकायत निवारण मंत्री जगत सिंह नेगी ने गत दिनों संयुक्त ग्रामीण राजस्व अधिकारी (पटवारी व कानूनगो) महासंघ के प्रतिनिधिमंडल के साथ बैठक की। बैठक में प्रतिनिधिमंडल ने राजस्व मंत्री से वेतन विसंगतियों को दूर करने सहित विभिन्न मांगों पर विचार करने का आग्रह किया।

राजस्व मंत्री ने कहा कि प्रदेश सरकार ने पटवारी व कानूनगो के जिला कैडर को राज्य कैडर में परिवर्तित करने का निर्णय जनहित में लिया गया है, जिससे उनकी वरिष्ठता, पदोन्नति और भत्तों पर प्रभाव नहीं पड़ेगा। राज्य कैडर होने से दूसरे जिलों में कई वर्षों से कार्यरत पटवारी व कानूनगो को अपने जिले में सेवाएं देने का अवसर प्राप्त हो सकेगा। राजस्व मंत्री ने कहा कि पटवारी व कानूनगो के काम बंद करने से प्रदेश की जनता के राजस्व संबंधी कई कार्य लंबित हैं और आम लोगों को कई समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है। सरकार का दायित्व है कि वह आम आदमी की समस्याओं का समयबद्ध समाधान सुनिश्चित करे। उन्होंने कहा कि प्रदेश सरकार कर्मचारियों के कल्याण के लिए प्रतिबद्ध है।

वर्तमान सरकार ने अपने कार्यकाल के दौरान अनेक कर्मचारी हितैषी निर्णय लिए हैं। सरकार ने कर्मचारियों को पुरानी पेंशन देकर सम्माजनक जीवन जीने का मार्ग प्रशस्त किया है। कर्मचारियों को समय पर अन्य भत्तों का भी भुगतान किया जा रहा है। उन्होंने कहा कि प्रदेश सरकार महासंघ की अन्य मांगों पर गंभीरता से विचार कर रही है।

गिरिराज
हिमाचल की प्रगति एवं संस्कृति का दर्पण

संसारी जीवों की तरह मरने से कहीं अधिक अच्छा है कर्तव्य क्षेत्र में सत्य का उपदेश देते हुए आगे बढ़ो। -स्वामी विवेकानंद

वन से जन समृद्धि

वनों से आच्छादित देवभूमि हिमाचल जहां एक ओर प्रदेश के नैसर्गिक सौन्दर्य को बढ़ावा देने में अहम भूमिका निभाते हैं। वहीं यह पर्यावरणीय संतुलन बनाए रखने में भी सहायक होते हैं। लेकिन आज मानव जाति ने उन्नति तथा विकास के नाम पर प्रकृति का जो शोषण किया है, उसके हमें गंभीर परिणाम देखने को मिल रहे हैं। मौसम चक्र में बदलाव हो रहा है। गर्मियों के दिनों में वर्षा और सर्दियों में गर्मियों का एहसास हो रहा है। ओजोन की परत में छेद, विभिन्न गैसों का ग्राह्य सीमा से अधिक उत्सर्जन, लुप्त होती वनस्पतियां, पिघलते ग्लेशियर, वनों की अंधाधुंध कटाई, कूड़े-कचरे ने इस धरती ही नहीं बल्कि अन्तरिक्ष को भी प्रदूषित कर दिया है। आज हमें शुद्ध हवा और पेयजल की बड़े पैमाने पर कमी दिखाई दे रही है। इस दुष्चक्र से निकलने के लिए हिमाचल प्रदेश सरकार ने प्रदेश को वर्ष 2026 तक हरित राज्य बनाने का लक्ष्य रखा है। प्रदेश के हरित आवरण को बढ़ाने के दृष्टिगत एक महत्त्वपूर्ण पहल के तहत 'मुख्यमंत्री ग्रीन कवर मिशन' की शुरूआत की है। जिसके तहत राज्य की बंजर पहाड़ियों के बड़े हिस्से पर पौधरोपण के माध्यम से चयनित भूमि में पर्यावरण अनुकूल प्रजातियों का पौधरोण किया जाएगा। इससे हरित आवरण तो बढ़ेगा और साथ ही चोटियों पर जंगली खरपतवारों का भी खात्मा होगा। साथ ही प्रदेश के चिन्हित क्षेत्रों में पर्यावरण अनुकूल प्रजातियां लगाकर हरित आवरण को बढ़ावा मिलेगा। सरकार ने वन अधिकारियों को इन पौधरोपण की निगरानी और उनकी जीविता सुनिश्चित करने की जिम्मेदारी वन अधिकारियों को सौंपी है। सरकार के इस विस्तृत दृष्टिकोण से पर्यावरण संरक्षण को बल मिलेगा और इससे प्रदेश का सतत विकास भी सुनिश्चित होगा। आने वाली पीढ़ियों के लिए पर्यावरण संरक्षित कर उन्हें स्वच्छ प्राकृतिक विरासत देने में 'मुख्यमंत्री ग्रीन कंवर मिशन' मील का पत्थर साबित होगा। हिमाचल जैसे कृषि प्रधान राज्य में वनों का बहुत महत्त्व है। अपनी आजीविका कमाने के लिए स्थानीय लोग वन संसाधनों पर निर्भर रहते हैं। इसलिए जलवायु परिवर्तन को लेकर वैश्विक चिंताओं और पर्यावरण अनुकूल समाधानों की खोज तथा राज्य की वन संपदा को संरक्षित और समृद्ध करने की तात्कालिकता को पहचानते हुए प्रदेश सरकार सराहनीय कदम उठा रही है। इस वर्ष वन विभाग ने प्रदेश में नौ हजार हेक्टेयर भूमि में पौधे लगाने का लक्ष्य रखा है। वन क्षेत्र में फलदार पौधों के रोपण को 30 से बढ़ाकर 60 फीसदी किया गया है, जिसके सकारात्मक परिणाम आगामी दस वर्षों में देखने को मिलेंगे। प्रकृति ने हिमाचल को आलौकिक सौंदर्य से नवाजा है और यहां की मनभावन वादियां देश-विदेश में सैलानियों को आकर्षित करती हैं। इसी उद्देश्य को समक्ष रख कर प्रदेश सरकार इको-पर्यटन को भी प्रोत्साहित कर रही है। प्राकृतिक सौन्दर्य से परिपूर्ण वन क्षेत्र जैसे पालमपुर वनमंडल में स्वार, सौखे वन विहार, न्यूगल पार्क, बीड़-बिलिंग, पर्वतीय वन मंडल में कसोल, खीरगंगा, सिराज में सौइना, कोटगढ़ में नारकंडा और शिमला वन मंडल के तहत शोघी कैंपिंग स्थल व पोटर हिल कैंपिंग इत्यादि शामिल हैं। प्रत्येक इको -पर्यटन स्थल एक हेक्टेयर क्षेत्र में विकसित है। इन इको-पर्यटन स्थलों को प्रोत्साहित करने से राज्य में पर्यटकों की आमद बढ़ेगी और राजस्व में भी इजाफा होगा तथा प्रदेश में रोजगार व स्वरोजगार के अवसर सृजित होंगे। हिमाचल की पहचान हरित राज्य के रूप में हो इसके लिए प्रदेश सरकार द्वारा ऊना जिला के पेखूबेला में 32 मेगावाट की सौर ऊर्जा संयंत्र की स्थापना की है। शीघ्र ही अन्य दो संयंत्र शुरू कर दिए जाएंगे। हरित ऊर्जा बनाने का लक्ष्य प्राप्त हो इसके लिए सरकार ने हरित हाईड्रोजन उत्पादन के लिए ऑयल इंडिया कंपनी के साथ समझौता ज्ञापन (एम.ओ.यू.) हस्ताक्षरित किया है। प्रकृति संरक्षण के लिए केवल सरकार के प्रयासों तक ही हमें सीमित न रहकर अपने-अपने स्तर पर भी पौधरोपण कर उनकी देखभाल करनी होगी। क्योंकि समय रहते अगर हम पर्यावरण संरक्षण के प्रति जागरूक नहीं हुए तो इस धरती पर रहना मुश्किल होता चला जाएगा। प्रदूषित हो रहे पर्यावरण के आज तो भयावह खतरे हमारे सामने आ रहे हैं। शायद ही कोई इससे अनभिज्ञ होगा और हमें यह स्वीकार करने में गुरेज भी नहीं करना चाहिए कि इन समस्याओं के लिए कहीं न कहीं हम स्वयं ही जिम्मेदार हैं। अतः प्राकृतिक संसाधनों का हमें जरूरत के अनुसार ही दोहन करना होगा यही आने वाली पीढ़ियों के लिए हमारी बहुमूल्य विरासत होगी।

स्कूलों के साथ घर में भी हो आपदा प्रबंधन

इतिहास गवाह है इंसान चाहे कितना ही तरक्की कर प्रकृति को अपने वश में करना चाहे लेकिन प्रकृति जब अपने अनुकूल और प्रतिकूल प्रभाव इस धरती और यहां के बाशिंदों के लिए वरदान या कहर बनकर बरपाती है वह हमें न चाहते हुए भी स्वीकार करना ही पड़ता है। प्राकृतिक आपदा चाहे किसी भी रूप में हो बाढ़, अकाल, भूस्खलन, सूखा या महामारी इन आपदाओं के कुप्रभावों से बचा तो नहीं जा सकता लेकिन इनको मानव हित के लिये कम करने का प्रयास अवश्य ही किया जा सकता है। प्रकृति के 12 तत्त्व माने गए हैं पृथ्वी, जल, वायु, अग्नि, बिजली, बर्फ, बल, समय, पुष्प, छाया, प्रकाश और चंद्रमा। इनमें समन्वय बनाना बहुत आवश्यक है। जब-जब इन घटकों में असंतुलन पैदा हुआ है, प्राकृतिक आपदाओं ने तबाही का मंजर दिखाया है। प्राकृतिक आपदाओं से न केवल जीवन की हानि होती है बल्कि कई स्वास्थ्य संबंधी दुष्प्रभाव देखे जा सकते हैं। समाज में न केवल आर्थिक व्यवधान उत्पन्न होते हैं बल्कि पर्यावरणीय क्षति का खामियाजा भी इंसान को भुगतना पड़ता है। संयुक्त राष्ट्र संघ की रिपोर्ट के अनुसार हमारे देश में अकेले बाढ़ की वजह से पिछले 20 साल में 547 लाख करोड़ रुपए यानी 79.5 बिलियन बाढ़ की क्षति हुई है। वर्ष 2018 भारत का बाढ़ के लिहाज से बेहद बुरा रहा कई राज्यों समेत सबसे अधिक तबाही केरल में हुई। आज इस बात पर चिंतन करना ही होगा कि आखिर इन प्राकृतिक आपदाओं के पीछे का कारण है क्या? पिछले कुछ दशकों से देवभूमि में बड़े पैमाने पर बुनियादी ढांचे में परिवर्तन हुआ है अन्य शब्दों में कहें तो इसको विकास का नाम दिया गया। बड़े पैमाने पर सड़कें, सुरंगें, जल विद्युत संयंत्रों की स्थापना, अनियोजित शहरीकरण, वनों की अंधाधुंध कटाई, अत्यधिक खनन इस त्रासदी के लिये उत्तरदाई हैं। हिमाचल प्रदेश की अगर बात की जाए तो यहां मौसम जितना गर्म होता है वातावरण उतनी ही नमी को धारण कर लेता है। इस कारण पृथ्वी की सतह से अधिक पानी वाष्पित हो रहा है इससे हवा की धारण क्षमता बढ़ जाती है जिसके कारण अधिक बूंदें और भारी वर्षा होती है कभी-कभी कम समय और कम क्षेत्र में ही बादल फटने से जल प्रलय आता है जिससे हिमाचल में बाढ़ आना स्वभाविक हो गया है। बारिश अपना रौद्र रूप दिखाती है। भूस्खलन, भारी बारिश, भूकंप, वनों की कटाई, ज्वालामुखी, सड़कों और इमारतों का बनना, रिहायश के लिए घरों का निर्माण आदि के कारण पर्यावरण से छेड़छाड़ होती है परिणामस्वरूप दैनिक जीवन पर कई तरह के अल्पकालिक और दीर्घकालिक प्रभाव देखे जा सकते हैं। इससे संपत्ति जान-माल का नुकसान हो रहा है भूस्खलन जैसी प्राकृतिक आपदा ने भी मनुष्य को झकझोर कर रख दिया है विगत वर्षों से हिमाचल प्रदेश में प्राकृतिक आपदाओं ने अपना विकराल रूप दिखाना शुरू किया है और इसमें इतनी अधिक तीव्रता आई है कि हिमाचल प्रदेश जैसे पहाड़ी राज्य में भूस्खलन जैसी आपदाएं भी भयावह रूप दिखा रही हैं। आपदा प्रबंधन विभाग के आंकड़ों की तरफ नजर डालें तो राज्य में 2020 में भूस्खलन के 16 मामले दर्ज किये जो 2022 में बढ़कर 117 हो गए। तीन ही वर्षों में यह लैंडस्लाइडिंग के मामलों की संख्यां अप्रत्याशित रूप से 233 तक पहुंच गयी। यह घटनाएं इतनी मार्मिक थी कि इन घटनाओं में 5000 लोगों ने अपनी जान गवां दी। हिमाचल प्रदेश में 675 संभावित भूस्खलन स्थल रिहायशी बस्तियों के पास है। चंबा में 133, किन्नौर में 15, जबकि राजधानी शिमला में 50 भूस्खलन स्थल हैं। भू स्खलन की सबसे अधिक घटनाएं किन्नौर और लाहौल स्पीति में देखने को मिलती हैं। मानसून के दौरान प्रदेश में वर्ष 2023 में लोक निर्माण विभाग का नुकसान 2691.41 करोड़, जल शक्ति विभाग का नुकसान 1860.52 करोड़ बिजली बोर्ड का नुकसान 1707.35 करोड़ कृषि विभाग का नुकसान 335.73 करोड़ बागवानी का 173.30 करोड़ शिक्षा विभाग का 118.90 करोड़ शहरी विकास विभाग का नुकसान 88.82 करोड़ ग्रामीण विकास विभाग का 369.53 करोड़ व अन्य विभागों को 121.87 करोड़ का नुकसान वहन करना पड़ा। गत वर्ष मानसून के दौरान बाढ़, बादल फटना भूस्खलन से हुए नुकसान ने हिमाचल की प्रगति को न केवल धीमा किया बल्कि हिमाचल को प्रगति की दृष्टि से कई वर्ष पीछे धकेल दिया। देवदारों के पुराने जंगल भी भूस्खलन को रोक नहीं सके पुराने पेड़ों की जगह नए पेड़ों को लगाने की आवश्यकता है और ओक ट्री सहित अन्य प्रजातियों को भी बहुतायत मात्रा में लगाने की आवश्यकता है जो भूस्खलन को रोक सकें। भूकंप से बचाव के लिए भूकंपरोधी घरों का निर्माण किया जाना चाहिए। बाढ़ व सुनामी से बचाव के लिए सघन वृक्षारोपण किया जाना चाहिए। आम आदमी का इन आपदाओं से बचने के लिए जागरूक होना बहुत जरूरी है, जिसमें गैर विनाश शैली भोजन, पानी, एक टॉर्च, चलने वाला रेडियो, बैटरी वाला टीवी, दवाइयां जीवाणु रोधी और एक या दो ड्रेस मौसमी कपड़े इन सबसे जरूरी प्राकृतिक चिकित्सा के फर्स्ट एड बॉक्स होना हर घर में जरूरी है। आपदा प्रबंधन योजना का सिर्फ स्कूल में ही बनाना जरूरी नहीं है बल्कि हर घर में हर जन-जन को जागरूक किया जाए और आपदा प्रबंधन योजना हर घर में तैयार की जानी चाहिए ताकि इन आपदाओं से हम बच सकें। समय हमें चेतावनी देने के साथ-साथ सतर्क भी कर कर रहा है। प्रकृति ने हमें सौंदर्य से लेकर जीवन के लिए नितांत आवश्यक वायु, पानी और भोजन सब कुछ दिया है पर मनुष्य प्रवृत्ति है की आधिकारिक सुविधाओं की चाह में प्रकृति से खिलवाड़ करता जा रहा है। यदि समय रहते कारगर उपाय न किए गए तो आने वाले वर्षों में हम सब धरती वासियों को इसका खामियाजा भुगतना पड़ेगा।

बड़े पैमाने पर सड़कें, सुरंगें, जल विद्युत संयंत्रों की स्थापना, अनियोजित शहरीकरण, वनों की अंधाधुंध कटाई, अत्याधिक खनन आपदाओं के लिये उत्तरदाई है। हिमाचल में मौसम जितना गर्म होता है वातावरण उतनी ही नमी को धारण कर लेता है इस कारण पृथ्वी की सतह से अधिक पानी वाष्पित हो रहा है इससे हवा की धारण क्षमता बढ़ जाती है जिसके कारण अधिक बूंदें और भारी वर्षा होती है कभी-कभी कम समय और कम क्षेत्र में ही बादल फटने से जल प्रलय आता है

✍ ममता चन्देल

डिजिटल साक्षरता के माध्यम से समुदायों का सशक्तीकरण

आज के तेजी से बदलते डिजिटल युग में कंप्यूटरों और इंटरनेट का ज्ञान बहुत महत्त्वपूर्ण है। इसे डिजिटल साक्षरता कहा जाता है, और यह सिर्फ तकनीक का उपयोग करने के बारे में ही नहीं है – बल्कि इसको समझने के बारे में भी है। डिजिटल साक्षरता को एक नक्शा की तरह समझें जो आपको ऑनलाइन दुनिया में नेविगेट करने में मदद करता है। जैसे ही आपको शहर में घूमने के लिए नक्शा पढ़ने की आवश्यकता होती है, ठीक वैसे ही डिजिटल साक्षरता आपको इंटरनेट पर सुरक्षित और स्मार्ट रूप से आगे बढ़ने में मदद करती है। तो, डिजिटल साक्षरता इतनी बड़ी चीज क्यों है? शुरूआत में, इंटरनेट बहुत बड़ा है! वहां इतनी सारी जानकारी है, और सभी सच नहीं होती। डिजिटल साक्षरता आपको समझने में मदद करती है कि क्या सच है और क्या झूठ। यह ऑनलाइन झूठ और धोखे को पहचानने की अनुमति देती है। डिजिटल साक्षरता आपको सुरक्षित रखने में भी मदद करती है। जैसे ही आप अपने फ्रंट डोर को चाबियों से बंद करते हैं, ठीक वैसे ही डिजिटल साक्षरता आपको अपने ऑनलाइन खातों को हैकर्स से बचाने में मदद करती है। आप सीखेंगे कि कैसे मजबूत पासवर्ड बनाएं, फिशिंग ईमेल को पहचानें, और अपनी व्यक्तिगत जानकारी को ऑनलाइन बुराइयों से सुरक्षित रखें। लेकिन डिजिटल साक्षरता सिर्फ खुद को सुरक्षित रखने के बारे में ही नहीं है – यह नए अवसर भी खोलती है। आज के समय में, बहुत से नौकरियां कंप्यूटरों और इंटरनेट का उपयोग करने के लिए आवश्यक होती हैं। अगर आप तकनीक में अच्छे हैं, तो आपको नौकरी ढूंढने और अपने करियर को आगे बढ़ने के लिए अधिक विकल्प मिलेंगे। लेकिन यहां एक बात है -हर किसी के पास डिजिटल साक्षरता प्रशिक्षण का एक्सेस नहीं होता। इसलिए समुदायों को आगे बढ़ने के लिए संसाधन प्रदान करना बेहद महत्त्वपूर्ण है। चाहे वह स्कूल, पुस्तकालय, या समुदाय केंद्र के माध्यम से हो, हर किसी को डिजिटल कौशल को सुधारने के लिए अवसर प्रदान करने चाहिए। एक ऐसी दुनिया की कल्पना कीजिए जहां हर कोई ऑनलाइन में आत्मविश्वासी और सुरक्षित है। यही वह दुनिया है जो हम सभी मिलकर डिजिटल साक्षरता को बढ़ावा देकर बना सकते हैं। तो चलिए शुरू करते हैं – क्योंकि इंटरनेट हमें इंतजार कर रहा है और सही कौशलों के साथ, हम सभी इसे सबसे अच्छी तरह से उपयोग कर सकते हैं। हमें एक साथ मिलकर काम करना होगा। सिर्फ एक ही व्यक्ति या संगठन ही नहीं, बल्कि पूरी समुदाय को इस मुहिम में शामिल होना होगा। हमें एक दूसरे का साथ देना और समर्थन करना होगा ताकि हम सभी अधिक अच्छे तरीके से इंटरनेट का उपयोग कर सकें। इसी तरह, हम सभी मिलकर डिजिटल साक्षरता को बढ़ावा देकर अपने समुदाय को सशक्त बना सकते हैं।

सिर्फ एक ही व्यक्ति या संगठन ही नहीं, बल्कि पूरे समुदाय को इस मुहिम में शामिल होना होगा। हमें एक दूसरे का साथ देना और समर्थन करना होगा ताकि हम सभी अधिक अच्छे तरीके से इंटरनेट का उपयोग कर सकें।

✍ विजय श्री

जनसंसद

धंसी पड़ी है गांव महादेव की सड़क

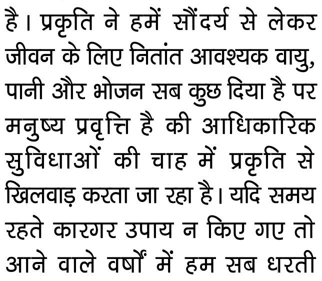

मैं प्रदेश सरकार का ध्यान मंडी जिला के नाचन क्षेत्र के गांव महादेव में सड़क के खस्ताहाल की ओर दिलाना चाहता हूं। यहां लोक निर्माण विभाग मण्डल गोहर के अंतर्गत नाचन क्षेत्र के गांव महादेव की गहरे गड्ढें में पड़ी भारी गंदगी से अटी पड़ी सड़क का एक बड़ा भाग लगभग एक महा से धंसा पड़ा है जिससे वाहनों की आवाजाही में विराम लग गया है। घनी आबादी वाले लोअर महादेव स्थित यह सड़क मार्ग जो गांव चौक बीएसएल परियोजना की नहर के यहां मिलता है। संबंधित विभाग को सूचित किए जाने के बावजूद भी आनी बदहाली पर आंसू बहा रहा है। सरकारी कर्मचारियों सहित अन्य कई क्षेत्रों में जुड़े लोग सड़क बहाल न होने के कारण भारी परेशनी झेल रहे हैं। प्रदेश सरकार से अनुरोध है कि लोक निर्माण विभाग को निर्देश देते हुए समुचित सफाई व्यवस्था कर शीघ्र ही धंसे-टूटे सड़क के इस बदहाल भाग सुधार कर रिपोर्ट मांगे।

✍ भीम सिंह परदेशी

कृषक मित्र

मवेशियों में क्षय रोग

गौजातीय क्षय रोग जानवरों की एक दीर्घकालिक दुर्बल करने वाली बीमारी है जो माइकोबैक्टीरियम बोविस (एम. बोविस) नामक बैक्टीरिया के कारण होती है। यह रोग लगभग सभी स्तनधारियों को प्रभावित कर सकता है, जिससे हल्का बुखार, खांसी, क्षीणता और अंततः मृत्यु हो सकती है। रोग का नाम प्रभावित अंगों (मुख्य रूप से फेफड़े और लिम्फ नोड्स) में विशिष्ट नोड्यूल्स, जिन्हें 'ट्यूबरकल्स' कहा जाता है,की उपस्थिति से प्राप्त हुआ है।

1920 के दशक तक जब विकसित देशों में नियंत्रण उपाय शुरु हुए, यह दुनिया भर में घरेलू पशुओं की प्रमुख बीमारियों में से एक थी। अन्य माइकोबैक्टीरिया जैसे माइको बैक्टीरियम ट्यूबरकुलोसिस और एम. कैप्रे बोवाइन ट्यूबरकुलोसिस मामलों से पाए जा सकते हैं। आज टीबी मवेशियों, जंगली जानवरों की एक महत्वपूर्ण बीमारी बनी हुई है, और एक महत्वपूर्ण जूनोसिस (जानवरों की एक बीमारी जो मनुष्यों को भी संक्रमित कर सकती है) है। टीबी को विश्व पशु स्वास्थ्य संगठन (ओआईई) स्थलीय पशु स्वास्थ्य कोड में सूचीबद्ध किया गया है, और इसका पता चलने पर ओआईई को सूचित किया जाना चाहिए।

प्रसार : गौजातीय क्षय रोग दुनिया भर के जानवरों में प्रचलित है, लेकिन अधिकतर अफ्रीका, एशिया और अमेरिका के कुछ हिस्सों में देखा जाता है। भारत में यह बीमारी घरेलू पशुओं में स्थानिक है। कई विकसित देशों ने अपने मवेशियों की आबादी से गौजातीय टीबी को कम या समाप्त कर दिया है। हालांकि, कनाडा, यूनाइटेड किंगडम, संयुक्त राज्य अमेरिका और न्यूजीलैंड में वन्य जीवों में संक्रमण के महत्वपूर्ण क्षेत्र बने हुए हैं। हालांकि मवेशियों को एम. बोविस का असली संक्रमित जानवर माना जाता है, यह बीमारी कई अन्य पालतू, गैर-पालतू और जंगली जानवरों में भी बताई गई है। यह भैंसों, बाइसन, भेड़, बकरियों, घोड़ों, ऊंटों, सूअरों, जंगली सूअरों, हिरणों, मृगों, कुत्तों, बिल्लियों, लोमड़ियों, मिंक, बिज्जू, फेरेट्स, चूहों, प्राइमेट्स, लामाओं, कुडुस, एलैंड्स, हाथी, सीताटुंगा, ओरिक्स, एडैक्स, गैंडा, वगैरह में बताई गई है।

संचरण : गौजातीय क्षय रोग संक्रामक प्रकृति का होता है और संक्रमित घरेलू और जंगली जानवरों के संपर्क में आने से फैलता है। संक्रमण का मुख्य मार्ग संक्रमित बूंदों को सांस के माध्यम से अंदर लेना है जो खांसने से संक्रमित व्यक्ति या जानवर के फेफड़ों से बाहर निकल जाती हैं। संक्रमित गायों का कच्चा दूध पीने से बछड़े और मनुष्य भी संक्रमित हो सकते हैं।

क्योंकि बीमारी का कोर्स धीमा होता है, संक्रमित जानवर को मरने में कई महीने या साल लग जाते हैं। बीमारी के दौरान, नैदानिक लक्षण प्रकट होने से पहले एक जानवर कई अन्य जानवरों में बीमारी फैला सकता है। इसलिए, संक्रमित घरेलू जानवरों की आवाजाही और संक्रमित जंगली

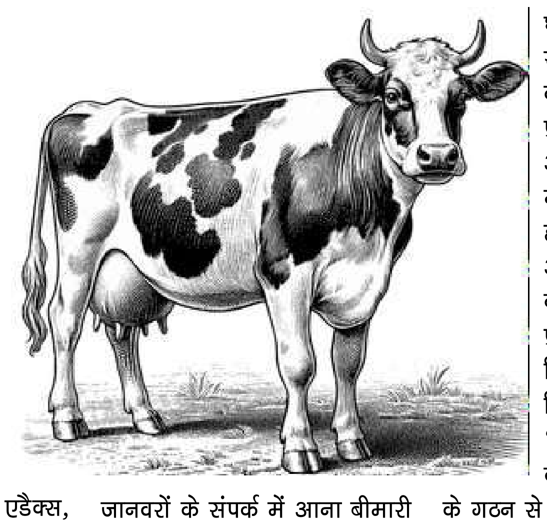

जानवरों के संपर्क में आना बीमारी फैलने के प्रमुख तरीके हैं।

नैदानिक संकेत और लक्षणः क्षय

मोनिका भारद्वाज
पवन कुमार

रोग आमतौर पर लंबे समय तक चलता है, और लक्षण प्रकट होने में महीनों या वर्षों का समय लगता है। मुख्य नैदानिक लक्षणों में कमजोरी, भूख न लगना, वजन कम होना, उतार-चढ़ाव वाला बुखार, रुक-रुक कर चलने वाली खांसी, दस्त, क्षीणता और प्रमुख लिम्फ नोड्स का बढ़ना शामिल हैं। हालांकि, बैक्टीरिया रोग पैदा किए बिना भी मेजबान में निष्क्रिय रह सकते हैं और इस प्रकार की स्थिति को गुप्त क्षय रोग कहा जाता है।

सकल रोग संबंधी घावः गौजातीय क्षय रोग में पैथोलॉजिकल घाव अक्सर फेफड़ों और संबंधित लिम्फ नोड्स में देखे जाते हैं। श्वसन प्रणाली में घाव सबसे अधिक निचले श्वसन पथ में विकसित होते हैं, हालांकि ऊपरी श्वसन पथ और उससे जुड़े ऊतक भी कई मामलों में रोग प्रदर्शित करते हैं। घाव की विशेषता फेफड़ों और लिम्फ नोड्स में 'ट्यूबरकल्स' कहे जाने वाले ग्रैनुलोमेटस नोड्यूल्स के गठन से होती है। प्रभावित अंग गांठदार संरचना की उपस्थिति के साथ आकार में बढ़े हुए दिखाई देते हैं, जिससे पता चलता है कि अंदर केसियस चीज जैसी सामग्री मौजूद है।

फेफड़ों के अलावा, ट्यूबरकल प्लीहा, यकृत, हृदय, गुर्दे, स्तन ग्रंथियों और शरीर के गुहाओं की सतहों में देखा जा सकता है। प्रसारित मामलों में, कई छोटे ग्रैनुलोमा कई अंगों में पाए जा सकते हैं। घाव कभी-कभी महिला जननांग पर पाए जाते हैं, लेकिन पुरुष जननांग पर दुर्लभ होते हैं।

निदानः क्षय रोग का पता लगाने के लिए मानक तरीका ट्यूबरकुलिन परीक्षण है, जहां थोड़ी मात्रा में एंटीजन को त्वचा में इंजेक्ट किया जाता है, और प्रतिरक्षा प्रतिक्रिया को मापा जाता है। प्रयोगशाला और जैव रासायनिक परीक्षणों में बैक्टीरिया के संवर्धन की पारंपरिक विधि द्वारा निश्चित निदान किया जाता है। पारंपरिक तरीके श्रमसाध्य, अविश्वसनीय और समय लेने वाले होते हैं और सूक्ष्मजीव को संवर्धन होने में 90 दिन से अधिक का समय लग सकता है। इसलिए, पीसीआर जैसी हालिया आणविक विधियां सबसे आशाजनक हैं और बहुत तेजी से परिणाम प्रदान करती हैं। हालांकि, पीसीआर परख की सफलता बरकरार और अशुद्धता मुक्त डीएनए की उपलब्धता पर निर्भर करती है

जूनोसिस महत्वः माइको बैक्टीरियम बोविस मानव तपेदिक का प्रमुख कारण नहीं है, जो एम. ट्यूबरकुलेसीस के कारण होता है, लेकिन मनुष्य गौजातीय टीबी से संक्रमित हो सकते हैं। संक्रमित मवेशियों का कच्चा दूध पीने से, या संक्रामक बूंदों को साँस लेने से मनुष्य संक्रमित हो सकते हैं। यह अनुमान लगाया गया है कि कुछ देशों में दस प्रतिशत तक मानव तपेदिक बोवाइन टीबी के कारण होता है।

रोकथाम और नियंत्रणः क्षय रोग पर लागू मानक नियंत्रण उपाय परीक्षण और उन्मूलन है। रोग उन्मूलन कार्यक्रम जिसमें पोस्टमार्टम मांस निरीक्षण, खेत पर दौरे सहित गहन निगरानी, मवेशियों का व्यवस्थित व्यक्तिगत परीक्षण और संक्रमित और संपर्क जानवरों को हटाने के साथ-साथ यात्रा नियंत्रण शामिल हैं, बीमारी को कम करने या समाप्त करने में बहुत सफल रहे हैं। यदि पोस्टमार्टम मांस निरीक्षण में फेफड़ों और लिम्फ नोड्स में ट्यूबरकल की उपस्थिति दिखाई देती है, तो यह उपभोग के लिए असुरक्षित मांस है। संक्रमित जानवरों के दूध में बैक्टीरिया को मारने के लिए पर्याप्त तापमान पर पास्चुरीकृत करने से मनुष्यों में बीमारी के प्रसार को रोका जा सका है। उच्च लागत, लंबे समय और बीमारी को खत्म करने के बड़े लक्ष्य के कारण संक्रमित जानवरों के उपचार का प्रयास शायद ही कभी किया जाता है।

गौजातीय क्षय रोग जानवरों की एक दीर्घकालिक दुर्बल करने वाली बीमारी है जो माइकोबैक्टीरियम बोविस (एम. बोविस) नामक बैक्टीरिया के कारण होती है। यह रोग लगभग सभी स्तनधारियों को प्रभावित कर सकता है, जिससे हल्का बुखार, खांसी, क्षीणता और अंततः मृत्यु हो सकती है।

टीकाकरण का अभ्यास मनुष्यों में किया जाता है, लेकिन जानवरों में निवारक उपाय के रूप में इसका व्यापक रूप से उपयोग नहीं किया जाता है। मौजूदा पशु टीकों की प्रभावकारिता परिवर्तनशील है और यह बीमारी को खत्म करने के लिए परीक्षण में हस्तक्षेप करती है।

फल व सब्जी प्रसंस्करण से मिली आजीविका और आत्मनिर्भरता

हिमाचल प्रदेश का मण्डी जिला बागबानी के क्षेत्र में अग्रणी जिला है। फलों के अतिरिक्त जिले के लगभग 12000 हैक्टेयर में मौसमी व बेमौसमी सब्जियों की खेती की जा रही है। प्राकृतिक रूप से जंगलों में पाए जाने वाले मौसमी फल भी यहां काफी मात्रा में पाए जाते हैं जिन्हें यदि प्रसंस्कृत किया जाए तो इन्हें न केवल खराब होने से बचाया जा सकता है अपितु कई मूल्य सवंर्धित उत्पाद बनाकर किसानों की आर्थिकी सुधारने में काम में लाया जा सकता है। ऐसा ही कुछ कर दिखाया गांव लुहणू के श्री सुरेन्द्र कुमार ने।

श्री सुरेन्द्र कुमार सुपुत्र श्री सौजू राम मूल रुप से गांव लुहणू तहसील सुन्दरनगर के निवासी है तथा अचार, जैम, चटनी इत्यादि बनाकर अपनी आजिविका कमा रहा है। उन्होंने अपने संघर्षमयी जीवन की शुरुआत जड़ोल में 1000 रुपये पर किराए की एक दुकान लेकर फोटोग्राफी का काम करने से की। परन्तु कुछ ही समय बाद लोगों से बहुत-सी जमीन व दुकानें व घर फोरलेन सड़क निर्माण हेतू ले लिए गए जिसके तहत उनकी किराए की दुकान भी चली गई तथा फोटोग्राफी का काम भी मंद हो गया।

बच्चों की पढ़ाई का खर्चा पूरा करने के लिए फोटोग्राफी से हो रही कमाई श्री सुरेन्द्र कुमार को पर्याप्त नजर नहीं आ रही थी। इसलिए उन्होंने कुछ और काम करने की सोची। एच.पी.एम.सी की इकाई पास होने के कारण उनके मन में भी फल व सब्जी प्रसंस्करण के

काम का विचार आया। इस काम की शुरुआत उन्होंने अपने क्षेत्र में अधिक मात्रा में हो रहे फलों व सब्जियों से की। जडोल क्षेत्र आम के लिए माना जाता है। आम के अचार की लोकप्रियता व मांग को देखते हुए श्री सुरेन्द्र कुमार ने आम के अचार से

डॉ. कविता शर्मा

अपने व्यवसाय को आरम्भ किया। आम के मौसम में वह आम इकट्ठा कर नमक के पानी में संरक्षित करके रख लेता तथा मांग के अनुसार अचार बनाकर बेचते।

धीरे-धीरे आम के साथ-साथ श्री सुरेन्द्र कुमार ने अन्य फलों जैसे आंवला, गलगल, नींबू आदि का अचार बनाना भी शुरु किया। इसी व्यवसाय को आगे बढ़ाते हुए उन्होंने अपने आस-पास पैदा हो रही सब्जियों जैसे करेला, जिमिंकंद, कचनार, मूली, गोभी, अदरक, लहसुन, मशरुम, लींगड़ आदि का अचार भी बनाना शुरु किया। पहले वह अपने अचार आस-पास के गांव में ही बेचते थे लेकिन धीरे-धीरे उन्होंने होटल वालों से सम्पर्क करके अचार की सप्लाई आरम्भ की और अब मनाली के होटलों तक उनका अचार सप्लाई होता है। वर्ष 2016 में कृषि विज्ञान केन्द्र मण्डी में फल व सब्जी परिरक्षण प्रशिक्षण में भाग लेने के बाद उन्होंने अचार के अतिरिक्त अन्य मूल्य सवंर्धित उत्पाद जैसे जैम, चटनी, मुरब्बा, कैण्डी, सॉस व विभिन्न प्रकार की बड़ियां बनाना भी आरम्भ कर दिया है।

इन सभी मूल्य सवंर्धित उत्पादों से श्री सुरेन्द्र कुमार को लगभग दो से तीन लाख रुपये की वार्षिक आमदनी हो जाती है। विशेष बात तो यह है कि सुरेन्द्र अपने आस-पास उपलब्ध हर फल व सब्जी का सही उपयोग करके अपने उत्पादों में विविधता तो ला ही रहें हैं साथ में स्थानीय उत्पादों को बढ़ावा देकर आत्मनिर्भर भी हुए हैं। उन्होंने अपने उत्पादों में कई पौष्टिक तत्वों से भरपूर जैविक सब्जियों जैसे तरडी, दरयाघल को भी शामिल किया है। श्री सुरेन्द्र कुमार अपने क्षेत्र के किसानों के लिए प्रेरणा स्त्रोत बने हैं।

चिकित्सीय गुणों से भरपूर हिमालयन आइरिस पुष्प

हिमालयन आइरिस, वानस्पतिक रूप से 'आइरिस क्लार्की' के रूप में जाना जाता है और इरिडेसी परिवार से संबंधित है। हिमाचल प्रदेश, उत्तराखंड, कश्मीर, उत्तर पूर्व भारत, नेपाल, तिब्बत, भूटान, बर्मा और चीन में उगने वाला एक प्रकंद बारहमासी पौधा है। आइरिस के पौधों में सिराज क्षेत्र, मंडी, हिमाचल प्रदेश की वन श्रृंखला में शुरुआती वसंत से गर्मियों के दौरान फूल खिले हुए देखे जा सकते हैं। यह पौधा समुद्र तल से 2,300 से 4,300 मीटर (7,500 से 14,100 फीट) की ऊंचाई पर बढ़ता है। इसके फूल नीले बैंगनी होते हैं जिनमें फूलों की नली में एक विपरीत पीले धब्बे होते हैं। कैप्सूल प्रकार के फलों का निर्माण होता है जिसमें बीज अर्धवृत्ताकार, सपाट होते हैं। यह नम, घास की पहाड़ियों और दलदल पर, धाराओं और झीलों के बगल में और रोडोडेंड्रोन और देवदार के जंगलों के किनारे पर भी उगता है। 'आइरिस' नाम ग्रीक शब्द से आया है जिसका अर्थ है इंद्रधनुष, जो एक उपयुक्त नाम है क्योंकि आइरिस रंगों की एक विस्तृत श्रृंखला में आते हैं। फूलों की भाषा में, आइरिस के रंग के आधार पर अलग-अलग अर्थ हैं। उदाहरण के लिए, नीली परितारिका आशा और विश्वास का प्रतीक है, जबकि सफेद परितारिका शुद्धता और मासूमियत का प्रतिनिधित्व करती है। पीला आइरिस जुनून का प्रतीक है, और बैंगनी आईरिस ज्ञान और प्रशंसा का प्रतिनिधित्व करता है। फूल में तीन पंखुड़ियां होती हैं, जो विश्वास, ज्ञान और वीरता का प्रतीक हैं। आइरिस फूल न केवल देखने में सुंदर है, बल्कि इसमें कुछ अद्वितीय गुण भी हैं। फूल में एक अलग सुगंध होती है, जिसे अक्सर मीठा पाउडर के रूप में वर्णित

हिमालयन आईरिस, वानस्पतिक रूप से 'आइरिस क्लार्की' के रूप में जाना जाता है, जो इरिडेसी परिवार से संबंधित है।

नीलम ठाकुर
नेहा ठाकुर

किया जाता है। माना जाता है कि आइरिस की गंध में चिकित्सीय गुण होते हैं और इसका उपयोग अरोमाथेरेपी में तनाव और चिंता को कम करने में मदद करने के लिए किया जाता है। इसकी खुशबू के अलावा, आइरिस फूल में अन्य लाभकारी गुण भी होते हैं। आइरिस पौधे की जड़ में आइरिसिन नामक पदार्थ होता है, जिसके बारे में माना जाता है कि इसमें एंटी-इंफ्लेमेटरी और एंटीऑक्सीडेंट गुण होते हैं। आइरिसिन को कैंसर, अल्जाइमर और मधुमेह सहित कई बीमारियों के उपचार में संभावित उपयोग में लाया जाता है। समशीतोष्ण हिमालयी क्षेत्र के देशी पौधे के रूप में आइरिस पर्यावरण संरक्षण में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है। एक प्रकंद पौधे के रूप में इसमें व्यापक जड़ प्रणाली होती है, जो मिट्टी के कण को एक साथ बांधती है जिससे कटाव कम होता है और भारी वर्षा के दौरान पहाड़ी इलाके की ढलान स्थिर होती है। यह देशी बल्बनुमा पौधा मधुमक्खियों, तितली जैसे परागणकों को पराग, अमृत के स्रोत के रूप में आकर्षित करता है और देशी जीवों को आश्रय भी प्रदान करता है। यह जैव विविधता और पारिस्थितिकी तंत्र के स्वास्थ्य में योगदान देता है। शुरुआती वसंत से गर्मियों की शुरुआत के दौरान, द्रव्यमान में इस फूल का बैंगनी-नीला रंग सेराज के समशीतोष्ण क्षेत्र के प्राकृतिक परिदृश्य को बढ़ाता है। इस फूल को जल निकायों, घास की पहाड़ियों और नमी वाले स्थलों के पास एक देशी बारहमासी परिदृश्य पौधे के रूप में उगाया जा सकता है।

तक्षक को भगवान शिव के गले का मुख्य 'हार' होने का गौरव प्राप्त है। समुद्र मंथन के समय मंदराचल को मथानी के रूप में घुमाने के लिए वासुकि ने रस्सी के रूप में अपनी सेवाएं देव-दानवों को दी थी। त्रेता के लक्ष्मण और द्वापर के बलराम भी शेषावतार हैं।

अति पुरातन है नागपूजा

भारतीय संस्कृति में 'नाग' देव सदृश्य हैं-लोक मानस में पूज्य और समादृत। नागपूजा हमारी परम्परा का अभिन्न अंग है । अगर स्पष्ट करना हो कि हमारे धार्मिक जीवन में इस परम्परा का समावेश कब हुआ, तो यह आसान न होगा। हमारे लोक जीवन में नाग देवता को लेकर ढेर सारे उपाख्यान, लोकगीत और मान्यताएं हैं।

बाल्मीकि रामायण के अरण्य काण्ड में एक अंतर्कथा आती है, जिसके अनुसार सत्रहवें प्रजापति कश्यप की पुत्री कद्रु से नागों की उत्पत्ति बताई गयी है। नागों में सबसे पहले शेषनाग का जन्म हुआ। धर्म के स्तर पर आज भी यह विश्वास प्रचलित है कि पृथ्वी इन्हीं शेषनाग के फनों पर टिकी है। क्षीरसागर में भगवान विष्णु शेषनाग की शैया पर लेटते हैं। तक्षक और वासुकि भी शेषनाग के भाई हैं। तक्षक को भगवान शिव के गले का मुख्य 'हार' होने का गौरव प्राप्त है। समुद्र मंथन के समय मंदराचल को मथानी के रूप में घुमाने के लिए वासुकि ने रस्सी के रूप में अपनी सेवाएं देव-दानवों को दी थी। त्रेता के लक्ष्मण और द्वापर के बलराम भी शेषावतार हैं। कालिया दह में कालिया नाग के फनों पर कृष्ण का नर्तन द्वापर युगीन कृष्ण की बाल लीला का एक बहुचर्चित और रोचक प्रसंग भी लोक जीवन में बहुश्रुत है। महाभारत में सर्पदंश से परीक्षित की मृत्यु और इसके प्रतिशोध के लिए जनमेजय द्वारा 'सर्पयज्ञ' के आयोजन का आख्यान सर्वविदित है। पुराणों में दधिकर्ण, संख्यपाल, एरावत आदि नागराजों की कथाएं मिलती है। जैन तथा बौद्ध साहित्य में भी पूजनीय भाव भरी नाग कथाएं उपलब्ध हैं। मध्ययुग के साधक संत कवि रविदास सर्पदंश से पीड़ित व्यक्ति को मृत्यु के मुंह से खींच लेते थे। उनको नागदेव का आशीर्वाद प्राप्त था। वाराह पुराण के एक उपाख्यान में बताया गया है कि ब्रह्माजी ने सावन मास की शुक्लपक्ष की पंचमी के दिन नागों को पूजे जाने का वरदान दिया था। कहते हैं तभी से नाग पंचमी का पर्व अस्तित्व में आया। यह नागपूजा का सबसे महत्त्वपूर्ण पर्व है। इस दिन लोग दीमक की वाम्बी, खोह, तालाब के किनारे, टीलों, बंसवाड़ियों आदि स्थानों पर नाग देवता की पूजा-अर्चना करते हैं। इस अवसर पर नागदेव के भोग के लिए धान का लावा और दूध का चढ़ावा अर्पित करते हैं।

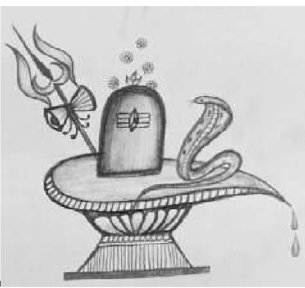

प्राचीन काल में राजाओं-महाराजाओं ने नागपूजा के लिए अनेक मूर्तियों की स्थापना कराई थी, मंदिर और कुंड बनवाए थे। राजस्थान के लोक जीवन में पाबूजी, गोगाजी, तेजाजी, रामदेवजी जैसे सैकड़ों वर्ष पुराने इतिहास पुरुष लोक देवता के रूप में पूज्य हैं। इनकी मूर्तियां अधिकतर सर्प विग्रह में ही मिलती हैं। राजस्थान में उदयपुर के समीप कैलाशपुरी नाम की एक जगह है, जहां प्राचीन 'तक्षक कुंड' विद्यमान है। मथुरा के समीप छड़गांव नामक स्थान से सन् 1908 में एक विशाल नागमूर्ति प्राप्त हुई थी। सात फुट नौ इंच ऊंची यह मूर्ति मथुरा संग्रहालय में रखी है। मूर्ति के पृष्ठ भाग पर ब्राह्मी लिपि में अंकित लेख के अनुसार, कुषाण सम्राट हुविष्क के शासनकाल (दूसरी सदी) में सेनहस्ति और भोनुक नामक दो मित्रों ने इस मूर्ति को तालाब के किनारे प्रतिष्ठित किया था। कई ऐतिहासिक और पुरातात्विक सूत्रों से इस तथ्य की पुष्टि होती है कि कुषाण काल में मथुरा के आसपास कई नाग-मंदिर थे, जिसमें पहली सदी का बना नागराज दधिकर्ण का मन्दिर अपनी भव्यता में अप्रतिम था। मथुरा के सांख नामक स्थान पर हुई खुदाई में एक विशाल नाग-मन्दिर का अवशेष प्राप्त हुआ है। शुंग काल की भी नागराज की प्रतिमाएं प्राप्त हुई हैं, किन्तु कुषाण काल की मूर्तियां अति सुन्दर और कलात्मक हैं।

मध्य प्रदेश के नागपाठ में नागदेव की उन्नीस मूर्तियां मिली हैं, यह सर्प-विग्रह और पुरुष-विग्रह दोनों रूपों में उत्कीर्ण हैं। विश्व विख्यात खजुराहो मन्दिर परिक्षेत्र में स्थित कन्दरिया महादेव मन्दिर में नागकन्या की कई मूर्तियां प्रतिष्ठित हैं। शिल्प के क्षेत्र में नाग-मूर्तियों की संरचना एक गम्भीर और विशिष्ट कार्य था। इस विषय में 'शिल्परत्न' नामक प्राचीन ग्रंथ में विशद विवरण उपलब्ध हैं। नागदेव के प्रति अपनी श्रद्धा और आस्था व्यक्त करने के लिए अग्निमित्र आदि राजाओं ने अपने सिक्कों पर सर्प का अंकन कराया था। कुछ इतिहासविदों का मत है, मोहनजोदड़ो और हड़प्पा की खुदाई से प्राप्त मुद्राओं पर सर्प की आकृतियां पायी गई हैं। इस दृष्टि से देखने पर नागपूजा की परम्परा 'सिंधु घाटी की सभ्यता' के धार्मिक विश्वास से जुड़कर ईसा से ढाई-तीन हजार साल पुरातन काल की सिद्ध होती है।

✍ दिनेश प्रताप सिंह 'चित्रेश'

पुण्यदायक है नाग पंचमी

अपने देश की समृद्ध विरासत को यदि सांस्कृतिक दृष्टि से देखें तो अनेकों ही रंग यहां देखने को मिल जाते हैं। इन रंगों में जहां यहां की विभिन्न कलाएं अपने रंग बिखेरती है वहीं यहां के रीति रिवाज, तीज त्योहार, व्रत आदि भी अपनी पहचान के साथ अलग ही महक बिखेरते हैं। तभी तो यहां के जीव जंतुओं से लेकर पेड़-पौधों तक की महिमा, यहां के तीज त्योहारों में भी देखने को मिल जाती है और ये सभी बातें अपने पर्यावरण और जैविक तंत्र को बचाने के लिए भी जरूरी हैं। नाग पंचमी का पर्व भी हमें ऐसा ही संदेश देता है।

✍ डॉ. कमल के. प्यासा

श्रावण मास की शुक्ल पक्ष की पंचमी को मनाए जाने वाले इस त्योहार को नाग पंचमी के नाम से ही जाना जाता है। इस दिन सुबह सवेरे स्नान के पश्चात स्वच्छ वस्त्र धारण करके नाग देवता का पूजन कच्चे दूध, फूल, लावा, हल्दी, कुमकुम, चावल व मिठाई आदि के साथ की जाती है। यह पूजन मंदिर में या घर पर नाग देवता की तस्वीर या मूर्ति के समक्ष की जाती है। मूर्ति पत्थर, लकड़ी, सोने या चांदी की भी ली जा सकती है। इसके अतिरिक्त घर द्वार के बाहर की ओर भी सांपों को अंकित किया जाता है और उनकी भी पूजा अर्चना की जाती है। क्योंकि सांपों व नागों की पूजा अर्चना को शक्ति, समृद्धि और सुरक्षा का प्रतीक भी तो माना गया है। इसके साथ ही साथ ऐसा भी बताया जाता है कि नाग पूजन व दूध के छिड़काव से सांप किसी भी प्रकार का नुकसान व कष्ट नहीं पहुंचाते। वैसे भी सांप व नाग हमारी फसलों को हानिकारक जीवों से भी तो बचाते हैं। इन पूजित नागों व सांपों में अनंत, वासुकी, पद्म, महापद्म, तक्षक, कुलीर, कर्कट, शंख, कालिया और पिंगल आदि शामिल हैं। नागों व सांपों का पूजन पंजाबी समुदाय के लोगों द्वारा भी किया जाता है, लेकिन वह नाग पंचमी के दिन न करके गुग्गा नौमी के दिन किया जाता है। इस दिन ये लोग नाग पूजा के लिए मैदे की मीठी सेवियां और पूड़े बनाते हैं और फिर किसी बेरी की झाड़ी या पेड़ पर सूती धागे से सात लपेट, लपेट कर धूप बत्ती के साथ पूजन करके गुग्गे देवता (नाग देवता) से क्षमा याचना करते हैं और कुछ इस तरह के बोल भी बोले जाते हैं,- गुग्गा चौकी ते न चढ़े, गुग्गा घर किसी दे न वढ़े, गुग्गा किसी नू न लड़े.....आदि आदि। मीठी सेवियों व पूड़ों का प्रसाद बेरी को चढ़ाने के पश्चात बेरी को जल भी अर्पित किया जाता है और फिर वही प्रसाद घर पर व पास पड़ोस में बांटा जाता है। यदि कहीं मंदिर पास हो तो वहां भी हजारी लगा ली जाती है। कुछ लोग गुग्गा पूजन मंदिर में भी कर लेते हैं। वैसे नाग पंचमी के इस त्योहार को मनाए जाने के संबंध में भी कई एक पौराणिक कथाएं सुनने को मिलती हैं, जिनका संबंध आगे से आगे कई दूसरी कथाओं में भी देखने सुनने में आ जाता है। एक पौराणिक कथा के अनुसार बताया जाता है कि किसी शाप के फलस्वरूप तक्षक नाग, राजा परीक्षित को उसके महल की सुरक्षा के बीच किसी तरह पहुंच कर, डस लेता है। जब परीक्षित के पुत्र जनमेजय को इस की जानकारी मिलती है तो वह अपने पिता की मौत का बदला लेने के लिए समस्त सर्प जाति को मिटाने के लिए, सर्पसत्र यज्ञ का आयोजन कर देता है, फलस्वरूप दूर-दूर से सांप उड़ कर यज्ञ की अग्नि में भस्म होने लगते हैं। जिसे देख कर सब भयभीत हो जाते हैं और फिर विनाश को देखते हुए ऋषि आस्तिक मुनि आगे आते हैं और यज्ञ वेदी पर कच्चे दूध का छिड़काव करके अग्नि की ज्वाला को शांत करके यज्ञ को रोक देते हैं तथा तक्षक नाग और उसके समस्त वंश को इस तरह से बचा लेते हैं। क्योंकि उस दिन शुक्ल पक्ष की पंचमी ही थी, तभी से नाग पंचमी के दिन, सांपों व नागों की पूजा करते हुए कच्चे दूध का छिड़काव करते आ रहे हैं।

लोगों की आस्था है कि हिंगर माता मां दुर्गा का ही रूप है और उनकी पूजा करने से घर में सुख समृद्धि के साथ इलाके में बारिश जरूर होती है। यह मंदिर जिला चंबा की सलूणी तहसील के कांडी गांव से करीब 10 किलोमीटर चढ़ाई चढ़कर पहाड़ी पर स्थित है।

बारिश की देवी हिंगर माता

हिमाचल के जिला चंबा में एक ऐसा मंदिर है, जिसे लोग बारिश की देवी के नाम से भी पूजते हैं। लोगों की आस्था है कि हिंगर माता मां दुर्गा का ही रूप है और उनकी पूजा करने से घर में सुख समृद्धि के साथ इलाके में बारिश जरूर होती है। यह मंदिर जिला चंबा की सलूणी तहसील के कांडी गांव से करीब 10 किलोमीटर चढ़ाई चढ़कर पहाड़ी पर स्थित है। कांडी गांव भलेई पंचायत के नजदीक सियूल नदी के एक छोर पर बसा है। गांव के हिंगर माता मंदिर के संदर्भ में कई लोकमान्यताएं भी हैं और आज भी लोग अपने बुजुर्गों की परंपरा का निर्वहन करते हुए माता हिंगर की पूजा अर्चना पूरे विधि विधान से करते हैं। लोगों का मानना है कि हिंगर माता उनके तमाम दुःख-दर्द दूर करती है और किसी भी शादी समारोह या त्योहार के मौके पर मां की पूजा करना कभी नहीं भूलते। यहां तक कि फसल की कटाई के बाद अनाज का पहला भोग माता के नाम से लगाया जाता है। गांव के लोग बताते हैं कि सामूहिक तौर पर हर साल ज्येष्ठ माह में माता के मंदिर जाकर जातर देते हैं। गांव के लोग हलवा, पूड़ी व मीठा प्रसाद बनाकर झुंड में ढोल-नगारों के साथ माता की जय-जयकार करते हुए मंदिर पहुंचते हैं और विधिवत पूजा-अर्चना करते हैं। इस मौके पर चेले की खेल भी पूजा का हिस्सा होती है। चेले की खेल के दौरान लोग अपनी-अपनी समस्याओं या मन्नतों की पूछ भी लेते हैं। लोगों का कहना है जातर के बाद इलाके में बारिश जरूर होती है और वे इसे देवी की प्रसन्नता के रूप में स्वीकारते हैं।

लोगों ने बताया कि गांव में एक नाग देवता का मंदिर भी है, जो देवदार के वृक्षों से घिरा है। इसके साथ ही गांव के लोग माता शीतला को अपनी कुलदेवी के रूप में स्वीकारते हैं। लोगों द्वारा देवी की विधिवत पूजा-अर्चना की जाती है और विवाह-शादी या अन्य समारोह पर पहला न्योता कुलदेवी को दिया जाता है। गांव में एक मंदिर पीड़ा दूर करने वाली माता का भी है। लोग इसे पीड़ा वाली माता भी कहते हैं। यह गांव में ही एक छोर पर स्थित है। इसकी पूजा शाम के समय की जाती है। इसमें केवल पुरुष ही भाग लेते हैं। माता को कुंगणियां व हलवा-पूड़ी आदि चढ़ाई जाती हैं। लोक मान्यता है कि देवी की अराधना करने से उनकी पीड़ा दूर हो जाती है। गांव के लोग चंबा के मिंजर मेले और मणिमहेश यात्रा में भी भाग लेने जरूर जाते हैं।

कांडी गांव के लोगों का मुख्य व्यवसाय कृषि है और मक्की, गेहूं, पलम, नीबू, खुमानी व आड़ू यहां खूब उगाए जाते हैं। गांव में करीब 70 परिवार रहते हैं और इसकी कुल आबादी 350 के करीब है। गांव में एक उच्च तथा एक प्राथमिक पाठशाला है, जहां गांव के बच्चे शिक्षा ग्रहण करते हैं। इसके साथ ही गांव में एक आयुर्वेदिक अस्पताल भी है।

✍ कपिल मेहरा

संयम, साधना और क्षमताओं को उभारना ही उपासना

आद्य महाशक्ति के दस महाविद्या रूप बतलाये गये हैं। इन रूपों में ही मां दुर्गा के जो अवतार हुए और उन्होंने जिस तरह से असुरों तथा असुरी शक्तियों का नाश किया वह शक्तिस्वरूपा हमारे लिए हमेशा शुभ का संदेश ही लाती है।

वैदिक साहित्य के अनुसार मानवीय काया में नौ द्वार अर्थात नौ इंद्रियां है। अज्ञानतावश दुरुपयोग के कारण उनमें जो अंधकार छा गया है उसे अनुष्ठान करते हुए एक रात्रि में एक एक इंद्रिय के ऊपर विचारना उनमें संयम, साधना तथा सन्निहित क्षमताओं को उभारना ही नवरात्रि की साधना कहलाती है। नवरात्रि पर्व के साथ दुर्गा अवतरण की कथा जुड़ी है। कथा है, जब असुरों द्वारा पराजित हो ब्रह्मा ने देवताओं को संगठित कर संघ शक्ति के रूप में दुर्गा का अवतरण किया, सुरतत्व की स्थापना करने की।

✍ संजीव कुमार आलोक

गंभीर समस्याओं, संकट के समाधान अथवा हिरण्यकश्यप, रावण, कंस जैसे दुष्टों के संहार तथा साधुजनों की रक्षा के लिए विष्णु को अनेक रूपों में अवतार लेना पड़ा तथापि अनेक बार ऐसे अवसर आये जब पराक्रम से काम नहीं चला। विष्णु को मोहनी रूपवती नारी का रूप धारण करना पड़ा। चाहे भस्मासुर वध हो, चाहे समुद्र मंथन से प्राप्त अमृत कलश की असुरों से रक्षा हो, जब-जब असुरों की ओर से गंभीर संकट आया तब-तब महाशक्ति ने अष्टभुजी रूप में महिषासुर का संहार किया। पार्वती के शरीर से प्रकट महाकाली ने राक्षसों का अंत किया। अंततः विश्व का उदार जन्मदात्री, पालन करने वाली मातृ शक्ति के द्वारा ही हुआ। दुष्टों का संहार भी आतंक मुक्त सृष्टि के पालन का अंग है। महाशक्ति को जगजननी प्रतिपादित करते हुए सृष्टि के सृजन, पालन तथा संहार के लिए क्रमश महासरस्वती, महालक्ष्मी तथा महाकाली को आद्य महाशक्ति के तीन रूप इंगित किये गये हैं। यह तीनों रूप ब्रह्मा, विष्णु और महेश से भिन्न हैं। आद्य महाशक्ति के दस महाविद्या रूप बतलाये गये हैं। काली, तारा षोडशी, भुवनेश्वरी, छिन्न मस्ता, घूर्मावती, बगला, मातंगी, भैरवी तथा कमला। इसी प्रकार दुर्गा के नौ रूप शैलपुत्री, ब्रह्वाचारिणी, चंद्रघंटा, कूष्मांडा, स्कंदमाता, कात्यायनी, कालरात्रि, महागौरी और सिद्धिदात्री। यह रूप नवदुर्गा से प्रचलित हैं। पुराणों में महाशक्ति को अनेक नामों से संबोधित किया गया है जैसे योगनिद्रा, महामाया, महानिंद्रा, पराशक्ति, प्रकृति, महासरस्वती, महालक्ष्मी तथा महाकाली। शक्ति की अनन्य साधना से सभी गुण सहज प्राप्त हो जाते हैं। स्वास्थ्य, सुख, सफलता, ज्ञान, संपन्नता देने वाली भगवती महाशक्ति ही है। योगीजन इंद्रियों की अधिष्ठात्री रूप में कुंडलिनी मानकर षटचक्र भेदन द्वारा कुंडलिनी रूपा शक्ति जाग्रत करते हैं जो मूलाधार चक्र में स्थित मानी जाती है, वहीं महाशक्ति विश्व के कण-कण में पुष्प की सुगंधि की भांति व्याप्त है। नवदुर्गा के नौ रूपों की नवरात्रि में उपासना अर्चना व्यक्तिगत तथा समष्टिगत जीवन, समाज में व्याप्त अराजक तत्वों, विघ्न-बाधाओं को नष्ट करने तथा कल्याण एवं शांति हेतु शक्ति संचय करने के लिए नवरात्र की व्यवस्था की गई है।

वैदिक साहित्य के अनुसार मानवीय काया में नौ द्वार अर्थात् नौ इंद्रियां है। अज्ञानतावश दुरुपयोग के कारण उनमें जो अंधकार छा गया है उसे अनुष्ठान करते हुए एक रात्रि में एक-एक इंद्रिय के ऊपर विचारना उनमें संयम, साधना तथा सन्निहित क्षमताओं को उभारना ही नवरात्रि की साधना कहलाती है।

स्मृति

हिमाचली जनता को पहचान दिलाने वाले लोक नायक : डॉ. परमार

✍ डॉ. ओ.पी. शर्मा

कुछ प्रतिभाएं ऐसी भी होती है जिन्हें देश-काल, धर्म, जाति तथा कर्मक्षेत्रों की सीमाओं से बांध कर नहीं रखा जा सकता। डॉ. यशवन्त सिंह परमार भी ऐसी विभूतियों में से एक थे। भारतीय स्वतन्त्रता प्राप्ति, राष्ट्रीय निर्माण, राष्ट्र विकास में डॉ. परमार का विशेष योगदान रहा। ये सच्चे लोक नायक और पहाड़ी लोगों के मसीहा थे। हिमाचल प्रदेश को अस्तित्व में लाने से लेकर इन्हें विशाल हिमाचल और पूर्ण राज्य का दर्जा दिलाने तक के लिए उन्हें सदा याद किया जाता रहेगा।

4 अगस्त, 1906 को चन्हालग गांव सिरमौर रियासत, भण्डारी शिवानन्द सिंह सिरमौर रियास के महाराज के सचिव के घर जन्म हुआ। 17 वर्षों से अधिक समय तक प्रदेश के मुख्यमंत्री तथा 7 वर्षों तक कांग्रेस के अध्यक्ष रहे। सन् 1922 में हाई स्कूल नाहन से दसवीं की परीक्षा पास की। 1926 में क्रिश्चियन कॉलेज़ फॉर मेन लाहौर से बी. ए. (ऑनर्स) की शिक्षा प्राप्त की तत्पश्चात् केनिंग कॉलेज लखनऊ से 1928 में एम.ए. तथा एल.एल.बी. व 1944 में लखनऊ विश्वविद्यालय से 'सोसियो इकानोमिक बैकग्राऊंड ऑफ हिमाचल पोलिएण्डरी' विषय पर पी.एच.डी. की उपाधि प्राप्त की। 1929-30 में थियोसॉफिकल सोसायटी, देहरादून के सदस्य बने तथा 1930 में वकालत आरम्भ की।

1930 से 1937 तक सिरमौर स्टेट के सब जज और मैजिस्ट्रेट प्रथम श्रेणी तथा 1937 से 1941 तक जिला सैशन जज रहे। प्रजामण्डल आन्दोलनकारियों के प्रति संवेदनशीलता दिखाने वाले तथा उन पर दर्ज झूठे मुकद्दमों को खारिज करने के फलस्वरूप प्रशासन की नीयत को देखते हुए डॉ. परमार ने सेवा से त्यागपत्र दे दिया। सन् 1941 से 43 के बीच लाहौर और दिल्ली में निजी कारोबार किया। सन् 1943 से 1946 तक दिल्ली स्थित सिरमौर-ऐसोसिएशन के सचिव तथा सन् 1946-47 में हिमाचल हिल स्टेट कौंसिल के प्रधान बने।

जनवरी 26, 1948 को शिमला के गंज मैदान में सम्पन्न सम्मेलन में डॉ. परमार ने सर्वसम्मति से एक प्रस्ताव पारित करवाया जिसमें राष्ट्रीय नेताओं से अनुरोध किया कि शिमला की पहाड़ी रियासतों को मिलाकर एक पहाड़ी राज्य स्थापित किया जाए। इसी आश्य में 'हिमालय प्रांत' अस्थाई सरकार भी बनाई गई।

18 फरवरी, 1948 के दिन सुकेत के शासक को 48 घण्टों का नोटिस दिया गया कि वह अपना राज्य भारतीय संघ में मिला दे नहीं तो सत्याग्रह आरम्भ कर दिया जाएगा। जब इस नोटिस का कोई उत्तर न मिला, तब हज़ारों सत्याग्रही सुकेत की ओर प्रस्थान कर गए। सत्याग्रहियों के साथ मार्ग में और भी जुड़ते गए। सभी पुलिए चौकियां गिरती गई और तहसील मुख्यालय पर बिना संघर्ष के कब्जा होता गया। छः दिन के भीतर सुकेत राज्य का तीन चौथाई भाग अस्थाई सरकार के अधीन हो गया। इस सत्याग्रह के समन्वयक डॉ. परमार थे।

15 अप्रैल, 1948 के दिन 30 पहाड़ी रियासतों चम्बा, मण्डी, सुकेत, बुशैहर, खनेटी, देलठ, क्योंथल, कोटी, ठियोग, मधान, घूण्ड, रतेश, बाघल, जुब्बल, रावीं, बघाट, कुमारसैन, भज्जी, महलोग, बलसन, धामी, कुठाड़, कुनिहार, मांगल, बेज्जा, बरकोटी, थरोच, शांगरी और सिरमौर को एक नया रूप देकर एक नया राज्य हिमाचल प्रदेश का गठन किया गया।

डॉ. परमार सन् 1948 से 1952 तक हिमाचल प्रदेश के चीफ कमिशनर एडवाइजरी के सदस्य एवं हिमाचल प्रदेश जुडिशियल कमिशनर कोर्ट में एडवोकेट के रूप में कार्यरत रहे। सन् 1948 से 1950 तथा 1960 से 1964 तक हिमाचल प्रदेश कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष, भारत सरकार प्रैस वर्करज यूनियन के सदस्य, हिमाचल प्रदेश गांधी नेशनल मैमोरियल फंड के सचिव तथा 1952 तक भारतीय संविधान सभा के सदस्य रहे।

सन् 1952 में इस्तंबुल (तुर्की) में हुई हंटर पार्लियामेंट्री कांफ्रेंस में इण्डियन डेलिगेशन का नेतृत्व किया। 24 मार्च, 1952 को हिमाचल प्रदेश में पहले चुनाव के फलस्वरूप हिमाचल प्रदेश विधान सभा का गठन हुआ और डॉ. परमार के नेतृत्व में पहली लोकप्रिय सरकार बनी। पहली जुलाई, 1954 को पार्ट 'सी' राज्य बिलासपुर को हिमाचल प्रदेश में मिला दिया गया। इस प्रकार राज्य के पांच जिले मण्डी, चम्बा, महासु, बिलासपुर व सिरमौर बने। सन् 1952 से 1956 तक हिमाचल प्रदेश के मुख्यमंत्री रहे। सन् 1957 में भारतीय संसद के सदस्य चुने गए तथा इसी अवधि में इण्डिया कांग्रेस वर्कर्ज ट्रेनिंग कैम्प के डायरेक्टर रहे। पहली नवम्बर, 1956 को लोकतंत्र के पहिए हिमाचल प्रदेश में पीछे की ओर घूम गए। डॉ. परमार के सामने दो ही विकल्प रह गए थे। राज्य पुनर्गठन आयोग के बहुमत की सिफारिया पर हिमाचल प्रदेश को पंजाब में मिला दिया जाए या अलग इकाई के रूप में रखने के लिए लोकतन्त्रीय ढांचे की कुर्बानी दी जाए। डॉ. परमार ने कहा 'हिमाचल प्रदेश को बचाने के लिए कोई भी कुर्बानी बड़ी नहीं है'। उन्होनें सरकार का त्यागपत्र देकर प्रदेश का अलग अस्तित्व बचाए रखा। पहली जुलाई, 1963 को लोकतन्त्रीय ढांचे के लिए दीर्घकालीन शांतिमय संघर्ष के बाद भारत सरकार इस बात पर सहमत हो गई कि हिमाचल प्रदेश की जनता को उनके जन प्रतिनिधियों द्वारा प्रशासन चलाने की जिम्मेदारी सौंप दी जाए। पहली जुलाई, 1963 के दिन ही डॉ. परमार के नेतृत्व में पुनः लोकप्रिय सरकार ने शपथ ग्रहण की। क्षेत्रीय परिषद् के स्थान पर विधान सभा बनाई गई। डॉ. परमार ने 1965 में इंडो जर्मन कृषि कार्यक्रम के संबंध में पश्चिमी जर्मनी जाने वाले डेलिगेश्न के नेतृत्व किया।

डॉ. परमार ने पहाड़ी लोगों की एक अलग पहचान का सपना देखा। डॉ. परमार अपनी दृष्टि में पूर्ण रूप से स्पष्ट थे और वर्ष 1971 में उनके सतत प्रयासों और तत्कालीन केंद्रीय नेतृत्व के समक्ष पहाड़ी राज्य का स्पष्ट लेखा प्रस्तुत करने के कारण ही हिमाचल को पूर्ण राज्य का दर्जा प्राप्त हुआ। डॉ. परमार पहाड़ी संस्कृति के संरक्षण के पुरोधा थे और स्वयं पहाड़ी वेशभूषा में रहना पसंद करते थे।

पहली नवम्बर, 1966 को पंजाब के पहाड़ी क्षेत्र कांगड़ा, कुल्लू, लाहौल स्पीति जिला, शिमला, नालागढ़ और ऊना आदि क्षेत्रों का हिमाचल प्रदेश में विलय कर दिया गया। इससे प्रदेश की जनसंख्या व क्षेत्रफल पहले से दुगुने हो गए। 14 जनवरी, 1969 को इनकी धर्मपत्नी चन्द्रावती का 56 वर्ष की आयु में हृदयगति रुक जाने से देहान्त हो गया। सन् 1971 में इन्होंने अमेरिका, इंगलैण्ड, कनाडा, जापान, इटली, सिंगापुर, मलेशिया, लिबनान तथा ग्रीस आदि देशों का दौरा किया। 25 जनवरी, 1971 को हिमाचल प्रदेश को पूर्ण राज्य का दर्जा प्रदान किया गया। यह डॉ. परमार के प्रयास और मेल-मिलाप से ही संभव हो सका और वे पूर्ण राज्य के प्रथम मुत्रयमंत्री बने और 1977 तक इसी पद पर बने रहे। 24 जनवरी, 1977 को उन्होंने अचानक त्यागपत्र दे दिया। तत्कालीन प्रधानमंत्री श्रीमती इन्दिरा गांधी के आग्रह के बावजूद त्यागपत्र वापिस नहीं लिया। लोकसभा चुनाव में उत्तर प्रदेश के एक निजी ट्रक ने उनकी कार को टक्कर मार दी जिसमें उन्हें गहरी चोटें आई। डॉ. परमार संस्कृति एवं सभ्यता का प्रतीक थे। बहुआयामी व्यक्तित्त्व के धनी डॉ. परमार ने पहाड़ी लोगों के अधिकारों के लिए संघर्ष किया और आज जो कुछ भी हिमाचल ने प्राप्त किया है, वह डॉ. परमार के दिखाए हुए पथ पर चल कर ही संभव हुआ है। हिमाचल की एक अलग राजनीतिक पहचान सुनिश्चित बनाने के लिए प्रदेशवासी सदैव प्रदेश के पथम मुख्यमंत्री के ऋणी रहेंगे।

डॉ. परमार ने पहाड़ी लोगों की एक अलग पहचान का सपना देखा। डॉ. परमार अपनी दृष्टि में पूर्ण रूप से स्पष्ट थे और वर्ष 1971 में उनके सतत प्रयासों और तत्कालीन केंद्रीय नेतृत्व के समक्ष पहाड़ी राज्य का स्पष्ट लेखा प्रस्तुत करने के कारण ही हिमाचल को पूर्ण राज्य का दर्जा प्राप्त हुआ। डॉ. परमार पहाड़ी संस्कृति के संरक्षण के पुरोधा थे और स्वयं पहाड़ी वेशभूषा में रहना पसंद करते थे। उन्हें पहाड़ी व्यंजनों से विशेष लगाव था और वह पहाड़ी वस्तुकला को सदैव बढ़ावा देते थे।

प्रदेश के विकास विशेषकर सड़क निर्माण, बागबानी तथा कृषि के विकास में डॉ. परमार का विशिष्ट योगदान था। डॉ. परमार का यह मानना था कि सड़क अधोसंरचना के विस्तार से ही विकास संभव है तथा पहाड़ी राज्यों के विकास की आवश्यकताओं को देश के मैदानी क्षेत्रों के बराबर नहीं रखा जा सकता क्योंकि पहाड़ी राज्यों की भौगोलिक संरचना दुरूह होती है। हिमाचल आज देश के बड़े राज्यों की तुलना में विकास की दिशा में अग्रणी बनकर उभरा है तथा विकास के अनेक मील पत्थर स्थापित किए हैं। सभी को आग्रह किया कि वह प्रदेश के वैभवशाली इतिहास का संरक्षण सुनिश्चित बनाएं और प्रदेश के नेताओं द्वारा दिए गए योगदान को सदैव स्मरण रखें ताकि आने वाली पीढ़ियों को इससे प्रेरणा मिलती रहे। डॉ. परमार की दूरदृष्टि के कारण ही हिमाचल देश के विकसित राज्यों की श्रेणी में खड़ा है। हिमाचल ने विकास के क्षेत्र में अनेक मील पत्थर स्थापित किए है। डॉ. परमार उच्च आदर्श के धनी थे।

संस्मरण

यादों के गलियारे में सोलन

✍ रत्न चंद निर्झर

सोलन शहर से यूं तो मेरा नाता अस्सी के दशक से जुड़ा था, पर अक्तूबर 1994 से लेकर अप्रैल 2006 तक करीबन 15 साल तक यह शहर मेरे अंग संग जुड़ा रहा। जून 1994 में शादी होने के बाद मेरी घर गृहस्थी का डेरा हरी भवन के उस दो कमरों में जमा रहा। यहीं पर साल 1996 में मेरी बेटी दीपशिखा पैदा हुई और उस का बचपन हरी भवन मोहल्ले के पड़ोसियों की गोद में बीता। सबकी लाडली बेटी दीपशिखा जिसे प्यार से दीपू, पुकारा जाता था, यहीं पर मेरे दोनों बेटों राहुल और रोहित जन्मे पले। इस किराए के मकान में रहते हुए मुझे, विजय पूरी, राजेश पूरी उनके पापा, मितल, गुप्ता, भंडारी, स्व. सुखदेव, हरी सिंह, विनोद शर्मा, मदन, कीर्ति मैडम, रत्न शर्मा जैसे पड़ोसियों का भरपूर सानिध्य मिला।

अभी भी मेरी यादों के गली में हरी भवन का वह खुला आंगन, बावड़ी से पानी ढोना, मंडरा रहा है। सोलन शहर में मेरे मित्र मंडली जिसमें साहित्यकार, कलाकार और पत्रकार शुमार रहे। उनके चेहरे बार-बार मेरे जहन में मंडरा रहे हैं। आदरणीय स्व. पंडित संत राम शर्मा, छायाकार ज्ञान बड़ोला, डॉक्टर पी. सी. शर्मा, रमेश दत्त शर्मा, सोहन लाल गौतम, चक्रधर उप्रेती, अतुल गोयल, अमर सिंह फिगार, एच के एल मस्त, जो हमसे बिछुड़ गए, उन्हें कैसे भुला पाऊंगा। इनसे जो प्यार मुहब्बत मुझे मिला वह हमेशा जिंदा रहेगा। शाम के समय दफ्तर से छुट्टी होने के बाद सोलन माल रोड के चक्कर लगाना फिर किसी मिठाई या चाय वाले की दुकान पर चाय-पान के साथ -साथ गप्पें मारना एक नियमित दिनचर्या थी। रविवार की सुबह बिना नागा पंडित संत राम जी टहलते हुए पुराने डी.सी. ऑफिस के रास्ते आते और पंडित मंगत राम शर्मा जी न्यूज एजेंट की दुकान पर मैं उनका इंतजार कर रहा होता।

अखबारों का पुलिंदा उठाते फिर प्रेमजी की दुकान पर चाय पीते या फिर बाण मुहल्ले में जाकर भाई ज्ञान बड़ोला जी के कमरे की कुंडी खटखटाते। उनीदी आंखों को मलते हुए उनका जाग कर कुंडी खोलने और यमदूतों की तरह दरवाजे पर हमें खड़े पाने का नजारा आज भी मेरी आंखों में कौंध रहा है। हम कहते ज्ञान भाई चाय पिलाओ वे कहते कभी चीनी नहीं या फिर दूध नहीं कह कर अपनी विवशता जाहिर करते। पर हम कहां टलने वाले, मैं तुरंत भाग कर पास वाली गली से दूध, चीनी और चाय पत्ती जो भी नहीं होता ले आता। कई बार ज्ञान भाई से आग्रह करके उनका चर्चित गीत सुनते 'मधु की कुछ बूंदे मांगी थी। विष का पारावार मिला।' ये दोनों हस्तियां सोलन शहर की शान थी। पंडित संत

राम शर्मा आकाशवाणी शिमला के सोलन के संवाददाता, इंडियन एक्सप्रेस के वरिष्ठ पत्रकार के साथ-साथ एक उच्चकोटि के साहित्यकार थे। उनके साथ मेरा दोस्ताना साथ रहा। उम्र में मुझ से कई साल बड़े थे, फिर भी हमारी आपस में चुहलबाजी और प्यारी सी नोकझोंक चलती रहती। कई बार वे मुझे अपने साथ सोलन और बाहर अपने जान-पहचान वालों के घर ब्याह-शादी या शोक संतप्त परिवार जनों के यहां ले जाते और मेरे परिचय का दायरा बढ़ाते। आदरणीय शर्मा जी एक जिंदादिल इन्सान थे। जितने बड़े लिखारी उससे बढ़कर किताबी कीड़े, सुलझे हुए श्रोता और पाठक। शहर में कोई भी साहित्यिक, सांस्कृतिक या अन्य कार्यक्रम होते, पंडित जी की उपस्थिति हमेशा बनी रहती। सोलन शहर का इतिहास उनमें समाया हुए था। कई किताबों के रचनाकार थे। हमेशा उनकी साहित्य, संस्कृति और कला के प्रति सटीक टिप्पणी होती थी। उनके ही सहयोग और मार्ग दर्शन में मैंने सर्जक संस्था के बैनर तले चार पांच सफल साहित्यिक आयोजन, सोलन रेलवे स्टेशन, कंडाघाट और पुराने जिलाधीश कार्यालय के सभागार, चिल्ड्रन पार्क में करवाए। अध्यक्षता उन्हीं से करवाता था। सोलन से बाहर नौणी, राजगढ़ में आयोजित साहित्यिक गोष्ठी में उनका सानिध्य बना रहा। पंडित जी के साथ असंख्य यादें जुड़ी हुई है। एक बार मैं पदोन्नति पर जोगिंदर नगर गया तो उन्होंने बाकायदा जिला पत्रकार संघ सोलन की ओर से विदाई पार्टी दी। जब वह मुझे अक्सर सोलन शहर में मंडराते हुए देखते तो कहते पार्टी खा कर भी अभी यहीं घूम रहे हो।

सोलन शहर को अभिनय और नृत्य के क्षेत्र में देश के मानचित्र में लाने के लिए फिल फोटो संस्था का सफल प्रयास है और इस शहर को सांस्कृतिक नगरी की पहचान पूरे देश भर में बनी हुई है।

साल 2006 में मैं जब स्थाई रूप से इस शहर को अलविदा कर बिलासपुर आने लगा तो उन्होंने कहा था, सोलन शहर तुझ से कभी नहीं छूटेगा और हुआ भी वही। साल में चार -पांच चक्कर सोलन के लग जाते। उनके साथ मेरा यह अमिट रिश्ता साल 2017 तक उनके निधन से पूर्व तक जुड़ा रहा। मुझे याद है उनके इस संसार से अलविदा होने से एक माह पहले मैं रोहड़ू से शिमला आया था और मैंने सोलन आने की खबर उन्हें पहले ही दे रखी थी और वे मेरा इंतजार कर रहे थे। हुआ यूं कि इस बीच मेरा अचानक राजगढ़ लोक निर्माण विभाग के पुराने सहकर्मी स्व. राज कुमार सक्सेना शिमला में मिल गए और वे सोलन से मुझे सीधे राजगढ़ ले गए। वापसी में दूसरे रास्ते से मैं नाहन निकल गया और पंडितजी से मिलना न हो पाया। फोन पर मेरी खूब खिंचाई करते हुए उन्होंने कहा था यह क्या बात हुई, हमसे मिलने का वायदा किया और चोरों की तरह इस शहर को बाई पास करते हुए फरार हो गए। ठीक एक महीने बाद उनके दुःखद निधन की खबर सुनने को मिली। मुझे इस बात का पूरी उम्र मलाल रहेगा कि वादा करके भी उनसे आखिरी बार भी न मिल पाया और वे चुपके से अपना दामन छुड़ा कर चल दिए।

सोलन अब भी जाता हूं तो मेरी बेबस निगाहें पंडित संत राम जी, भाई ज्ञान बड़ोला, डॉक्टर पी.सी. शर्मा, रमेश दत्त शर्मा, चक्र धर उप्रेती, अतुल गोयल, अमर सिंह फिगार इत्यादि जैसे हमनवाओं को ढूंढती रहती है। जोकि कहीं अनंत आकाश में विचर रही है। इसी शहर में मुझे पहली बार फिल फोट संस्था के सालाना अखिल भारतीय नृत्य और नाटक उत्सव में शिमला के श्री सुदर्शन गौड़ से मिलने का अवसर मिला हिमाचल के लोकायुक्त टाटा चारी के साथ। जितने साल सोलन में रहा मुझे उस संस्था के इस उत्सव के माध्यम से देश के भिन्न -भिन्न राज्यों की सांस्कृतिक झलक के साथ-साथ उत्कृष्ट नाटकों के अभिनय को देखने का मौका मिला। वर्ष 2018 में मुरारी मार्किट के सभागार में मुझे आखिरी बार इस उत्सव को देखने का सौभाग्य मिला था। सोलन शहर को अभिनय और नृत्य के क्षेत्र में देश के मानचित्र में लाने के लिए इस संस्था का यह सफल प्रयास है और इस शहर को सांस्कृतिक नगरी की पहचान पूरे देश भर में बनी हुई है।

समीक्षा

आंचलिक परिवेश में गढ़ी कहानियों का संग्रह 'कपास'

हाल ही में लेखक डॉ. कुबेर दत्त कौशिक का दस कहानियों का संग्रह 'कपास' पढ़ने को मिला। इनके अभी तक लगभग एक उपन्यास (दस्तखत) व एक दर्जन कहानी संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं। कपास किताब की सभी कहानियों की पृष्ठभूमि आंचलिक परिवेश में गढ़ी गई है। डॉ. कौशिक की कहानियां आज के शहरीकरण के युग में विशुद्ध गांव के आंचल में पलती, किलकती, बिलखती, इठलाती अपने परिवेश की गाथा बयां करती हुई दिखायी पड़ती हैं।

इस संग्रह की पहली ही कहानी का नाम 'कपास' है, जोकि संभवतः किताब के नामकरण का भी आधार बनी। इसकी शुरुआत एक यूनिवर्सिटी के हॉस्टल से होती है, जिसमें ग्रामीण परिवेश का एक लड़का चंद्र प्रकाश तिवारी रहता है। उसकी एक महिला मित्र है विलियम रॉबर्ट। विलियम, चंद्र प्रकाश के कपड़े को देखती थी और उनके विषय मे प्रश्न पूछा करती थी, ऐसे ही एक बार वो उससे 'खेस' के विषय में पूछती है तब चंद्र प्रकाश उसे बताता है, 'खेस मोटे सूत का वस्त्र होता है, जिसे प्रायः गांव के लोग सर्दी के मौसम में ओढ़ते है।' विलियम उससे सूत इत्यादि के विषय मे भी पूछती है। सम्पूर्ण कहानी कपास की फसल अर्थात् बाडी बोने से लेकर खेस तैयार होने तक की कथा है।

'पश्चाताप' कहानी सही-गलत के द्वंद्व के मध्य फंसे पश्चाताप की कहानी है। उसके तीमारदारों ने उसका कई जगहों पर भरपूर इलाज कराया और अंततः उसे एक नर्सिंग होम में भर्ती कराकर छोड़ देते हैं। इस नर्सिंग होम को डॉ. मनोज मिश्रा और उनके सहायक श्रीकांत देखते है। श्रीकांत उस मरीज को पीड़ा में मृत्यु का इंतजार करते देखकर दुखी होते है। वे चाहते है उस मरीज को मुक्ति दे दी जाए, पर डॉ मनोज मिश्रा इस सोच को हत्या और पाप की संज्ञा देते हैं। इस द्वंद की स्थिति में श्रीकांत डॉ. मनोज को एक लड़के के पश्चाताप की कहानी सुनाते है। श्रीकांत का मानना है कि, 'पश्चाताप एक ऐसी औषधि है ऐसा उपाय है जो पाप के रोगों का समाप्त कर देती है।' इसीलिए अंततः वो उस मरीज को उसकी पीड़ा से मुक्त कर देते हैं। इस कहानी द्वारा लेखक के दार्शनिक दृष्टिकोण का भान होता है।'परछाइयां' भूले-बिछड़े साथी से बरसों बाद मिलने की कहानी है। इसमें सत्तर वर्ष की 'दुर्गी' अपना भरापूरा परिवार होने पर फिर भी नितांत अकेली है।

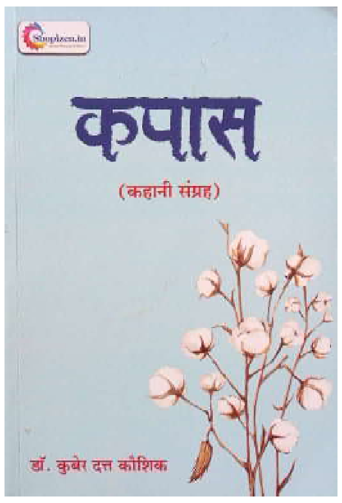

'अर्थी' कहानी का मुख्यपात्र बिरजपाल, जोकि अनपढ और मजदूर वर्ग का व्यक्ति है। वह इकलौता ऐसा व्यक्ति है जो अर्थी बांधने का कार्य करता है। इसीलिए हर जाति-वर्ग के लोग, उसके गांव के साथ आस-पास के गांव के लोग भी अर्थी बंधवाने के लिए सभी उसी पर निर्भर रहते हैं। गांव में डेंगू बुखार का प्रकोप होने से जब पहले उसकी मां को, फिर उसकी पत्नी को और फिर बिरजपाल को डेंगू हो जाता है तब भी बिरजपाल अपने परिवार से पहले दूसरों की मदद करता है, लेकिन जब उसकी मां और पत्नी का देहांत होता है तो कोई उसको पूछने तक नही आता। वह दोनों की अर्थी रेहड़े पर ले जाता है। बाद में उसकी खुद की मृत्यु डेंगू से सही समय पर इलाज न मिलने के कारण हो जाती है। अंत मे कहानी इस प्रश्न के साथ खत्म होती है कि अर्थी बांधने वाला बिरजपाल ही नही रहा तो अब उसकी अर्थी कौन बांधेगा ?

✍ सोनल मंजू श्री ओमर

'मास्क' एक गांव की कहानी है जहां की औरतें एकजुट होकर जत्थे में जंगल जाती है, वहां से अपनी गाय-भैसों के लिए चारा काट के लाती हैं। अचानक एक दिन लॉकडाउन लग जाता है और सभी को घर पर ही सीमित रहना पड़ता है। इन गांववालो को नही पता कि कोरोना क्या है, लॉकडाउन क्या है, मास्क क्यों लगाना है, दूर क्यों रहना है, सैनिटाइजर क्यो उपयोग करना है ? इस कहानी के माध्यम से लेखक ने उसी वर्ग को दर्शाया है कि निर्देश होने के बावजूद अपना व अपने परिवार का पेट पालने के लिए उन्हें अपने घरों से निकलकर अपने कार्य करने होते थे ऐसे लोगो को कोरोना भी नहीं डरा सकता।

'भिखारी' कहानी मुझे कुछ अधूरी और रहस्यमयी लगी। इस कहानी का केंद्रबिंदु सूर्यकांत, किसी महिला को ढूंढने गांव के गली, मोहल्ले, बाजार, हाट, मंदिर सब जगह जाता है, लेकिन किसी को बता नही पाता कि वो किसे ढूंढ रहा क्योंकि उसे खुद भी नही पता है सिवाय इसके कि उस महिला के चेहरे पर चेचक के दाग है। शायद बहुत समय से भटकने के कारण ही उसकी दीनदशा भिखारी जैसी दिखती है। कहानी के अंत तक यह रहस्य, रहस्य ही रह जाता है कि सूर्यकांत कौन है, वो किस महिला को ढूंढ रहा है और क्यों ढूंढ रहा है ?

'अतिथि' कहानी में एक नरेंद्र है जो बहुत संस्कारवान है और त्यागी समाज का एक प्रतिष्ठित व्यक्ति है। एक रात उसके घर पर एक अतिथि अशोक त्यागी आते है। नरेंद्र और उनकी पत्नी चार-पांच दिनों तक अपनी क्षमता से कई अधिक उनका खूब आतिथ्य करते है। 'मदिरा' एक ग्रामीण दंपति की कहानी है।

राजपाल शराब का लती है, पत्नी के मना करने के बाद भी वो शराब पीने का कोई-न-कोई बहाना खोज लेता। अंततः किरणो समझ जाती है कि राजपाल शराब नही छोड़ पाएगा इसीलिए वह खुद बाजार से पांच-छः शराब की बोतल खरीद लाती है ताकि राजपाल घर पर ही पिए ताकि उस पर कोई अंगुली न उठा सके।

राजपाल किरणो की यह मंशा जान जाता है तो संकल्प लेता है कि अब वो कभी मदिरा को छूएगा भी नही। लेखक ने किरणो के माध्यम से मदिरापान को गलत न मानकर समाजिक रूप से पीने को गलत माना है।

'मुआवजा' दो भाइयों बलजीत और राजबीर की कहानी है। दोनों के पास पुश्तैनी पांच-पांच बीघा जमीन है जोकि सरकार द्वारा रेलवे कॉरिडोर के लिए अलॉट कर ली जाती है, जिसके बदले दोनों को सरकार की तरफ से एक-एक करोड़ का मुआवजा मिलता है।

इतना पैसा पाकर दोनों वैभव विलासिता में डूबकर धीरे-धीरे अपनी सारी संपत्ति खर्च कर देते हैं। यह कहानी हमे बहुत बड़ी सीख देती है कि यदि हमारे पास ज्यादा पैसा आ जाए तो उसे विलासिता में नष्ट नही कर देना चाहिए अपितु उसे सही जगह पर निवेश करना चाहिए। और पैसा कितना भी हो जाए अपना कर्म करना बंद नही करना चाहिए जैसे राजबीर और बलजीत ने काम करना ही बंद कर दिया, क्योंकि पैसा कितना भी हो यदि उसे उपयोग करते ही रहेंगे तो एक दिन समाप्त हो ही जाएगा।

संग्रह की अंतिम कहानी 'सिला' है। 'गेंहू की फसल खेत में से कट जाने के बाद जब कुछ बिखरी पड़ी गेंहू की बालियां खेत की धरती के ऊपर से चुनी जाती है उसे सिला चुगना कहते है।' पंडित जगन्नाथ कौशिक के खेत पर गेंहू की फसल कटने के उपरांत निचली जाति की कुछ औरतें सिला चुगने का काम कर रहीं हैं। सिला चुगने वाली महिलाओं को सिलयारी कहा जाता है। इस सिला द्वारा ही ये महिलाएं कुछ दिनों तक अपने परिवार के लिए रोटी का प्रबंध करती हैं।

पंडित जगन्नाथ कौशिक एक उदार व दार्शनिक स्वभाव के व्यक्ति है, वो सिला को परमात्मा का उपहार मानकर इसपर सिलयरियो का अधिकार मानते हैं। वो इन महिलाओं को 'बहुरानी' कह के सम्बोधित करते हैं और उन्हें न सिर्फ सिला चुगने देते है बल्कि भयंकर धूप में उनके लिए पानी और गुड़ की व्यवस्था भी करते है और अंत मे सभी महिलाओं को अपनी फसल से भी चार-चार बंडल गेंहू के देते हैं। इस कहानी से हमें सिला के विषय मे तो पता चलता ही है साथ यह भी ज्ञात होता है कि एक मालिक का एक दानदाता का उससे निचले तबके के लोगों के प्रति व्यवहार कैसा होना चाहिए। इस संग्रह की सभी प्रत्येक कहानी एक से बढ़कर एक उम्दा विषय पर है। लेकिन लेखक का एक ही चीज को कहानी में बार-बार बतलाना, ये पुनरावृत्ति पाठक मन को खटकती है। इसपर यदि लेखक ध्यान देंगे तो कहानियां पाठकों पर और गहरी छाप छोड़ने में सफल होंगी।

पुस्तक का नाम - कपास
लेखक - डॉ. कुबेर दत्त कौशिक
प्रकाशक - शॉपिज़ेन डॉट इन
मूल्य - 489/- रुपये

कविता

प्रेम शाश्वत

पहाड़ के शिखरों पर सुस्ताते धूप के
गोल तिकोन टुकड़ों को बादलों के साथ
आंख-मिचौली का खेल हार जाने दो
तपन की दु:ख भरी दास्तान के स्वेद
कणों को तनिक बाहर आ जाने दो
सूर्य की दिप-दिपाती आंखों में बड़ी देर से
थमे सैलाब को उमड़ जाने दो
झरनों के होंठों से चुप्पी का हिम पिघलाकर
जरा नदी के वेग में गुम हो जाने दो
प्रवासी बेड़ियां तोड़ आए
पंछियों को नील नभ में खुलकर
शोर मचाने दो
बादलों की धूप से बढ़ रही हैं
नजदीकियां
इस अधीर मित्रता को
पवित्रता में बदल जाने दो
धूप बादलों की
ओट हो जाए और
मिट्टी की दैहिक गंध महकने लगे तो
लम्बी खामोश शाम को
झमा-झम बरसात में अकेले ही नहाने दो
दोनों का प्रेम गहरा है जमकर बरसेगा ही
भूखी उदास चिड़िया के लिए
दाना उगेगा और गेहूं की बलियों में
भर आएगा दूधिया रस
धूप के साथ
प्रेम के ऐसे अनेक शाश्वत
चिह्न छोड़ आएंगे बादल धरा पर।

✍ रमना अग्निहोत्री

सामान्य ज्ञान

ओलम्पिक खेल क्या हैं ?

ओलम्पिक खेल अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर आयोजित होने वाली बहु-खेल प्रतियोगिता है, जिसमें विश्व भर से विभिन्न देशों के खिलाड़ी प्रतिस्पर्धा करते है। यह खेल प्राचीन यूनान में शुरू हुए थे। ओलम्पिक धावकों का प्रमुख खेल उत्सव था। सन् 1896 में यूनान में इसे आधुनिक रूप में प्रस्तुत किया गया। ओलम्पिक के तीन प्रकार है :- ग्रीष्मकालीन ओलम्पिक, शीतकालीन ओलम्पिक तथा पैरालम्पिक। इन खेलों का उद्देश्य शांति, सतत विकास तथा सुरक्षित खेलों को बढ़ावा देना है। इस बार फ्रांस के पेरिस में ओलम्पिक खेल आयोजित किए जा रहे हैं।

1. हिमाचल प्रदेश के किस जिला को पर्यटन राजधानी के रूप में विकसित किया जा रहा है ?
2. ऊना जिला के किस स्थान पर श्री द्रौण शिव मंदिर स्थित है ?
3. स्पार्क अवार्ड्स 2023-24 के तहत हिमाचल प्रदेश को उत्तर पूर्वी क्षेत्र और पहाड़ी राज्यों की श्रेणी में समग्र प्रदर्शन के लिए कौन सा स्थान मिला है ?
4. इस वर्ष महिला क्रिकेट टीम में स्थान बनाकर अंतर्राष्ट्रीय पदार्पण करने वाली हिमाचली मूल की खिलाड़ी का नाम क्या है ?
5. वैदिक ऋषि वशिष्ठ का आश्रम कुल्लू जिला के किस स्थान में था ?
6. पेरिस ओलम्पिक 2024 में भारत के लिए पहला पदक अर्जित करने वाली खिलाड़ी का नाम क्या है ?
7. वूमन ऑफर अवॉर्ड 2024 में लाइफटाइम अजीवमेंट पुरस्कार विजेता का नाम क्या है ?
8. पॉण्डिचेरी के राजकीय फूल का नाम क्या है ?
9. असम के नवनियुक्त राज्यपाल का नाम क्या है ?
10. जैविक उत्पादों के लिए भारत-ताइवान पारस्परिक मान्यता समझौता कब लागू हुआ ?
11. भारत की सबसे तेज चलने वाली ट्रेन का नाम क्या है ?
12. बादामी गुफा मंदिर भारत के किस राज्य में स्थित है ?
13. भारतीय रिजर्व बैंक की स्थापना की कौन सी वर्षगांठ 2024 में मनाई गई ?
14. भारत में जी.एस.टी. दिवस किस दिन मनाया जाता है ?
15. डब्ल्यू एफओ द्वारा स्वास्थ्य संवर्धन के लिए वर्ष 2024 में नेल्सन मंडेला पुरस्कार भारत के किस संस्थान ने प्राप्त किया ?

प्रस्तुति : लुभित सिंह

उत्तर- 1. कांगड़ा 2. शिवबाड़ी (गगरेट) 3. प्रथम 4. तनुजा कंवर 5. मनाली, 6. मनु भाकर 7.मृदुला गर्ग 8. जंगल की आग 9. लक्ष्मण प्रसाद आचार्य, 10. 8 जुलाई, 2024, 11. वंदे भारत 12. कर्नाटक13. 90वीं 14. एक जुलाई 15. राष्ट्रीय मानसिक जांच एवं तांत्रिका विज्ञान संस्थान, बेंगलुरु

साहित्य आकाश के सितारे 'गुलेरी' का जयंती समारोह आयोजित

साहित्यिक रपट

✍सुनिता भारद्वाज

प्रथम विश्व युद्ध की पृष्ठभूमि पर लिखी गई और वर्ष 1915 में प्रकाश में आई अपनी कुल गिनती की तीसरी और अद्भुत प्रेम कहानी 'उसने कहा था' से विश्व के साहित्य आकाश पर चमकते सितारे के रूप में उभरे पंडित चन्द्रधर शर्मा गुलेरी की जयंती सात जुलाई होती है। चूंकि सात जुलाई को भाषा एवं संस्कृति विभाग का राज्य स्तरीय आयोजन रहता है, अतः भाषा विभाग द्वारा जिला स्तर पर इस सिलसिले के आयोजन एक-दो दिन पहले या बाद में आयोजित किए जाते रहे हैं।

इसी कड़ी में जिला सिरमौर का जिला स्तरीय गुलेरी जयंती समारोह दस जुलाई को डाइट नाहन में आयोजित किया। कार्यक्रम की अध्यक्षता जाने माने लेखक अनन्त आलोक ने की।

द्वीप प्रज्वलन से शुरु हुए कार्यक्रम को मुख्य अथिति के सम्बोधन ने गति दी। डाइट में हिन्दी के प्रवक्ता और कवि डॉ. आईडी राही ने कार्यक्रम का संचालन इस तरह किया कि श्रोता और नवोदित कवियों के रूप में उपस्थित प्रशिक्षु अध्यापक आनंदित और निहाल हो उठे। कवि सम्मेलन का आगाज रामकुमार सैनी ने किया, जो रंगमंच से भी जुड़े रहे हैं। हास्य कविता 'दुकान पर नया हेल्पर आया' के माध्यम से उन्होंने आज के समय को बड़ी ही खूबसूरती से हल्के-फुल्के अंदाज में पेश किया और श्रोताओं को हंसने के साथ-साथ, सोचने पर मजबूर किया। गौरव मेहता ने कुछ गंभीर आश आरों के बाद पिता पर एक नज़्म सुनाई जिससे श्रोताओं के आंसू छलक आए। अनुज ने 'मेरे अदब को देखकर हैरान होते हैं लोग' कवि चिरानंद ने 'माता ने की बुनाई' सुन्दर कविता सुनाई। शायरी में दखल रखने वाले उम्दा युवा गजलगो जावेद उल्फत ने बहुत सुन्दर गजल सुनाई एक बानगी देखिये 'तआलुक जोड़कर रखने में ये ही मसअला है वहीं पर जोड़ लगता है कि जो टूटा हुआ है।' सिरमौर के मशहूर गजलगो व माहिया में खास पहचान बनाने वाले शायर नासिर यूसुफजई ने गज़ल और कुछ महिये पेश गाकर लोगों को मंत्रमुग्ध कर दिया। 'यार हैं मतलब के वो देंगे ....'।

भुवन जोशी एक ऐसी शख्सियत जिनको कितने ही लोगों की गज़लों के शेर, श्लोक, दोहे, कविता, कहानियां कंठस्थ याद हैं ने 'देख रेशम का शालू भड़क उठे ज़ज़्बात' कविता सुनाकर मन को मोह लिया। रश्मि कौशल जी ने प्रकृति पर, आई डी राही जी ने 'खुद की खुद से जंग है' कविता सुनाई। डी एल एड प्रशिक्षुओं ने भी कविता के क्षेत्र मे अंकुरित हो रही प्रतिभाओं का परिचय दिया। इन पंक्तियों की लेखिका ने भी एक व्यंग्य रचना गाकर सुनाई। पत्रकार पंकज तन्हा ने भी राजनीति को लेकर एक व्यंग्य सुनाया। दीपचंद कौशल बहुत सुन्दर गीत लिखते और सुरीली आवाज में सुन्दर गीत गाते हैं उन्होंने सुन्दर गीत से श्रोताओं को झूमने पर मजबूर कर दिया। लायकराम भारद्वाज जी ने संस्कृत में नशे की लत पर श्लोक सुनाये। कहानी लेखन में पहचान बना चुकी विजय रानी बंसल जी ने 'धूप में नंगे पांव चलना अच्छा (शेष पृष्ठ नौ पर)

बाल कहानी

गांव की तस्वीर

बहुत समय पहले की बात है एक गांव में रुलदू नाम का एक जमींदार रहता था, उसके परिवार में उसकी मां गायत्री देवी, पत्नी कमला देवी, एक बेटा पप्पू व एक बेटी पुष्पा रहती थी। कुछ साल पहले ही रुलदू के पिता लछ्छूराम का लंबी बीमारी के बाद निधन हो गया था। इसलिए घर की सारी जिम्मेवारी उसके कंधों पर आ गई थी। उसके पास बहुत सारी जमीन थी जिसमें वो खूब सारी नकदी फसलें, सब्जियां उगाया करता था और उन्हें शहर जाकर बेच देता था। रुलदू बहुत ही नेक व धार्मिक इंसान था इसलिए वो गांव में गरीब लोगों की मदद करता रहता था, वो सोचता था कि उसके गांव के सभी लोग साधन संपन्न हों और उनके परिवार के सभी बच्चे पढ़ाई-लिखाई करें ताकि उनका ये गांव खूब उन्नत हो।

रुलदू को पता था की उसके गांव के लोग ज्यादा पढ़े-लिखे नहीं हैं और उनकी सोच भी उसी स्तर की है, इसलिए सबसे पहले उनकी सोच को बदलना होगा। यदि वो उनकी सोच को बदल देगा तो गांव में विकास की धारा बहेगी। एक दिन रुलदू ने अपने गांव के सभी लोगों से कहा कि 'कल शाम को वे सभी पीपल के पेड़ वाले चबूतरे पर इकट्ठे हो जाएं।' गांव के सभी लोग पीपल के पेड़ वाले चबूतरे पर इकट्ठे होगा।

रुलदू ने बारी-बारी से सबसे पूछा कि 'उनके गांव के लोग कैसे अमीर बन सकते हैं ?' किसी ने कहा कि किसी शहर में जाकर किसी सुनार को लूटा जाए, तो किसी ने कहा की रात को सेंध लगाकर कोई बैंक लूटा जाए और लूट का सारा माल गांव के विकास के लिए खर्च किया जाए। रुलदू ने कहा, नहीं भाई नहीं, हमें इस तरह से अमीर नहीं बनना है, इससे तो गांव की बदनामी हो जायेगी और इस प्रकार के गलत काम करने वाले लोगों को जेल की सजा हो जायेगी। फिर दूसरे गांव के लोग भी इस गांव के लोगों से अपना कोई रिश्ता नहीं रखेंगे और कोई भी परिवार अपनी लड़की की शादी यहां के किसी युवक से करने को राजी नहीं होगा। जमींदार रुलदू की बात सुनकर, सभी ने एक स्वर में कहा था कि 'जमींदार जी आप सही कह रहें है। तो फिर हम अमीर कैसे बन सकते हैं ? गांव के बुजुर्ग तोता राम ने रुलदू से पूछा था। रुलदू ने कहा, हम अमीर बनेंगे अपनी मेहनत और ईमानदारी से बैठक में मौजूद सभी लोग एक दूसरे का मुंह ताकने लगे थे कि क्या ये बात सच हो सकती है ? रुलदू ने कहा सब कुछ हो सकता है। मेरे पास बहुत जमीन है उस पर गांव के कुछ लोग काम करेंगे उसके बदले उससे जो मुनाफा होगा उससे आधा हिस्सा उन लोगों को मिलेगा जो खेतों पर काम करेंगे।

जिन लोगों के पास अपनी जमीन है उसके लिए वो एक साल तक उनके लिए मुफ्त बीज, खाद और पानी देगा। रुलदू ने अपनी योजना बताते हुए कहा की गांव की बुजुर्ग महिलाओं को आटा, दलिया, मसाले पीसने, कढ़ाई-बुनाई का काम दिया जाएगा। जबकि गांव के बच्चे स्कूलों में पढ़ाई करेंगे अब वे भेड़-बकरियां, गाय, भैंसें चराने नहीं जायेंगे। यदि आप गांव वालों को उसकी ये योजना मंजूर हो तो आप उसे बता दें, रुलदू ने उन लोगों से यह आग्रह भी किया कि 'वे गांव के दस बुजुर्ग लोगों की एक समिति बना लें' ताकि कामकाज सुचारू रूप से चले। सभी लोगों ने एकमत होकर कहा कि 'वे सभी गांव की बदली हुई तस्वीर देखना चाहते हैं, इसलिए समिति के सदस्यों की लिस्ट उनको जल्दी ही मिल जाएगी। मीटिंग के बाद जब रुलदू अपने घर वापिस आया और उसने बताया की अब जल्दी ही इस गांव की तकदीर बदल जायेगी और लोग खुशहाल हो जायेंगे। उसकी पत्नी कमला और बेटे पप्पू ने उससे पूछा था की किस तरह इस गांव की तस्वीर बदलेगी ? रुलदू ने उन्हें अपनी योजना बता दी। उसकी पत्नी नाराज होकर कहने लगी कि हम लोग जमींदार हैं और गांव में हमारा काफी रुतवा है, लोग हमारी बहुत इज्जत करते हैं, हम क्यों लोगों को अपनी जमीन पर काम करने दें और क्यों मुनाफे का आधा हिस्सा उनको दें।

✍ प्रदीप गुप्ता

अभी कुछ नहीं बिगड़ा है आप मीटिंग के दौरान कही हुई बातों से मुकर जाएं और आप उनसे कहें की वो अपनी जमीन पर अपने उन्हीं करिंदों से काम करवाएगा जो कई बरसों से उनके यहां मजदूरी कर रहें हैं। रुलदू ने अपनी पत्नी को समझाते हुए कहा कि 'अब मुकरने से कोई फायदा नहीं होगा और फिर गांव में उसकी छवि भी बिगड़ जाएगी। इसलिए अब उसका सपना गांव को खुशहाल देखना है, आप सभी भी उसके इस सपने को साकार करने में उसकी मदद करो। अपने पति की बात सुनकर कमला ने कहा कि, आप फिक्र न करें आपके सपनों को पूरा करने में वो आपकी पूरी मदद करेगी।

रुलदू ने समिति के लोगों को काम बांट दिया था और गांव के अन्य लोग भी बड़ी मेहनत से अपने काम में जुट गए थे। गांव में ट्यूब वैल लग गए थे और बारी-बारी सभी किसानों के खेतों को पानी मिल रहा था, किसानों को अच्छी किस्म के बीज खाद मुफ्त दी गई थी यही कारण था कि गांव के किसान दिन-रात कड़ी मेहनत कर रहे थे। पानी की अच्छी सुविधा मिलने के कारण कुछ किसानों ने नकदी फसलें उगाने के साथ-साथ आम, नींबू, लीचीजैसे फलदार पौधे भी लगा दिए थे। ताकि कुछ समय बाद ये फलदार पौधे उनकी अतिरिक्त आय का साधन बनें। धीरे-धीरे गांव में खुशहाली आने लगी थी और लोगों के चेहरों पर मुस्कान खिलने लगी थी। जब अखबारों में गांव की खुशहाली की खबरें छपी तो दिल्ली की एक टीम उस गांव का दौरा करने आई थी। उस टीम ने अपनी रिपोर्ट में लिखा था कि गांव के लोगों की मेहनत और लगन देखकर उनके खेत सोना उगलने लगें हैं और इसके प्रेरणा स्रोत गांव के एक जमींदार रुलदू राम जी हैं ।

सर्वे करने वाली टीम ने अपनी रिपोर्ट में इस बात का भी जिक्र किया था कि इस गांव में प्राइमरी स्कूल की जगह प्लस-टू स्कूल खोलने और गांव को शहर से जोड़ने के लिए पक्की सड़कें बनाना जरूरी है, सर्वे टीम की रिपोर्ट पर तत्काल कार्यवाही शुरू हुई और गांव के विकास के लिए सरकार की ओर से सरकारी प्लस-टू स्कूल खोला गया और सड़क का निर्माण कार्य शुरू कर दिया गया ताकि लोग अपनी सब्जियां, आनाज, दूध शहर में अच्छे दामों पर बेच सकें। अब गांव के बच्चे पशुओं को चराने की बजाए स्कूल जाकर पढ़ने लग पड़े थे। दो वर्ष बाद उस गांव को बेस्ट एग्रीकल्चर विलेज का अवार्ड मिला था जिसमें पांच लाख रुपये की नकद धनराशि व प्रशस्ति पत्र शामिल था।

कुछ दिन बाद रुलदू का जन्मदिन था, गांव के लोग चुपचाप ही उसके जन्मदिन को एक यादगार के तौर पर मनाना चाहते थे, उन्होंने एक तो विशाल भंडारे का आयोजन किया, दूसरे उन्होंने उसे स्कूटी, उसकी पत्नी को बरेली वाले झुमकों का सेट और बेटे पप्पू के लिए एक साइकिल तथा बेटी पुष्पा के लिए एक रिस्ट वॉच उपहार के तौर पर दी। अपने परिवार के प्रति गांव के लोगों का ऐसा प्यार देखकर रुलदू की आंखों में खुशी के आंसू उमड़ पड़े थे। उसकी पत्नी जो कल तक अपने पति से खफा थी, आज उसे अपने पति की ऐसी शोहरत देखकर असीम प्रसन्नता हो रही थी। रुलदू के प्रयासों से गांव की तस्वीर बदल गई थी।

कविता

मां

इस धरा पर अन्नत है रिश्ते
अपने से सब मिलते-जुलते
नि:स्वार्थ और सबसे न्यारा
मां का रिश्ता सबसे प्यारा
सबके जीवन का है आधार
मां देती है हमें और से
नौ महीने ज्यादा प्यार
नहीं सही से खाती न सोती
बच्चे के गोदी में आते
इतनी खुश हो जाती है
प्रसव के कष्ट वह सारे
हमें देख कर भूल जाती है
रात भर जागकर हमें सुलाती
मैन्त्री, नाई, धोबी और डॉक्टर
मां बच्चों, के लिए सब बन जाती है
हमें सुलाकर सोती है और
हमसे पहले है उठ जाती
हाथ पकड़ कर हमें चलाती
तोतली बोली में बोलना सिखाती
प्रथम शिक्षक बनके मां
नैतिकता का पाठ पढ़ाती
धर्म-कर्म से जीवन जीना
मानव और देश सेवा का
बच्चों में है भाव जगाती
हर परेशानी को हर लेती
बच्चों के हाव-भाव से
सब कुछ जान जाती
मां ममता की ठण्डी छांव
हर घर में रब रह नहीं सकता
इसलिए धरा पर भेजी मां
जो पेट भर कर हमें खिलाती
कुछ नहीं खाते यह सबसे कहती
ऐसी तो बस होती है मां
मां का वर्णन शब्द कर नहीं पाते
मां का ऋण कभी भर नहीं पाते
बिना वर्षा सागर कौन भरे
बिना मां के आदर कौन करे

✍ सुषमा देवी

जयंती समारोह

(पृष्ठ आठ का शेष)

लगता है' कविता से माहौल को चार चांद लगाए। पहाड़ी लेखन में दखल रखने वाले नरेंद्र छिंटा जी ने तरंन्नुम में 'बड़े कमजोर हैं वो जो हमें कमजोर कहते हैं' मुक्तक सुनाया। अनुदीप भारद्वाज जी ने 'प्रशिक्षुओं को मजाकिया अंदाज में कि पढ़ते समय जब किताब खुली हो तो कैसे प्रियतम का चेहरा सामने आता है कविता सुनाई। सबसे कम उम्र के कवि बालक बह्‌मांश ने अपनी एक कविता सुनाकर सबको हैरान कर दिया। इस अवसर पर सरला गौतम, डॉ. शबाना, धनवीर परमार, मामराज शर्मा, लाल सिंह शास्त्री, डॉ. श्री कांत अकेला इन सब ने अपनी कविताओं द्वारा समा बांधा। सिरमौरी कविता, गीत, गजल में पहचान बनाने वाले कवि दिलीप विशिष्ट ने अलग अंदाज में पत्र वाचन के बाद लोक गायकों द्वारा गाए गए अपने कुछ गीतों के मुखड़े और अंतरे सुनाए। इनके लिखे गीतों की कितनी ही एल्बमें यू-ट्यूब पर मौदूद हैं। अंत में अध्यक्ष महोदय अनंत आलोक ने इशारों-इशारों में कहा कि कवि केवल इशारा करता है, उसका काम भाषण देना नहीं है। बेशक वह अध्यक्षता कर रहा हो लेकिन कवि जो भी बात करता है वह मेटाफॉर में होती है। कवि अविधा में न कह कर व्यंजना, और लक्षणा में बात करता है, उन प्रतीकों को समझने की आवश्यकता है जिनके माध्यम से कवि अपनी बात कह सके। उन्होने बार-बार जोर देकर इशारा किया 'मेटाफॉर को समझा' इस बात को और गहराई से समझाने के लिए उन्होने अपने दोहों, मुक्तकों और आश' आशरों के उदाहरण पेश किए। अंत में जिला भाषा एवं संस्कृति अधिकारी कांता नेगी जी ने सबका धन्यवाद किया। यह एक बहुत ही सफल कार्यक्रम रहा। जिसके लिए समस्त साहित्य समाज बधाई का पात्र है।

बुजुर्ग की सीख/कहानी

पांचवी कक्षा का छात्र अनमोल जो अपनी पढ़ाई को लेकर बेहद चिंतित था, तेज-तेज कदमों से सीढ़ियों को चढ़ रहा था क्योंकि उसे अपने स्कूल समय पर पहुंचना था। सर्दी के कारण उसे जुकाम हो गया था, इसलिए उसकी नाक बह रही थी। चलते हुए अचानक उसने अपनी नाक साफ की और निकला हुआ मैला सीढ़ियों से सटी हुई रेलिंग पर पोंछने लगा। इससे पहले कि उसका हाथ रेलिंग तक पहुंचता, पीछे धीरे-धीरे सीढ़ियां चढ़ रहे एक बुजुर्ग ने उसका हाथ पकड़ लिया और बड़ी आत्मीयता से बोला, बेटा तुम यह क्या कर रहे हो ? मेरे जैसे लोग जो रेलिंग के सहारे ही सीढ़ियां चढ़ते हैं, जब इस रेलिंग को छुएंगे तो उनके हाथ गंदे हो जाएंगे हो सकता है उनकी जेब में रुमाल भी न हो तो.... जरा सोचो उन्हें कितना बुरा लगेगा 'वह थोड़ी देर के लिए रुका और फिर अपने बैग से दो-तीन टिशू-पेपर निकाल कर अनमोल को थमाते हुए बोला,' अपनी नाक इससे साफ करो' अनमोल को बहुत शर्मिंदगी महसूस हुई, उसने तुरंत बुजुर्ग से माफी मांगी और इससे पहले कि बुजुर्ग कोई और प्रतिक्रिया करता वह वहां से चला गया।

क्योंकि उसे अपने स्कूल शीघ्र-अतिशीघ्र पहुंचना था। यद्यपि अब अनमोल पूर्ण रूप से व्यस्क हो चुका है, मगर आज भी वह जब अपना नाक साफ करता है या किसी को करते हुए देखता हैं तो तुरंत उस अनजान बुजुर्ग की तस्वीर उसके सामने आ जाती है और वह किसी भी सार्वजनिक स्थान को न तो स्वयं गंदा करता है और न ही किसी अन्य व्यक्ति को करने देता है।

✍ प्रो. रणजोध सिंह

समाज में बढ़ती नशे की प्रवृत्ति

चिंतन

आज हमें आवश्यकता है बच्चों में अच्छे संस्कार विकसित करने की। उन्हें नशा मुक्त माहौल प्रदान करने की ताकि यह बच्चे बड़े होकर नशे की आदतों से दूर रह सके

आज हमारा समाज एक खतरनाक दौर से गुजर रहा है बच्चों, बड़ों, बूढ़ों, महिलाओं में नशे की आदत बढ़ती जा रही है। बहुत से युवा तो आज के दौर में नशे में इस कदर डूब चुके हैं कि उस से बाहर निकलना अब उनके बस से बाहर हो चुका है। आज शुरू करते हैं हम अपने घर, गांव, मोहल्ले,कस्बे से।

आज अगर शराब और मीट की व्यवस्था नहीं है तो आपके पास मेहमानों की संख्या भी आधी होगा, मेहमानों का जमवाड़ा भी कम होगा और उतनी रौनक भी नहीं होगी। इन छोटे-छोटे आयोजनों के ऊपर बहुत सा पैसा व्यर्थ कर दिया जाता है। इसके उपरांत विद्यालय में बच्चे जो अपने घरों में तथा आयोजन में सारे क्रियाकलाप देखते हैं वे अपने से बड़ों का अनुसरण करते हैं।

बीड़ी, सिगरेट, शराब चखने की ओर कदम विद्यालय स्तर पर ही रख देते हैं। बारहवीं पास करते-करते बहुत से छात्र तंबाकू, बीड़ी सिगरेट शराब पीने के आदी हो जाते हैं। बहुत सी छात्राएं भी आज आधुनिकता की दौड़ में इन नशील नशीले पदार्थों का सेवन कर लेती हैं। इसी दौर में बहुत सी छात्र-छात्राएं आजकल चरस, भांग चिट्टा और बहुत सी नशीले पदार्थों का सेवन करते हैं। बहुत से विद्यार्थी तो इन नशों के इस कदर आदी हो जाते हैं कि उन्हें नशा मुक्ति केंद्र ले जाना पड़ता है। इस पर जो छात्र विद्यालय में नशे से बचे हुए थे वे कॉलेज पर नशा ग्रहण करना शुरु कर देते हैं। हताश युवा वर्ग अक्सर नशे की ओर झुक जाता है। वे समझते हैं कि उन्होंने लो पढ़ाई की है वो व्यर्थ है और कुछ तनाव से छुटकारा पाने के लिए ये लोग नशीले पदार्थ ले लेते हैं। इनमें से बहुत से लोग तो इतना आदी हो जाते हैं कि वे दिन रात नशीले पदार्थों में डूबे रहते हैं। हम यह तक नहीं सोचते की हमारे बच्चे भी हमारी इन गतिविधियों को देख रहे हैं। वहीं से कुछ बच्चों में नशीले पदार्थों को ग्रहण करने की जिज्ञासा जागृत हो जाती है। घरों, पाठशालाओं तथा विज्ञापनों के माध्यम से जागरुकता अभियान चलाए जाते हैं। नारा लेखन भाषण प्रतियोगिता होती हैं पर जिस व्यक्ति को नशीले पदार्थों की लत लग जाती है वो वहां से बाहर नहीं निकल पाते। कुछ लोग तो नशे में इस कदर दुबे रहते हैं कि उन्हें ना तो स्वयं की बदनामी की चिंता रहती है न वो दूसरों से डरते हैं। इससे अपराधी प्रवृत्ति को बढ़ावा मिल रहा है। आज बहुत से किस्से ऐसे देखने सुनने को मिलते हैं जहां नशे जैसी फैलती प्रवृत्ति का पता चलता है।

आज हमें आवश्यकता है बच्चों में अच्छे संस्कार विकसित करने की। उन्हें नशा मुक्त वातावरण प्रदान करने की, ताकि यह बच्चे बड़े होकर नशे की आदतों से दूर रह सके और एक स्वस्थ समाज का निर्माण कर सकें।

✍ मनोज कुमार ठाकुर

संस्कृतियां री जातरा : कावड़ यात्रा

(गतांक से आगे)

माता तूं ई मूल प्रकृति ये, तू ई परम पुरुष ये, तू ई परमात्मा होर तू ई शिव ये, शिवे! आपको नमस्कार है-**त्वमेव मूलप्रकृतिस्त्वं पुमान् पर एव हि। गंगे त्वं परमात्मा च शिवस्तुभ्यं नमःशिवे।।** 'कल्याण अंक 98' वर्ष संख्या-5, गीताप्रेस गोरखपुर' तो भगवान शंकर जी रे जटामुकुटो री शोभा बढ़ांदे हुए तिन्हा खे 'गंगाधर' नांव देणे वाली त्रिभुवन तारिणी हे माता गंगे तेरी इतनी बेअंत महिमा रा श्रवण करने ते बाद भला कुण नी इंसान नी चाहोगा कि तेरे परमपवित्र गंगाजले की से भगवान भोलेनाथ जी रा अभिषेक करो, तेरे पावन पाणियो दे असनान करो होर येस अमरतो रा पान करदे हुए, पींदे हुए तेसखे से मोक्ष मिलो जो बेअंत जन्मा तक अति धर्मकर्म करने वालेया संता महात्मेया खे बी प्राप्त नी हूंदा।।

श्रावण पावन पुण्य पुनीता, कण-कण में शंकर के गीता। हर घड़ी प्रहर हर दिवस रात्रीतेरी जयजय गाती, मां आदिशक्ति! भाग्यविधात्री।। 'श्रीरुप-पत्र भजनमाला' तो इन्हा पंक्तियां रे मताबक म्हारे सनातनो रे विक्रमी सम्वतो रा ये छठा महीना श्रावण परम पवित्र, जीवा रा उद्धारक मान्या जाओआ कउंकि साउणो दे चउं कनारे हरियाली ही हरियाली हो इ जेते किते येस महीने दे महारेया गीता, रामायण, वेद पुराणादि शास्त्रा रे मताबक येस पूरे महीने अंदर चौरासी लाख जूनी दे पड़ने वाले बहुत सारे जीव येते ई मासो दे जन्म लंदे हुए मरी बी जाओए यालि दबासट आपणी जून पूरी करदे जाओए। जितणी पूजा-पाठ येते महीने दे हो ई तितणी होरी केसी दे नी हूंदी।

श्रावण यानि साउण महीना भगवान महामृत्युंजय रा रुप बी मान्या जाओआ। येस बख्ते कुदरत माता यानि प्रकृति बी पूरिया जवानिया पांदे हो ई। धरतिया रा कण-कण शिवमय हुई जाओ आं। आपने नेका इ रुपा ते से यानि साउण मास आपणेया भक्ता ते रु ब रु करवांदे हुए समझाओआ कि -

मैं सावन हूं!, मैं शंकर हूं! मैं प्रकृति भीम भयंकर हूं, हंसाता हूं, रूलाता हूं, पींगे खूब झूलाता हूं चेतन की छोड़ो तुम यादव! जड़ को नाच नचाता हूं।। 'श्रीरुप-पत्र भजनमाला' से भाई लोको! माणू बी आपणे जीवनो रे कष्टा खे कम करने रे मतलबो ते, जादा ते जादा पुन्न कमाणे रिया मंशा ते, मनवांछित फल पाणे रिया खास इच्छा ते तरह-तरह ते शिव-शक्ति भगवान श्री गौरीशंकर जी रा पूजन करोए, आराधन करोए। कोई सोमवारो यानि स्वारो रा व्रत करोए तो कोई भगवान महामृत्युम्जय सदा शिव जी रा जप अनुष्ठान करोए तो कोई पदयात्रा करदे हुए हरिद्वार गंगा जी ते कांधा पांदे गंगा जलो री भरीदी बैंहिगी यानि कावड़ लई की आओए।

येबे आगे येसते पहिले कि आसे बात करिये कावड़ यात्रा रे भिन्न-भिन्न प्रकारा री तो आईए सबनी ते पहिले ये जाणिए कि 'कावड़' शब्दो रा असल मतलब, अर्थ क्या हया? एकि अर्थो दे तो कावड़ से तपस्वी, श्रद्धालू या भक्त आ जो नाना प्रकारा रिया कठणाइया पार करदे हुए आपणा लक्ष्य हासल करोआ। रावण येसा संसारिया रे सबनी ते पहिले महान कावड़िये रे रुपो दे मान्या जाओ आ जबकि भगवान श्रीराम जी खे पुराणा, शास्त्रा रे मताबक दुनिया रे आजो तक रे दूजे महान कावड़िये रे रुपो दे जाण्या जाओआ। दूज्जे सधारण अर्थो दे 'कावड़ शब्दो रा अभिप्राय 'तेसा लकड़िया रिया/बैंजो रिया बैहंगिया ते आ' जेसा रे दोनी कनारे रस्सिये बंन्धेया पल्लेया दे दूध या पाणियो रे भरे बर्तण, मटके या टोकरियां बान्निया दिया होइया। आपतौरो पांदे येसा बहंगिया या कावड़ों रे माध्यमो ते ग्वाले लोक या दूजे पाणी ढोणे वाले पणिहारे, दूध या पाणी एकी जगहा ते दूज्जिया जगहा खे आपणेया कंधया पांदे चक्की की लई जाओए।

परन्तु आज के येस विशेष संदर्भो या जिक्रो दे, जेबे भगतगण येसा बैहंगिया यानि कावड़ो रेया दोनी सीरेया पांदे बंध्या देया मटकेया या पात्रा दे 'केवल श्रीहरकी पौड़ी हरिद्वार गंगातटो' ते 'गंगाजल' भरीकी पूरे आदरो होर नियमोमताबक कंधे पांदे चक्की की

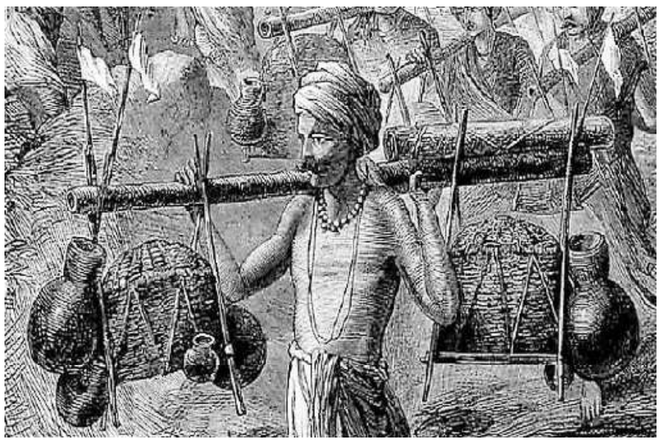

सैकड़ेया, हजारा मीला पैदल यात्रा करने ते बाद जेबे आपणे गांव,बस्ती, कस्बे या शैहरो रे केसी बी मंदरो दे पहुंची की केवल तेस कावड़ो वाले गंगाजले की भगवान शंकर जी रे शिवलिगों रा अभिषेक कराओए तेबे ही स्यो भगतगण शिवजी रे कावड़िये मान्या जाओए, जाण्या जाओए।

येबे येते ते आगली विशेष बात ये ई कि कावड़िये गंगाजल भरी की की कियां शुरुआत करोए अपणिया कावड़ यात्रा री? तो येस खातर सबनी ते पहिले कावड़िये कनखल जाई की अस्नान करोए फेर आपणेया बर्तणा, मटकेया, गड़बेया, प्लास्टिको रिया गेलणी आदि जो बी कुछ तिन्हागे हो आ, तेस लई की **'हरकिया पैड़िया हरिद्वार'** जाओए। याद राख्यो! ये हरकी पइड़ी तिन्हा तिउं महापवित्र जगहा प्रयागराज, उज्जैन होर नासिको साथली से चउथी जगहा ई जेति समुद्र मंथन करदे निकले अमरत कलशो ते कुछ अमरतोरिया बूंदा पड़िया थिया जेते किते ये स्थान इतना मोक्षदायी बणीगा, महातीर्थ बणीगा। ये हि कारण कि इन्हा ई चउं तीर्था पांदे बारहा साल बाद लगणे नाले कुमी होर छे साल बाद लगणे वाले अर्ध कुम्भ लगोए।''

यती ये बात बी बसेस ध्यान देणे लाइक ई कि जेस समें इन्हा शिव भगता कावड़िया रा माता गंगा साथे मिलणा हो आ, माता गंगा रा पहिला दर्शण हो आ तो तिन्हारे जिउआ दे एक ऐसी परम उच्चकोटिया री अनुभूती मसूस होई जेते रे कारण 'माता गंगा से अति पवित्र गंगातटो पांदे, तेस समें कावड़िया रे जन्म जन्मांतरो रेया पाप कर्मा रा मैल तेस वक्ते पूरे तरीके ते आपणे आप धोया करोआ जेते कारण तिन्हारिया हाखीते ते अणटुट बैंहदी रओ ई निर्मल, पवित्र आसुआ, अंजुआ री धारा, खुदबखुद ही मुंहो ते निकलदे रओए प्रार्थना रे येओ बोल जो स्पष्ट करोए कावड़िया रिया यात्रा रे पहिले पहिले मकसदो खे-

विष्णुपदी, हे गंगे माता! भोगवती, मंदाकिनी मां तू जटाशंकरी, जाह्नवी माते!, सुरसरी, भागीरथी मां तू दो- दो गड़वे 'पावन गंगाजल' के,महादेव अपने का अभिषेक कराना है जन्म-जन्म के संचित दुष्कर्म मेरे मां!, दाग उनका आज मिटाना है।। 'श्रीरुप-पत्र भजनमाला'

वाह! येस समें क्या कैहणा कुदरता रा, माता प्रकृतिया रा? जेस वक्ते पूरे हिन्दुस्तानों रे कुणे-कुणे ते रंगबरंगी फूलमाला होर अति सुंदर चुन्नड़ियां वाले परिधानों दे सजे कावड़ और कावड़िया रिया कतारा रिया कतारा कावड़ चक्कणे गंगातट पांदे आओइया तो तेस समें गंगा तटो पांदे बराजमान 'लघु भारतो रा येड़ा अलौकिक ,अद्भुत नजारा देखी की मन,सरीर रोमांचित हुई जाओआ कउंकि हाखी सामणे रा दृष्य हो ई ही कुछ येड़ा अद्भुत आ।

✍ यादव किशोर गौतम

होर येबे बात ये 'कावड़यात्रा रे सर्वोपरि उद्देश्य री, मकसदो री जेती कुछ देशभक्त कावड़िए येड़े भी है जो केवल और केवल आपणे भारत देशो, मातृया भूमिया री एकता, अखंडता, तरक्किया होर **'सर्वे भवन्तु सुखिनः' रे एक मात्र मकसदो ते ही कावड़ चक्कोए, चक्कदे हुए ऐसी पवित्र कामना करोए कि सुखी होवे घर बस्ती, ये देश मेरा, ये जगत समूचा शिवमय हो ज्यों रहते नंदी, नाग, मूषक, मयूर, केसरी, दर तेरे पर बड़े प्रेम से बस त्यों ही जीवे हर जीव धरा का नहीं भय किसे कोई, किसी आतंकी, दुराचारी, तच्छक से हो।। 'श्रीरुप-पत्र भजनमाला'**

येबे येते ते बाद फेर जेबे पूरे भारत ते आएदे शिवभक्त चली पड़ोए आपणेया कावडा दे पवित्र गंगा जलभरी की आपणेया आपणेया ठकाणेया खे तो येसा महान, अद्भुत, रोमांचक, कष्टकारक यात्रा दे केथी स्यो हो ये कल्लम कल्ले तो केथी टोलियां बिच्चे, केथी कड़कड़ांदिया धूपा बिच्चे तो केथी बरखा रे सोढ़े बिच्चे फसे दे, बहुत ई नाजुक स्थितिया दे।

पूरे देशो दे श्रावण महीने रे शुरु हुंदे ही हर भारतीयो रे मनो दे भगवान शंकर महादेव जी रे परती उमड़ने लगोआ श्रद्धा, विश्वास, भक्ति सेवा रा बेथाह हड़ यानि बाढ़। येते व्हाले जदियो तक 'साउण महीना पूरा नी हुई जांदा, कावड़िये कावड़ो दे ल्यायेदे पावन गंगाजले की त्रयोदशिया खे आपणे ईष्ट भोले शंकरो रा अभिषेक नहीं करी लंदे तदियो तक हर जगहा, क्या कावड़िया, क्या तिन्हारे टब्बरो वालेया शिवभगता रा पूर्ण जोश, हौंसला, मनोबल, सावध ाानी बणाये राखणे रे मकसदो ते जगहा जगहा स्वागतकर्ता, भगतगण येस 'विषेश कावड़ गीतो' रे मार्फत तिन्हारा बढ़ी-चढ़ी की येड़ा स्वागत सत्कार करोए कि-

मुखड़ा-

बमबम बोल बम, बमबम बोल बम। कावड़िये बोल बम, संग में बोले हम।।

तेरे इस वेश को, नमन निज देश को एकता में बांधा है रे पूरे देश को-2 पूर्व हो या पच्छम, उत्तर हो या दक्खण बमबम बोल बम, कावड़ियेबोल बम-बमबम-बोलबम।।1।।

कहीं 'बैठी कावड़', कहीं 'कावड़ खड़ी' देखो 'डाक कावड़' की स्पीड बड़ी-2 कांधे कावड़ गंगा, हाथो में तिरंगा जय, जय भारत माता, घुंघरूनाद चंगा-बमबम-बोलबम।।2।।

दुनियावालो देखो! आया 'श्रवण' है देखो कांधे 'मां-बाप कावड़ में' लाया है देखो - तुझ से लाल हो, भारत निहाल हो घर-घर देश का, पूरा खुशहाल हो -बमबम बोलबम।।3 कावड़ 'झिलमिल'ये प्यारी, नाचे संगत सारी 'नाद बमबम' से गूंजे, ये धरती हमारी -2

गांव-नगरी का बच्चा, हर कोई आज नच्चा 'बमबम' बोल बम,कावड़िये बोल बम-बमबम बोलबम।।4।।

'श्रीरुप-पत्र भजनमाला'

जे कावड़ यात्रा रेया मुख्या-मुख्या अंगा री बात करिये तो येसा कावड़ यात्रा रे चार विशेष अंग ये (अ) कावड़ यात्रा रे परकार या किस्मा (आ) घरो ते गंगा जी ते कावड़ ल्याउणे खातर प्रस्थान करने ते बाद हरिद्वार पहुंचणे तक होर तेते ते बाद कावड़ यात्रा पूरी हुणे तक कावड़िया द्वारा पालन किए जाने वाले कुछ विशेष सख्त नियम। (इ) रस्ते दे कावड़ विश्राम कराणे रे बी संत-ऋषिये विशेष नियम' बणाए जिन्हारा पालन बहुत जरुरी आ। (ई) कुछ विशेष मर्यादा 'कावड़िया रे परिवार, टब्बरवालेया खे बी।

(अ) कावड़ यात्रा रे परकार या किस्मा-येस विषये पांदे मेरे पूछणे पांदे आपू बी कई बार कावड़ यात्रा करी चुके दे 'बाबा श्री प्रदीप जंगम जी' कावड़ यात्रा रे कई प्रकारा या स्वरुपा रा जिक्र करदे बताया कि ये यात्रा आपणे आप में ई अनेका मनमोहक रुपा-स्वरुपा धारण करी की चलोई, जियां कि-

(एक) बइठी कावड़-येसा कावड़िये स्वच्छ, साफ़-सूथरिया जमीना पांदे बी राखी सकोए कउंकि येसा कावड़ा रे गंगाजल भरेदे गड़वे, मटके या प्लास्टिक कैनिया स्वभाविक तौरो पांदे जमीना ते तीनचार इंच पांदे रहोए।

(दो) झूला कावड़-ये कावड़ केथि बी झूलाई, त्वारी, यानि राखी जाई सकोई पर शर्त ये है कि ये कावड़ कदी बी भूली की भन्नी, केथे बी सूरती दे गूलरो रे डालो, टैहणिया, जड़ी, छाईं दे नी राखी जाइ सकदी। सवाय गूलरो या उमरी रे डालो ते ये केसी भी होरी पेड़ो रिया टैहणिया या केसी बी कावड़ सेवा दलो, भगता, संस्था द्वारा जो कावड़ राखणे बारे पूरी जाणकारी राखोए तिन्हारे बणाये गए लकड़िया रे या लोहे रे विशेष स्टैंडो, मचानो पांदे पर ही राखी जाई सकोई। पर तेती बी ये खास ख्याल राख्या जाणा चाहियो कि केसी बी सूरता दे कावड़ जमीना, धरतिया साथे नी छुआउणी चाहियो।

(तीन) खड़ी कावड़-ये येते किस्मा री कावड़ ई भई जेबे एकिबार चक्किती तो चक्किती। येसा केथि बी, केसा बी हालती दे, बाटा दे झूलाई नी सकदे, त्वारी नी सकदे, मतलब ना ही भूईया, माटिया जमीना पांदे ई राखी सकदे।

ये जरा सख्त किस्मा री कावड़ ये। येसा केसी भी सूरता दे कांधा पांदो ते थाल्ले नी त्वारी सकदे। हां! एक आदमियो रिया कांधा पांदो ते तत्काल दूजे आदमियोरिया कांधा पांदे ई राखी सकोए।

ध्यान देणे लायक बात ये है कि जदियो तक ये कावड़ आपणे ठीक ठकाणे नी पूज्जी येसा कांधा पांदो ते त्वारी की होरथी केथी बी राखणे री जाजत नी ये। (क्रमशः)

कबता

हिमाचलो रे भगीरथ

भण्डारी शिवानंद घरें तुसें लित्या अवतार,
हिमाचलो रे भगीरथ म्हारे परमार।
गरीबां रे मसीहा भी तां म्हारे परमार।
माणदार काम्मां भोला माहणू परमार।
हिमाचल बणाणें वाले म्हारे परमार,
आजादिया रा सच्चा सपाई परमार।
केथी मिलणी येडे त्यागा री मशाल,
माणुआं रा प्यार थे म्हारे परमार।
बागवाणी, बाणिकी बढ़ान्दे परमार,
हिमाचलो री धरती, सिरमौरे री धार,
04 अगस्त,1906 शनिश्चर तां था वार,
चन्हालग गांवा तुसें लित्या अवतार।
लौहरा ते कित्या तुसें बी.ए. मतयान पास,
लखनऊ ते तां समाजशास्त्रे च डॉक्टरी शाबाश।
आजादिया दिया लड़ाईया च लया तुसें भाग,
प्रधाण बणें प्रजामण्डल, सिरमौरा रे जाग्गे भाग।
जाज्ज वी तां बणे तुसें लैकिया दे नाल,
18 सालां सम्भालया तुसे हिमाचलो रा राज।
25 जनवरी,1971 जो बणया हिमाचल पूर्ण राज।
तुसां रिया लैकिया रा कायल गिरिराज।
02 मई,1981 सन् चल उड़े तुसें माराज।
हिमाचलो रे वटवृक्ष थे डॉक्टर परमार।
पहाड़ा च पले जीये म्हारे परमार।
न कोई बैंक बैलेन्स, न मोटर कार।
गांवा-गांवा पैदल हान्डे म्हारे परमार।
केथी मिलणी येणे त्यागा री मिसाल,
हिमाचलो रे पैहले मुख्यमंत्री डॉ. वाई.एस. परमार।
हिमाचलो रे भगीरथ म्हारे परमार।

✍ रवि कुमार

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के दिशा निर्देशों की अनुपालना का आह्वान

राज्यपाल शिव प्रताप शुक्ल ने गत दिनों नई दिल्ली में राष्ट्रपति भवन में आयोजित राज्यपालों के सम्मेलन में विश्वविद्यालयों को अपनी कार्यशैली में विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के दिशा-निर्देशों की अनुपालना सुनिश्चित करने पर बल दिया।

वह नई सम्मेलन में 'शिक्षा में सुधार और मान्यता प्राप्त विश्वविद्यालय' विषय पर संबोधन दे रहे थे। राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मु ने सम्मेलन का शुभारंभ किया। सम्मेलन में केंद्र और राज्यों के संबंधों, आम आदमी तक जनकल्याणकारी योजनाओं की पहुंच समेत कई मुद्दों पर विचार रखे। उप-राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री और केंद्रीय गृह मंत्री ने भी शुभारंभ सत्र को संबोधित किया। शिव प्रताप शुक्ल ने कहा कि उच्च शिक्षा का विस्तार और इसकी गुणवत्ता में सुधार से आर्थिक विकास को प्रोत्साहन मिलेगा। इससे उपलब्ध संसाधनों का बेहतर मूल्यांकन, तकनीकी प्रगति और समस्याओं के समाधान के नए मार्ग प्रशस्त होंगे। उन्होंने कहा कि देश का जनसांख्यिकीय वर्गीकरण विकास में और ज्यादा योगदान देगा जब शिक्षा तंत्र और पढ़ाने के तरीकों में उचित बदलाव किए जाएंगे। उन्होंने कहा कि गुणवत्ता पर ध्यान केंद्रित करने के लिए लगभग हर सैद्धांतिक पहलू के साथ कुछ व्यावहारिक कार्य भी होना चाहिए और यह उन शिक्षाविदों द्वारा किया जा सकता है, जो शिक्षार्थी के मनोविज्ञान और सीखने की आवश्यकता से

राज्यपाल शिवप्रताप शुक्ल नई दिल्ली स्थित राष्ट्रपति भवन में आयोजित राज्यपालों के सम्मेलन के दौरान राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू से भेंट करते हुए

भली-भांति वाकिफ हैं। राज्यपाल ने उच्च शिक्षा को सामाजिक रूप से प्रासंगिक बनाने के लिए सामाजिक आवश्यकताओं के साथ महत्त्वपूर्ण जुड़ाव पर बल दिया। उन्होंने कहा कि आम लोगों को विकास और बेहतर संचार के लिए प्रौद्योगिकी का इस्तेमाल करने के बारे में जागरूक किया जाना चाहिए। उन्होंने कहा कि शैक्षणिक संस्थानों में दाखिले के समय काउंसलिंग की भूमिका महत्त्वपूर्ण है। उन्होंने कहा कि मूल्यांकन और परीक्षा के तरीकों में बदलाव किया जाना चाहिए, ताकि विद्यार्थियों का निरंतर आकलन किया जा सके। उन्होंने कहा कि राष्ट्रीय संस्थागत रैंकिंग फ्रेमवर्क की व्यवस्था के तहत रैंकिंग के लिए संसाधन आवंटन, शोध और हितधारकों की धारणा आदि जैसे मापदंडों को ध्यान में रखा गया है। सभी विश्वविद्यालय और महाविद्यालय रैंकिंग फ्रेमवर्क में भाग नहीं ले रहे हैं, जबकि यह अनिवार्य होना चाहिए। उन्होंने कहा कि जिन उच्च शिक्षा संस्थानों की रैंकिंग कम है, उन्हें भी किसी न किसी व्यवस्था के माध्यम से सहायता प्रदान की जानी चाहिए।

उचित मूल्यों की दुकानों के लिए 12 अगस्त तक करें आवेदन

सार्वजनिक वितरण प्रणाली के अंतर्गत हमीरपुर जिले के विभिन्न क्षेत्रों में खुलने वाली उचित मूल्य की 7 दुकानों के लिए 12 अगस्त तक ऑनलाइन आवेदन आमंत्रित किए गए हैं। जिला खाद्य आपूर्ति नियंत्रक अरविंद कुमार शर्मा ने बताया कि ग्राम पंचायत चलोह के गांव धैल, ग्राम पंचायत क्याराबाग के गांव सुलवीं ब्राह्मणा, ग्राम पंचायत जनैहण के गांव जनैहण, ग्राम पंचायत दैण के गांव दैण, ग्राम पंचायत करंडोला प्लासी के गांव जटूआ, ग्राम पंचायत धमरोल के गांव यानवीं और ग्राम पंचायत हणोह के गांव जड़ोह में उचित मूल्य की एक-एक दुकान खोली जाएगी। उन्होंने बताया कि इन दुकानों के लिए इच्छुक व्यक्ति या संस्थाएं वेबसाइट एमर्जिगहिमाचल.एचपी. जीओवी इन सिंगल विंडो क्लीयरेंस सिस्टम पर 12 अगस्त तक आवेदन कर सकते हैं।

सूचना एवं जन सम्पर्क विभाग में सेवानिवृत्ति समारोह आयोजित

सूचना एवं जन सम्पर्क विभाग में निजी सहायक के पद पर तैनात जयपाल चौधरी के सम्मान में गत दिनों सेवानिवृत्ति कार्यक्रम का आयोजन किया गया। निदेशक राजीव कुमार की अध्यक्षता में छोटा शिमला स्थित निदेशालय में विदाई समारोह का आयोजन किया गया। सूचना एवं जन सम्पर्क परिवार की ओर से शुभकामनाएं देते हुए राजीव कुमार ने जयपाल चौधरी की बहुमूल्य सेवाओं की सराहना की और उनके उत्तम स्वास्थ्य की कामना की। संयुक्त निदेशक महेश पठानिया, वरिष्ठ सम्पादक डॉ. राजेश शर्मा व उपनिदेशक (तकनीकी) व सूचना अधिकारी अनिल गोमा ने उनके कार्यकाल की सराहना करते हुए अपने अनुभव साझा किए।

जयपाल चौधरी 4 जून, 1988 को आशुटंकक के पद पर नियुक्त हुए और 36 वर्ष से अधिक समय तक विभाग में विभिन्न पदों पर अपनी सेवाएं प्रदान कीं। इस अवसर पर विभाग के अधिकारी एवं कर्मचारी उपस्थित थे।

हि.प्र. राज्य चयन आयोग विभिन्न श्रेणियों के 21 पोस्ट कोड के परिणाम करेगा घोषित

मुख्यमंत्री ठाकुर सुखविंद्र सिंह सुक्खू ने गत दिनों कहा कि प्रदेश सरकार ने हिमाचल प्रदेश राज्य चयन आयोग को विभिन्न श्रेणियों के 21 पोस्ट कोड के परिणाम घोषित करने को स्वीकृति प्रदान की है। ठाकुर सुखविंद्र सिंह सुक्खू ने कहा कि आयोग फॉरेंसिक्स सेवाएं विभाग में लैब असिस्टेंट (बायो एंड सीरोलॉजी) (पोस्ट कोड 961), भू-रिकॉर्ड विभाग में असिस्टेंट कम्प्यूटर प्रोग्रामर (पोस्ट कोड 966), तकनीकी शिक्षा एवं व्यवसायिक प्रशिक्षण विभाग में होस्टल अधीक्षक एवं पीटीआई (पोस्ट कोड 968), खाद्य नागरिक आपूर्ति एवं उपभोक्ता मामले विभाग में इंस्पेक्टर लीगल मेटिरियोलॉजी (पोस्ट कोड 969), मत्स्य विभाग में मत्स्य अधिकारी (पोस्ट कोड 978) और मुद्रण एवं स्टेशनरी विभाग में कॉपी होल्डर (पोस्ट कोड 982) के परिणाम सहित धर्मशाला नगर निगम में सफाई सुपरवाइजर (पोस्ट कोड 986), हिमाचल प्रदेश सामान्य उद्योग निगम में असिस्टेंट केमिस्ट (पोस्ट कोड 987), वर्कशॉप इंस्पेक्टर (वेल्डिंग) (पोस्ट कोड 991), वर्कशॉप इंस्ट्रक्टर (पैट्रन मेकिंग) (पोस्ट कोड 992), वर्कशॉप प्रशिक्षक (मशीनिस्ट) (पोस्ट कोड 993), मनोवैज्ञानिक एवं पुनर्वास अधिकारी (पोस्ट कोड 994), तकनीकी शिक्षा में वर्कशॉप प्रशिक्षक (पोस्ट कोड 997), हिमाचल प्रदेश राज्य सहकारी कृषि एवं ग्रामीण विकास बैंक लिमिटेड में आशुटंकक (पोस्ट कोड 995), हिमाचल पथ परिवहन निगम में जेओए (अकाउंट्स) (पोस्ट कोड 996), विधि अधिकारी (पोस्ट कोड 999), तकनीकी विश्वविद्यालय हमीरपुर जेओए (आईटी) (पोस्ट कोड 1000), हिमाचल प्रदेश मानव अधिकार आयोग में कनिष्ठ आशुलिपिक (पोस्ट कोड 1001), सहकारिता विभाग में किन्नौर जिला सहकारी विपणन एवं संघ लिमिटेड टापरी में सचिव (पोस्ट कोड 1002), जेई (आरकियोलॉजी) (पोस्ट कोड 1004) तथा भाषा, कला एवं संस्कृति विभाग में प्रिजर्वेशन असिस्टेंट (पोस्ट कोड 1006) के परिणाम घोषित करेगा।

राजीव गांधी स्वरोजगार स्टार्टअप योजना के लिए ऑनलाइन पोर्टल

श्रम एवं रोजगार विभाग के प्रवक्ता ने गत दिनों बताया कि पात्र युवाओं को अनुदान के लिए आवेदन करने और इसका लाभ उठाने का अवसर प्रदान करने के लिए राजीव गांधी स्वरोजगार स्टार्ट-अप योजना-2023 के ऑनलाइन पोर्टल का शुभारंभ किया गया है। उन्होंने कहा कि http://www.rgssy.com पोर्टल पर जाकर युवा इस योजना का लाभ उठा सकते हैं। उन्होंने कहा कि इस योजना का मुख्य उद्देश्य युवाओं को स्वरोजगार के लिए प्रोत्साहित करना और उनकी उद्यमशीलता को बढ़ाना है। इस योजना के तहत हिमाचल के युवाओं को अनुदान के रूप में प्रोत्साहन, रियायतों और अन्य सुविधाओं का प्रावधान किया गया है। परिवहन विभाग के जिन पात्र आवेदकों की पहचान कर श्रम एवं रोजगार विभाग को सिफारिश की है, वे ई-टैक्सी की खरीद के लिए पोर्टल पर जाकर सब्सिडी के लिए आवेदन कर सकते हैं।

कुर्पन खड्ड पेयजल योजना ......

(पृष्ठ एक का शेष) पम्प हाउस, पंपिंग मशीनरी और पाइपों के टूटने और बह जाने से जल शक्ति विभाग को 10 करोड़ रुपये का नुकसान हुआ है जबकि रामपुर में जल शक्ति विभाग को 7 करोड़ 50 लाख रुपये की 19 पेयजल योजनाओ व एक सीवरेज की लाइन को भी नुकसान हुआ है।

उप मुख्यमंत्री ने कहा कि 19 पेयजल योजनाओं में से 4 पेयजल योजना निर्माणाधीन थी। उन्होंने अभी तक 10 पेयजल योजनाओं को पुनः शुरू कर दिया गया है और शेष 5 योजनाओं को आज शाम तक शुरू करने के प्रयास किए जा रहे हैं। उन्होंने कहा कि रामपुर अस्पताल में पानी की सप्लाई को पिछले कल ही बहाल कर दिया गया था। उप मुख्यमंत्री ने कुल्लू जिला के निरमंड क्षेत्र के बागीपुल का दौरे के दौरान आपदा प्रभावित परिवारों से मुलाकात कर लोगों के दुःख दर्द साझा किया। उन्होंने कहा कि बादल फटने से हुई तबाही का मंजर बहुत भयानक एवं दर्दनाक है। पुल के बह जाने से लोगों का संपर्क इलाके से कट हुआ है।

उन्होंने कहा कि प्रशासन मुस्तैदी के साथ राहत एवं बचाव कार्यों में लगा है। सरकार द्वारा हर संभव मदद प्रदान की जा रही है। इस दौरान इंजीनियर इन चीफ जल शक्ति विभाग अंजू शर्मा, उपमंडलाधिकारी कुमारसैन कृष्ण कुमार शर्मा, हिमाचल प्रदेश कांग्रेस कमेटी के उपाध्यक्ष महेश्वर सिंह चौहान शर्मा व विभिन्न विभागों के अधिकारी भी उपस्थित रहे।

शोंगटोंग-कड़छम जल...

(पृष्ठ एक का शेष) है, ताकि प्रदेश सरकार को कोई वित्तीय नुकसान न हो। उन्होंने कहा कि नवीकरणीय ऊर्जा स्रोतों के साथ-साथ जल विद्युत का दोहन करना प्रदेश के लिए अत्यंत महत्त्वपूर्ण है, क्योंकि ऊर्जा क्षेत्र राज्य की अर्थव्यवस्था को बढ़ावा देने वाला प्रमुख क्षेत्र है। उन्होंने कहा कि राज्य सरकार ने विभिन्न पहलों से प्रदेश में हरित उद्योग को बढ़ावा देने पर विशेष ध्यान केंद्रित किया है, जिससे यह राज्य की अर्थव्यवस्था में योगदान करने में सक्षम हो सके।

NAME CORRECTION

I Bheem Singh Verma S/o Padam Singh Verma R/o Vill. Chawla P.O. Rorui, Teh. & Distt. Shimla H.P. declare that my name is inadvertently mentioned as Bheem Singh in my service record instead of my actual name which may be corrected as Bheem Singh Verma.

NAME CORRECTION

I, Aryan Deval (24) S/o Deepak Kumar, R/o Vill. Noun, P.O. Rajnagar, Teh. & Distt. Chamba, H.P. declare that in my school certificate my mother's and father's name is inadvertently written as Indu Bala Thakur and Deepak Kumar Thakur respectively instead of their correct names i.e., Indu Bala (Mother) and Deepak Kumar (Father) which may be corrected.

NAME CORRECTION

I, Reeta Devi age 37 years W/o Sh. Lekh Raj Verma R/o Village Ghayaboo P.O. Mashobra, Tehsil and Distt. Shimla 171007 H.P. do hereby declare that my name in Aadhaar Card is wrongly mentioned as Reeta Verma which may be corrected to Reeta Devi. All concerned may please note.

नाम दुरुस्ती

मैं, सुनीता पत्नी श्री नारायण सिंह, आयु, 26 वर्ष, निवासी गांव व डाकघर मंझोली, तहसील कुपवी, जिला शिमला, हि.प्र., शपथ पूर्वक बयां करती हूं कि आधार कार्ड (798494848791) में मेरा नाम गलती से करिश्मा दर्ज हो गया है। इसे दुरुस्त कर सुनीता किया जाए।

NAME CORRECTION

I Bir Singh S/o Salku Ram R/o Vill. Kando P.O. Kando Bhatnol, Teh. Shillai Distt . Sirmaur H.P. declare that my name is inadvertently mentioned as Veer Singh in my Aadhaar Card(611820558097) instead of my actual name Bir Singh. which may be corrected.

NAME CORRECTION

I Meera Devi (56) W/o Dhanu Ram R/o Vill. Nagraon P.O. Rohal, Teh. Jhandutta Distt. Bilaspur H.P. declare that my name is inadvertently mentioned as Lachhmi Devi in my Aadhaar Card instead of my actual name which may be corrected as Meera Devi.

रचनाकारों से आग्रह

सूचना एवं जन सम्पर्क विभाग से प्रकाशित गिरिराज साप्ताहिक एवं हिमप्रस्थ मासिक पत्रिका को रोचक एवं पठनीय बनाने में आप प्रबुद्ध लेखकों व रचनाकारों का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है। परन्तु कई बार लेखक अपनी एक ही रचना को दोनों पत्रिकाओं की मेल आईडी पर प्रेषित कर देते हैं जिससे दोहराव की संभावना रहती है। अतः आप सभी प्रबुद्ध लेखकों से आग्रह है कि जिस रचना को वे हिमप्रस्थ में छपवाना चाहते हैं तो उसके लिए मेल himprasthahp@gmail.com पर भेजें और अगर रचना गिरिराज साप्ताहिक में छपवाना चाहते हैं तो मेल girirajhp@gmail.com पर भेजें। आप सभी का सहयोग अपेक्षित है।

Trust Baba Balak Nath Temple Deotsidh
Notice Inviting Tender

Sealed item rate tender on PWD Form No. **6&8** are invited/ re-invited by the undersigned on behalf of **Commissioner of Temple** for the following works from approved and eligible Contractor enlisted with HPPWD (Electrical) in appropriate class/ authorized dealers and firms/ Contractor for specialized Jobs, so as to reach in the office of undersigned on **25-08-2024** up to **11 AM** and will be opened on the same day at **11.30 AM**. In the presence of the intending contractors or their authorized representatives. The tender form can be purchase from the Office of the **Temple Officer TBBNT Deotsidh Distt. Hamirpur** against cash payment (Non Refundable) on dated **23-08-2024** during the office hours i.e.10.30 AM to 4.30 PM. The application for obtaining the tender forms will be received up to dated 21—08-2024 **3 P M.** The earnest money in the shape of fresh **FDR**, duly pledged in favour of the **undersigned** must be submitted with the application for issue of tender form.

Sr. No.1 **Name of Work** Supplying and fixing of 100 amperes 3 bus-bar and emergency supply of 160 KVA Generator to shopping complex, Sarai No-8, T.O Residence, ACF Residence & Canteen No.1 & rewiring of sarai no-8 with modular type Trust BBN Temple Deotsidh Tehsil Dhatwal Distt. Distt. Hamirpur HP. **Estimated cost** Rs. 4,69,514.00 **Earnest Money** Rs. 12000.00 **Time Limit** One month **Form No** 6 & 8 **Cost of Form** Rs. 500.00

The copy of **valid enlistment** and renewal certificate along with GST No., Pan No., and registration with EPFO, shall be attached with application form. The offer of the tender shall remain open **75 days** from the date of opening of the tenders. The undersigned reserve the right to reject/ cancel the tenders without assigning any reason:-

Sd/- Temple Officer,
Trust BBN Temple Deotsidh
Distt. Hamirpur HP.

No- 18186/TBBNT/JE Electrical/2024 Dated- 04-08-2024

प्रदेश में इस वर्ष नौ हजार हेक्टेयर भूमि पर पौध रोपण का लक्ष्य : ठाकुर सुखविंद्र सिंह सुक्खू

मुख्यमंत्री ने 75वें राज्य स्तरीय वन महोत्सव का किया शुभारंभ

मुख्यमंत्री ठाकुर सुखविंद्र सिंह सुक्खू ने गत दिनों अपने आधिकारिक निवास ओक ओवर मे बान का पौधा रोपकर 75वें राज्य स्तरीय वन महोत्सव का शुभारंभ किया। इस वर्ष वन विभाग ने प्रदेश में नौ हजार हेक्टेयर भूमि में पौधे लगाने का लक्ष्य रखा है। मुख्यमंत्री ने सूखे और क्षतिग्रस्त पेड़ों के निस्तारण की मानक संचालन प्रक्रिया का भी शुभारंभ किया, जिसके तहत वन रक्षक स्तर पर दो पेड़ और मंडलीय वन अधिकारी स्तर पर 25 पेड़ काटने की अनुमति प्रदान की गई है।

मुख्यमंत्री ठाकुर सुखविंद्र सिंह सुक्खू राज्य स्तरीय वन महोत्सव का शुभारंभ करते हुए

रैखिक परियोजनाओं में तेजी लाने के लिए मुख्यमंत्री ने वन संरक्षण अधिनियम के प्रथम चरण की स्वीकृति के पश्चात परियोजना के दायरे में आने वाले पेड़ों को काटने के लिए वन विकास निगम के अधिकारियों के साथ-साथ वन विभाग के वन अधिकारियों को भी शक्तियां सौंपने की घोषणा की। इसके अतिरिक्त उन्होंने वन विभाग ई-फॉरेस्ट सॉफ्टवेयर की बीटा टेस्टिंग का भी शुभारंभ किया, जिसका उद्देश्य विभागीय कार्यों को सुव्यवस्थित करना तथा पारदर्शिता को बढ़ाना है। उन्होंने वन क्षेत्र में फलदार पौधों के रोपण को 30 से बढ़ाकर 60 फीसदी करने पर बल दिया, जिसके आगामी दस वर्षों में सकारात्मक परिणाम आने की उम्मीद है। उन्होंने कहा कि वन विभाग और निगम ने बीते वर्ष 15 हजार क्षतिग्रस्त पेड़ों को प्रसंस्कृत किया, जिससे लकड़ी की बिक्री से राजस्व प्राप्त हुआ।

इसके परिणामस्वरूप राज्य सरकार की रॉयल्टी आय मात्र डेढ़ वर्ष में 35 से बढ़कर 70 करोड़ रुपये हो गई। उन्होंने कहा कि प्रदेश सरकार ने एक रणनीतिक फैसला लेते हुए वन विभाग की निर्माण शाखा को बंद करने का निर्णय लिया और इसे वानिकी गतिविधियों पर ध्यान केंद्रित करने के निर्देश दिए। श्री सुक्खू ने कहा कि लाहौल-स्पीति में महिला मंडल बढ़चढ़ कर पौधरोपण गतिविधियों और वन संरक्षण में शामिल हो रहे हैं, जिससे महिलाओं के समूहों को राजस्व सृजन के अवसर भी प्राप्त हो रहे हैं। मुख्यमंत्री ने कहा कि वर्तमान प्रदेश सरकार ने व्यवस्था परिवर्तन के संकल्प के तहत विभिन्न कदम उठाए हैं। उन्होंने कहा कि वन विभाग सहित प्रदेश के अन्य विभागों में महत्त्वपूर्ण बदलाव हुए हैं जिससे कार्यशैली में सुधार होने के साथ ही लोगों को भी लाभ मिल रहा है। उन्होंने कहा कि सरकार ने 31 मार्च 2026 तक प्रदेश को हरित ऊर्जा राज्य बनाने का लक्ष्य रखा है और इस लक्ष्य को हासिल करने में वन विभाग की बहुत महत्त्वपूर्ण भूमिका है।

मुख्यमंत्री ठाकुर सुखविंद्र सिंह सुक्खू ने राज्य की हरित पहलों को रेखांकित करते हुए बताया कि प्रदेश सरकार द्वारा ऊना जिला के पेखूबेला में 32 मेगावॉट के सौर ऊर्जा संयंत्र की स्थापना की है तथा आगामी छह माह में 2 अन्य सौर संयंत्र शुरू कर दिए जाएंगे। इसके अलावा प्रदेश सरकार ने हरित हाइड्रोजन उत्पादन के लिए आयल इंडिया कम्पनी के साथ समझौता ज्ञापन (एमओयू) हस्ताक्षरित किया है, जो हिमाचल प्रदेश को उसके हरित ऊर्जा राज्य बनने के लक्ष्य के मार्ग को प्रशस्त करेगा। मुख्य संसदीय सचिव श्री सुन्दर सिंह ठाकुर ने हिमाचल को हरित राज्य के बनाने के मुख्यमंत्री के दृष्टिकोण और प्रयासों की सराहना की। प्रधान मुख्य वन अरण्यपाल राजीव कुमार ने मुख्यमंत्री का स्वागत किया और विभाग की गतिविधियों से अवगत करवाया।

वन निगम लाए इमारती लकड़ी निस्तारण प्रक्रिया में तेजी

मुख्यमंत्री ठाकुर सुखविंद्र सिंह सुक्खू ने गत दिनों हिमाचल प्रदेश राज्य वन विकास निगम की 214वीं निदेशक मंडल की बैठक की अध्यक्षता की। उन्होंने अधिकारियों को निगम के डिपो में रखी गई इमारती लकड़ी की निस्तारण प्रक्रिया में तेजी लाने के आवश्यक कदम उठाने के निर्देश दिए, ताकि इसे गलने से बचाया जा सके। उन्होंने वन संरक्षण अधिनियम (एफसीए) के प्रथम चरण की मंजूरी के उपरांत रेखागत परियोजनाओं के दायरे में आने वाले पेड़ों को काटने के लिए वन मंडल अधिकारियों (डीएफओ) सहित निगम के अधिकारियों को शक्तियां सौंपने की संभावनाएं तलाशने को कहा, ताकि इस प्रक्रिया में अनावश्यक देरी न हो।

हिमाचल प्रदेश राज्य वन विकास निगम की 214वीं निदेशक मंडल की बैठक

मुख्यमंत्री ने कहा कि राज्य वन विकास निगम पहली बार एफसीए मंजूरी के उपरांत ब्यास नदी से खनन गतिविधियां शुरू करेगा। उन्होंने निगम को दोषी ठेकेदारों को ब्लैकलिस्ट करने और उनके खिलाफ वसूली की कार्रवाई शुरू करने तथा भविष्य में निविदाओं में उनके भाग लेने पर रोक लगाने के निर्देश दिए। उन्होंने निगम के प्रयासों की सराहना करते हुए कहा कि निगम ने वित्त वर्ष 2021-22 के दौरान 2.17 करोड़ रुपये, वित्त वर्ष 2022-23 के दौरान आठ करोड़ रुपये और वित्त वर्ष 2023-24 में 10.04 करोड़ रुपये का लाभ अर्जित किया। उन्होंने कहा कि वन निगम में कर्मचारियों की कमी दूर करने के लिए 100 वन वीरों को नियुक्त किया जाएगा। उन्होंने विश्वास दिलाया कि प्रदेश सरकार वन निगम को आत्मनिर्भर और लाभप्रद बनाने के लिए हर संभव सहयोग प्रदान करेगी।

निदेशक मंडल ने 2022-23 के लिए निगम के कर्मचारियों को अतिरिक्त लाभ प्रदान करने को स्वीकृति प्रदान की, जिससे 227 कर्मचारी लाभान्वित होंगे। बैठक में निगम के दैनिक भोगियों की दिहाड़ी 400 रुपये करने का भी निर्णय लिया गया। इसके अलावा, निगम के सभी कर्मचारियों को एक अप्रैल, 2024 से चार प्रतिशत महंगाई भत्ते की एक और किश्त जारी करने तथा दो वर्ष का अनुबन्ध कार्यकाल पूरा करने वाले 80 कर्मचारियों को नियमित करने का भी निर्णय लिया गया मुख्यमंत्री ने कहा कि पिछले वर्ष मॉनसून के प्रकोप के कारण शिमला शहर में 618 पेड़ क्षतिग्रस्त हुए, जिनकी लकड़ी बेचकर 2.50 करोड़ रुपये का लाभ हुआ है। इस मौके पर वन निगम ने मुख्यमंत्री राहत कोष के लिए मुख्यमंत्री को 51 लाख रुपये का चेक भेंट किया।

हिक्किम नाला में तीन करोड़ की लागत से बनेगा पुल

लोक निर्माण तथा शहरी विकास मंत्री श्री विक्रमादित्य सिंह ने गत दिनों होली घाटी के चोली-क्वारसी संपर्क सड़क मार्ग में हिक्किम नाला पर बनने वाले स्टील ट्रस पुल निर्माण की आधारशिला रखी। उन्होंने कहा कि 68 मीटर लंबे स्पेन वाले इस पुल के निर्माण कार्यों पर 3 करोड़ की धनराशि व्यय होगी तथा ग्राम पंचायत क्वारसी के लोगों को सड़क सुविधा का लाभ मिलेगा।

विद्युत उपकेंद्र डल्ली में स्थानीय स्तर पर विद्युत आपूर्ति के लिए स्थापित किए जाएं उपकरण : लोक निर्माण मंत्री

श्री विक्रमादित्य सिंह ने जन समस्याओं का समाधान करते हुए हिमाचल प्रदेश पावर ट्रांसमिशन कारपोरेशन के अधिकारियों को डल्ली गांव में निर्माणाधीन विद्युत उपकेंद्र से क्षेत्र के लोगों को विद्युत आपूर्ति उपलब्ध करवाने के लिए 33 केवीए क्षमता के आवश्यक उपकरण स्थापित करने को कहा।

लोक निर्माण तथा शहरी विकास मंत्री ने विभागीय अधिकारियों को कुलेठ घार में भूस्खलन के स्थाई समाधान को लेकर आपदा न्यूनीकरण कार्यों के तहत कार्य योजना तैयार करने के निर्देशित किया। साथ में उन्होंने अंदरलाग्रां पुल निर्माण को लेकर भी विभागीय प्रक्रिया आरंभ करने के निर्देश दिए। उन्होंने स्थानीय लोगों की मांग पर राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय लामू में अतिरिक्त भवन बनाने तथा रिक्त चल रहे पदों को जल्द भरने का आश्वासन भी दिया।

उन्होंने इस दौरान निर्माणाधीन ज्युरा पुल का निरीक्षण किया तथा विभागीय अधिकारियों को निर्माण प्रक्रिया में तेजी लाने के निर्देश दिए। लोक निर्माण तथा शहरी विकास मंत्री का इस दौरान खड़ामुख, गरोला, ज्युरा, लामू तथा हिलिंग गांव में स्थानीय लोगों द्वारा गर्मजोशी के साथ स्वागत किया। इस अवसर पर पूर्व मंत्री ठाकुर सिंह भरमौरी, वरिष्ठ प्रवक्ता राज्य कांग्रेस कमेटी अमित भरमौरी, सदस्य निदेशक मंडल राज्य पथ परिवहन निगम सुरजीत भरमौरी, पूर्व अध्यक्ष ब्लॉक कांग्रेस कमेटी ब्रह्मानंद ठाकुर, अध्यक्ष ज़िला युवा कांग्रेस कमेटी सुनाभ सिंह पठानिया, एडीएम भरमौर कुलबीर सिंह राणा, अधीक्षण अभियंता लोक निर्माण विभाग, अधिशासी अभियंता, सहायक अभियंता सहित विभिन्न विभागों के अधिकारी एवं पंचायती राज संस्थाओं के जनप्रतिनिधि उपस्थित रहे।

मिंजर मेला हिमाचल की अनूठी संस्कृति का प्रतीक : राज्यपाल

चंबा का अंतरराष्ट्रीय मिंजर मेला-2024

राज्यपाल शिव प्रताप शुक्ल ने गत दिनों चंबा के ऐतिहासिक मिंजर मेले में बतौर मुख्यातिथि शिरकत की। उन्होंने मधुर कुंजड़ी-मल्हार गीतों की धुनों के बीच मिंजर ध्वज फहराकर मेले का औपचारिक शुभारम्भ किया। इस मौके पर लेडी गवर्नर जानकी शुक्ल, विधानसभा अध्यक्ष श्री कुलदीप सिंह पठानिया और अन्य गणमान्य भी उपस्थित रहे। राज्यपाल ने कहा कि अपनी समृद्ध परंपराओं के लिए प्रसिद्ध मिंजर मेला हिमाचल प्रदेश की अनूठी संस्कृति को प्रदर्शित करता है और भाईचारे और बंधुत्व की भावना को को बढ़ावा देता है। राज्यपाल ने मिंजर उत्सव को प्राचीन लोक परंपराओं, विश्वासों और आस्थाओं के साथ गहरे संबंधों का प्रतीक बताया। उन्होंने प्रदेश में बढ़ रही नशे की लत को लेकर गंभीर चिंता व्यक्त की। उन्होंने इस बुराई के खिलाफ सामूहिक जागरूकता पर बल देते हुए कहा कि सभी को बुराई का एकजुट होकर सामना करना चाहिए। उन्होंने कहा कि हमारी सामाजिक संरचना नुकसान पहुंचाने की कोशिश कर रहे असामाजिक तत्वों का मुकाबला करने के लिए संस्कृति और परंपराओं का संरक्षण बेहद महत्त्वपूर्ण है। राज्यपाल ने इस अवसर पर पूर्व सैनिकों को उनकी अनुकरणीय सेवाओं तथा वीर-नारियों को भी सम्मानित किया। मेला कमेटी के अध्यक्ष एवं जिला चंबा के उपायुक्त मुकेश रेप्सवाल ने आयोजन समिति

राज्यपाल शिव प्रताप शुक्ल को मिंजर मेले के दौरान चंबा रूमाल भेंट कर सम्मानित करते आयोजक

की ओर से राज्यपाल का स्वागत किया। उन्होंने मिंजर मेले के दौरान आयोजित की जाने वाली गतिविधियों और इसकी ऐतिहासिक पृष्ठभूमि के बारे में भी विस्तार से अवगत करवाया। उन्होंने कहा कि मेले की पहली सांस्कृतिक संध्या देश के लिए अपना सर्वोच्च बलिदान देने वाले शहीदों के नाम समर्पित की गई है। इस अवसर पर राज्यपाल और लेडी गवर्नर को मिंजर भेंट की गई।

राज्यपाल का संस्कृति और परम्पराओं के संरक्षण पर बल

मेला कमेटी की ओर से उपायुक्त ने विधानसभा अध्यक्ष श्री कुलदीप सिंह पठानिया और विधायक श्री नीरज नैय्यर तथा श्री डीएस ठाकुर को भी सम्मानित किया। इससे पहले राज्यपाल ने प्राचीन लक्ष्मी नारायण मंदिर में मिंजर अर्पित कर माथा टेका और आशीर्वाद प्राप्त किया। राज्यपाल ने विभिन्न विभागों, बोर्डों और निगमों द्वारा सरकार की कल्याणकारी योजनाओं पर आधारित प्रदर्शनी का शुभारंभ भी किया। राज्यपाल ने मिंजर मेला खेल प्रतियोगिता के शुभारम्भ की औपचारिक घोषणा की। उन्होंने लड़कियों की टीमों के बीच खेला गया कबड्डी मैच भी देखा। उन्होंने जिला रेडक्रॉस सोसायटी के माध्यम से जरूरतमंदों को स्वास्थ्य उपकरण वितरित किए तथा रक्तदाताओं को सम्मानित भी किया। इस अवसर पर गणमान्य व्यक्ति और भारी संख्या में लोग मौजूद रहे

प्रकाशक एवं प्रधान सम्पादकः राजीव कुमार, एच.ए.एस., निदेशक, सूचना एवं जन सम्पर्क विभाग, हि.प्र. शिमला-171002, मुद्रकः प्रभा राजीव, नियंत्रक, मुद्रण तथा लेखन सामग्री विभाग, शिमला-171005, फोनः 2830381-PBX.A29., वरिष्ठ सम्पादक : डॉ. राजेश शर्मा, सम्पादकः रीना नेगी
कार्यालयः हि.प्र. मुद्रणालय परिसर, शिमला-171005, फोनः 2633145 व फैक्सः 2830374, ई-मेलः girirajhp@gmail.com. प्राप्ति स्थानः गिरिराज कार्यालय। (गिरिराज साप्ताहिक में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचारों से सम्पादकीय सहमति अनिवार्य नहीं)